

गायत्री मन्त्र

ॐ भूर्भुवः स्वः
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
धियो यो नः प्रचोदयात्॥

ॐ तीन लोकों का स्वामी, स्वयं प्रकाश चित्सूर्य, जो वर्णन करने योग्य है, हमें निर्मल बुद्धि दे जिससे हम कल्याण को प्राप्त हों॥

तू ने हमें उत्पन्न किया, पालन कर रहा है तू।
तुझ से ही पाते प्राण हम, दुःख और कष्ट हरता तू।
तेरा महान् तेज है, फैल रहा सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में, हो रहा है विद्यमान।
तेरा ही धरते ध्यान हम, मांगते हैं यही दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला।



अनुक्रमणिका

सं०	विषय	पृष्ठ
१.	वैदिक शान्ति मन्त्राः (वेद)	१
२.	मंगलाचरण	२
३.	पुरुषसूक्तम् (ऋग्वेद)	३
४.	गुरुस्तोत्रम् (विश्वसारतंत्र)	४
५.	प्रातः स्मरणम्	६
६.	स्थितप्रज्ञलक्षणानि (श्रीमद्भगवद्गीता)	८
७.	उपनिषत् पाठ	१०
	शिव संगीत	
८.	श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् (शंकराचार्य)	१५
९.	निर्वाणषट्कम् (, ,)	१६
१०.	श्री काशी विश्वनाथ की आरती	१८
११.	भजन (बंगला)	२१
१२.	लीला अमरनाथऽच-कश्मीरी (परमानन्द)	२२
१३.	म्वक्त कनि तारख० (कृष्ण जू राजदान)	३०
१४.	ब्यल तय मादल० (, ,)	३१
१५.	शिवनाथ आनन्द अमर्यथ० (, ,)	३२
१६.	सन्यासय हा गोसाने०	३५
१७.	मन स्थिर कर मन्तॅर० (ज. न. क. कमल)	३६
	मातृ संगीत	

१८.	श्रीमहिषासुरमर्दिनीस्तोत्रम् (श्रीरामकृष्णकविः)	३७
१९.	जगजननी जय जय मा० (आरती संग्रह)	४१
२०.	ॐ श्रीमत् ही भवऽनी० (कश्मीरी)	४२
२१.	पादि कमलन तल ब आसय०	४३
२२.	दासस दया म्य करतम०	४५
२३.	माऽज्य शारिकाय कर दया (त्रिलोकीनाथ)	४६
२४.	बंगला भजन	४७
२५.	श्री रामनामसंकीर्तनम् (गोस्वामी तुलसीदास)	४९
२६.	राम भजन (हिन्दी)	६१
	श्रीकृष्ण संगीत	
२७.	अच्युताष्टकम् (शंकराचार्य)	६५
२८.	गूकल हृदय म्योन० — कश्मीरी (परमानन्द)	६७
२९.	गूरै-गूरै करयो० (परमानन्द)	६९
३०.	बोजि बोजि जसदाय० (नीलकण्ठ शर्मा)	७०
३१.	जगि अन्धकार चानियिन० (, ,)	७२
३२.	गूकल तै बिन्दैरावन० (ज. न. क. कमल)	७५
३३.	कौशल्याये हिन्दे गोबरो०	७६
३४.	सुन्दरो सोन सोन्दल गरय०	७७
३५.	फुल. वनि सोन्त छुय म्योन सालो०	७८
३६.	हिन्दी कृष्ण भजन	७९
	श्री श्रीरामकृष्ण संगीत	
३७.	खण्डन भव बन्धन० (विवेकानन्द)	८४
३८.	ॐ ह्रीं ऋतं त्वमचलो० (, ,)	८५

३९.	श्रीनारायणी स्तोत्रम् (मार्कण्डेयपुराण)	८६
४०.	श्रीरामकृष्ण स्तोत्रम् (विवेकानन्द)	८७
४१.	ॐकारवेद्यः पुरुषः पुराणो (अभेदानन्द)	८८
४२.	विश्वस्य धाता पुरुषस्त्वमाद्यो (, ,)	९०
४३.	ब्रह्मरूपमादि मध्य-शेष सर्व भासकं (विरजानन्द)	९२
४४.	हृदयकमलमध्ये राजितं (अभेदानन्द)	९४
४५.	विशुद्धिविज्ञानमगाधसौख्यं (प्रमददास मित्रा)	९५
४६.	श्रीरामकृष्ण शरणं	९६
४७.	भव सागर तारण कारण हे (देवेन्द्रनाथमजुमदार)	९६
४८.	भव भय भंजन पुरुष निरञ्जन (, ,)	९८
४९.	आयस बें लोल चाने (कश्मीरी)	९९
५०.	कृष्ण भगवान रामकृष्ण भगवान	१०१
५१.	विष्णु रूपय गदाधरय (कश्मीरी)	१०२
५२.	रामकृष्ण कर दया वोऽञ्ज (, ,)	१०४
५३.	आकाशि सिर्य प्रकाश नोऽन (, ,)	१०६
५४.	युथ ना छ्यनें गच्छख (, ,)	१०७
५५.	रामकृष्ण नाव चान्य द'य मन्य गले	१०८
५६.	नादा लायस लोल छु आमुतये	११०
५७.	वारवन्तम मारमत्ये रामकृष्णे, छुख च कते	१११
५८.	बंगला भजन	१११
५९.	श्री शारदा स्तोत्रम् (अभेदानन्द)	११३
६०.	अनन्तरूपिणि अनन्तगुणवति	११५
६१.	बंगला भजन	११६

६२.	विवेकानन्दगीतिस्तोत्रम् (शरत् चन्द्र चक्रवर्ती)	१११
६३.	विवेकानन्द पंचकम् (रामकृष्णानन्द)	१११
	विविध संकलन (कश्मीरी)	
६४.	लल वाख (ललें द्यद)	१११
६५.	गो'ड़ज गणपत जियस कुन० (शिवजी)	१२१
६६.	गिन्दुनाह छा जिन्दें मरुन० (परमानन्द)	१२१
६७.	वेलें वोत मेलनुक० (कृष्ण जू)	१३१
६८.	टोठान चयें छुख भक्तिभावस० (, ,)	१३१
६९.	भयें रोस्त थावतम जय सानो० (, ,)	१३१
७०.	सज्जन बन मन कर कैलासँय० (कृष्ण जू)	१३०
७१.	होश दिम लगयो पंपोश पादन० (, ,)	१३१
७२.	प्रबाथ हो आव अछि मुचराव० (, ,)	१३१
७३.	मनं पोश लागय शोरे० (ज. न. क. कमल)	१४०
७४.	संसार छुय मुहें जंजाल० (शारिका देवी)	१४०
७५.	जॉफर्य पोशस छु लक्ष्मी०	१४०
७६.	क्याह ह्यकॅ वनिथ० (गोविन्द कौल)	१४३
७७.	आहमो रोगे रोगे० (, ,)	१४०
७८.	दय नो बुछान० (, ,)	१४०
७९.	रंध मो दि अथ गंध पानस०	१४०
८०.	कष्ट कास्तम म्य भगवान० (लक्ष्मण बुल्बुल)	१४०
८१.	घरि घरि पूज कर० (, ,)	१४०
८२.	यस निश सु प्रकाश दाव० (वासुदेव)	१४०
८३.	सोऽख शब्द दर्शन चाने० (ठोकुर जू मनवटी)	१५०

८४.	शोकरो डुंग लाय सोदॅरस०	१५२
८५.	शरीर ज़ोलनम अम्य हा लोलॅ नारन (रहीम सॉब)	१५३
८६.	अज़ वाति बूज़ुम मोलॅ म्योन० (ज़िन्द कौल)	१५४
८७.	वछिम गथ चाऽज दैवागथ० (, ,)	१५४
८८.	स्मरण पनॅज दिचऽनम० (, ,)	१५५
८९.	पानय म्य पान हाऽविथ० (, ,)	१५७
९०.	आमॅच मनस रॅच वासना०	१५८
९१.	पांछ दोह यावर्नेनि श्रावणनि सूरी० (कृष्ण जू)	१५९
९२.	हे दय! बीज़ कनय चयय रोस्त० (विष्णु जी)	१६०
९३.	यियि कत भक्तिस मनि मंज़ भाव० (परमानन्द)	१६१
९४.	रामकृष्ण मनॅसॅय मन्ज़ वथॅरावय०	१६२
९५.	कर्मभूमिकायि दिज़ि धर्मुक बल० (परमानन्द)	१६३
९६.	पांच त्रे भागलस करारदादस० (, ,)	१६६
९७.	अर्धरातन गुल्य गण्डिथ बोज़ि ज़ार०	१६७
९८.	ईकुत म्य भास्योम० (ज. न. क. कमल)	१६९
९९.	च शमा छख बॅ छस परबान चोनुय०	१७०
१००.	जीवो संसार सोरुय भ्रम छुय० (जीवन सॉब)	१७१
१०१.	द्वैत वुपशम शान्त शिव शाय० (ज. न. क. कमल)	१७२
१०२.	पोऽतॅ जूने मोऽत वज़नोवुम० (आफताबजी)	१७४
१०३.	लगय पादन बॅ पऽरी राजिर्यनि रानिब्रॉरी०	१७६
१०४.	चे ब्यन कय द्यन ह्यकय०	१७७
१०५.	दय नो वुछान यालि चालि ग्राये०	१७९
१०६.	रामकृष्ण म्योन कोतये गोम०	१८०

१०७.	मूढ पन्य पान वारा पननिस वानस०	१८१
१०८.	सांरिय छि गछान पानस-पानस०	१८१
१०९.	हा जीव! कथ प्यठ मन ब्रमरोवुम०	१८२
११०.	क्याह ह्यक वनिथ ज्यवि प्यठ अनिथ०	१८४
१११.	भूल बाल बालकन सूति खेलनावतम०	१८५
११२.	अरिजि रंग गोम श्रावन हिये० (अरजिमाल)	१८७
११३.	लाल लगयो बाल. भवस० (आनन्द जी)	१८७
११४.	चानि बरतल राव्यम रांचय० (अरजिमाल)	१८८
११५.	इत दित. दर्शुन भस्माधारै० (श्रीकृष्णदास)	१८९
११६.	सखियव रूठुम होय० (अरजिमाल)	१९०
११७.	कर इयि म्य कुन० (वासुदेव जी)	१९१
११८.	गन्योमुत छुम मनस चोन भाव० (काशीनाथ जी)	१९२

वैदिकशान्तिमन्त्राः

ॐ वाङ् मे मनसि प्रतिष्ठिता, मनो मे वाचि प्रतिष्ठितम्,
आविरावीर्म एधि, वेदस्य मा आणीस्थः, श्रुतं मे मा
प्रहासीरनेनाधीतेनाहोरात्रान् संदधामि, ऋतं वदिष्यामि, सत्यं
वदिष्यामि, तन्मामवतु, तद्वक्तारमवतु, अवतु माम्, अवतु वक्तारम्॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवांसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः। स्वस्ति न इन्द्रो
वृद्धश्रवाः स्वस्ति न पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः
स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ आप्यायन्तु ममाङ्गानि, वाक्प्राणश्चक्षुः श्रोत्रमथ
बलमन्द्रियाणि च सर्वाणि। सर्वं ब्रह्मोपनिषदं। माऽहं ब्रह्म निराकुर्यां,
मा ब्रह्म निराकरोदनिराकरणमस्तु, अनिराकरणमेऽस्तु। तदात्मनि
निरते य उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि संतु ते मयि संतु। ॐ शान्तिः
शान्तिः शान्तिः॥

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः। शं नो भवत्वयमा। शं नो इन्द्रो
बृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो।
त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं
वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु। तद्वक्तारमवतु, अवतु
माम्। अवतु वक्तारम्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

— ० —

मंगलाचरण

ॐ ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सत्गुरुं तं नमामि॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

नारायणं पद्मभवं वसिष्ठं
शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं
गोविन्दयोगीन्द्रमथास्यशिष्यम्॥

श्री शंकराचार्यमथास्य पद्म-
पादं च हस्तामलकं च शिष्यम्।
तं तोटकं वार्तिककारमऽन्यान्
अस्मद् गुरुणसन्ततमानतोऽस्मि॥

ॐ शं नो मित्रः शं वरुणः। शं नो भवत्वर्यमा। शं न इन्द्रो
बृहस्पतिः। शं नो विष्णुरुक्रमः। नमो ब्रह्मणे। नमस्ते वायो।
त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि। त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि। ऋतं

वदिष्यामि। सत्यं वदिष्यामि। तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु
माम्। अवतु वक्तारम्। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

ॐ सह नाववतु सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यंकरवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

— ० —

॥ पुरुषसूक्तम् ॥

ॐ सहस्रंशीरषा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं
विश्वतो वृत्वा। अत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्। पुरुष एवेदगं सर्वम्। यद्भुतं
यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानः। यदन्नेनातिरोहति। एतावानस्य
महिमा। अतो ज्यायागश्च पूरुषः॥१॥

पादोऽस्य विश्वा भूतानि। त्रिपादस्यामृतं दिवि। त्रिपादूर्ध्वं
उदैत्पुरुषः। पादोऽस्येहाऽऽर्भवात्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्।
साशनाशने अभि। तस्माद्विराडजायत। विराजो अधि पुरुषः। स
जातो अत्यरिच्यत। पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥२॥

यत्पुरुषेण हविषा। देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यम्।
ग्रीष्म इध्मश्शरद्धविः। सप्तास्यासन्परिधयः। त्रिः सप्त समिधः
कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वानाः। अबध्नन्पुरुषं प्रशुम्। तं यज्ञं बरहिषि
प्रोक्षन्। पुरुषं जातमग्रतः॥३॥

तेन देवा अयंजन्त। साध्या ऋषयश्च ये। तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः।
संभृतं पृषदाज्यम्। पशूगस्तागश्चक्रे वायव्यान्। आरण्यान्ग्राम्याश्च
ये। तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः। ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दागंसि जज्ञिरे
तस्मात्। यजुस्तस्मादजायत॥४॥

तस्मादश्वा अजायन्त। ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञि
तस्मात्। तस्माज्जाता अजावयः। यत्पुरुषं व्यदधुः। कृति
व्यंकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू। कावूरु पादावुच्येते
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्। बाहू राजन्यः कृतः॥५॥

ऊरु तदस्य यद्वैश्यः। पद्भ्याग्ं शूद्रो अजायत। चन्द्रम
मनसो जातः। चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च
प्राणाद्वायुरजायत। नाभ्या आसीदुत्तरिक्षम्। शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत
पद्भ्या भूमिर्दिशः श्रोत्रात्। तथा लोकाग्ं अंकल्पयन्॥६॥

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तम्। आदित्यवर्णं तमसस्तुषारे। सर्वाणि
रूपाणि विचित्य धीरः। नामानि कृत्वाऽभिवदन्, यदास्ते। धात
पुरस्ताद्यमुदाजहार। शक्रः प्रविद्वान्प्रदिशश्चतस्रः। तमेवं विद्वानमृत
इह भवति। नान्यः पन्था अयनाय विद्यते। युज्ञेन युज्ञमयजन्त
देवाः। तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्ते
यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥७॥

—०—

गुरुस्तोत्रम्

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुरेव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।

तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।

चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

स्थावरं जंगमं व्याप्तं येन कृत्स्नं चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

सर्वश्रुतिशिरोरत्नसमुद्भासितमूर्तये।
वेदांतांबुजसूर्याय तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

चैतन्यं शाश्वतं शान्तं व्योमातीतं निरञ्जनम्।
बिन्दुनादकलातीतं तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

ज्ञानशक्तिसमारूढस्तत्त्वमालाविभूषितः।
भुक्तिमुक्तिप्रदाता च तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

अनेकजन्मसंप्राप्त कर्मन्धनविदाहिने।
आत्मज्ञानाग्निदानेन तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

शोषणं भवसिंधोश्च प्रापणं सारसंपदः।
यस्य पादोदकं सम्यक् तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः।
तत्त्वज्ञानात्परं नास्ति तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

मन्नाथः श्रीजगन्नाथो मदगुरुः श्रीजगद्गुरुः।
मदात्मा सर्वभूतात्मा तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

गुरुरादि अनादिश्च गुरुः परमदैवतम्।
गुरोः परतरं नास्ति तस्मै श्रीगुरुवे नमः॥

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि॥

प्रातः स्मरणम्

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरद् आत्म-तत्त्वम्
सत्-चित्-सुखं परमहंस-गतिं तुरीयम्।
यत् स्वप्न-जागर-सुषुप्तम् अवैति नित्यम्
तद् ब्रह्म निष्कलम् अहं न च भूतसंघः॥

प्रातर् भजामि मनसो वचसाम् अगम्यम्
वाचो विभान्ति निखिला यद् अनुग्रहेण।
यन् 'नेति नेति' वचनैर् निगमा अवोचुस्
तं देव-देवम् अजम् अच्युतम् आहुर् अगस्त्यम्॥

प्रातर् नमामि तमसः परम अर्क-वर्णम्
पूर्णं सनातन-पदं पुरुषोत्तमाख्यम्।
यस्मिन् इदं जगद् अशेषम् अशेष-मूर्तौ
रज्ज्वां भुजंगम् इव प्रतिभासितं वै॥

समुद्र-वसने! देवि! पर्वत-स्तन-मण्डले!
विष्णु-पत्नि! नमस् तुभ्यम्, पादस्पर्शं क्षमस्व मे।
सरस्वति महाभागे विद्ये कमल लोचने।
विश्वरूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तुते॥

या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणा वरदण्ड-मण्डितकरा या श्वेत-पद्मासना।
या ब्रह्माच्युत शंकर-प्रभृतिभिर् देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेष-जाड्यापहा॥

वक्र-तुण्ड! महाकाय! सूर्य-कोटि-सम-प्रभ!।
निर्विघ्नं कुरु मे देव! शुभ-कार्येषु सर्वदा॥

शान्ताकारं भुजग-शयनं पद्म-नाभं सुरेशम्
विश्वाधारं गगन-सदृशं मेघ-वर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मी-कान्तं कमल-नयनं योगिभिर् ध्यान-गम्यम्
वन्दे विष्णुं भव-भय-हरं सर्व-लोकैक-नाथम्॥

कर-चरण-कृतं वाक्-कायजं कर्मजं वा
श्रवण-नयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितम् अविहितं वा सर्वम् एतत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे! श्रीमहादेव! शम्भो!॥

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःख-तप्तानाम् प्राणिनाम् आर्ति-नाशनम्॥

स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्ताम्
न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः।

गो-ब्रह्मणेभ्यः शुभं अस्तु नित्यम्
लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु॥

नमस् ते सते ते जगत्-कारणाय
नमस् ते चिते सर्व-लोकाश्रयाय।
नमोऽद्वैत-तत्त्वाय मुक्ति-प्रदाय
नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय॥

त्वमेकं शरण्यं त्वमेकं वरेण्यं
त्वमेकं जगत्-पालकं स्वप्रकाशम्।
त्वमेकं जगत् कर्तृ-पातृ-प्रहर्तृ
त्वमेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम्॥

भयानां भयं भीषणं भीषणानाम्
गतिः प्राणिनां पावनं पावनानाम्॥

महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वमेकं
परेषां परं रक्षणं रक्षणानाम्॥

तदेकं स्मरामस्तदेकं भजाम-
स्तदेकं जगत्साक्षिरूपं नमामः।

वयं त्वां स्मरामो वयं त्वां भजामो
वयं त्वां जगत्-साक्षि-रूपं नमामः।

सद् एकं निधानं निरालम्बम् ईशम्
भवाम्भोधि-पोतं शरण्यं ब्रजामः॥

यं ब्रह्मा-वरुणेन्द्र-रुद्र-मरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यै-स्तवैर्
वेदैः सांग-पद-क्रमोपनिषदैर् गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थित-तद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः॥

- ० -

स्थितप्रज्ञलक्षणानि

अर्जुन उवाच :-

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव॥
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत ब्रजेत किम्॥

श्री भगवान् उवाच :-

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ! मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते॥

दुःखेष्वनुद्विग्न-मनाः सुखेषु विगतस्पृहः।

यः सर्वत्रानभिस्नेहस् तत् तत् प्राप्य शुभाशुभम्।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यः तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते॥

यततो ह्यपि कौन्तेय! पुरुषस्य विपश्चितः।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः॥

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥

ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस्तेषूपजायते।
संगात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥

क्रोधाद् भवति संमोहः संमोहात् स्मृति-विभ्रमः।
स्मृति भ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

राग-द्वेष-वियुक्तैस्तु विषयान् इन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर् विधेयात्मा प्रसादं अधिगच्छति॥

प्रसादे सर्व-दुःखानां हानिर् अस्योपजायते।
प्रसन्न-चेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते॥

नास्ति बुद्धिर् अयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिर् अशान्तस्य कुतः सुखम्॥

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोनुविधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायर् नावमिवाम्भसि॥

तस्माद् यस्य महाबाहो! निगृहीतानि सर्वशः।

इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यः तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।

यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः॥

आपूर्यमाणं अचल-प्रतिष्ठं

समुद्रं आपः प्रविशन्ति यद्वत्।

तद्वत् कामा यं प्रविशन्ति सर्वे

स शान्तिमाप्नोति न कामकामी॥

विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश्चरति निःस्पृहः।

निर्ममो निरहंकारः स शान्तिं अधिगच्छति॥

एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ! नैनां प्राप्य विमुह्यति।

स्थित्वाऽस्यां अन्तकालेऽपि ब्रह्म निर्वाणं ऋच्छति॥

—०—

उपनिषत् पाठ

ॐ ईशावास्यं इदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम्॥

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।

तत् त्वं पूषन्! अपावृणु सत्य-धर्माय दृष्टये॥

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्

विश्वानि देव वायुयानि विद्वान्।

युयोध्यस्मज्जुहुराणामेनो

भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम॥

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यं एतः

तौ संपरीत्य विविनक्ति धीरः।

श्रेयो हि धीरोऽभिप्रेयसो वृणीते

प्रेयो मन्दो योगक्षेमाद् वृणीते॥

सर्वे वंदा यत्पदं आमनन्ति

तपांसि सर्वाणि च यद् वदन्ति।

यद् इच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति

तत् ते पदं संग्रहेण ब्रवीमि ॐ इत्येतत्॥

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथ एव तु।

बुद्धिं सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहं पूव च॥

इन्द्रियाणि हयान् आहुर् विषयांस् तेषु गोचरान्।

आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर् मनीषिणः॥

विज्ञानसारथिर् यस्य तु मनः प्रग्रहवान् नरः।

सोऽध्वनः पारम् आप्नोति तद् विष्णोः परम् पदम्॥

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान् निबोधत।

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया

दुर्गं पथस् तत् कवयो वदन्ति॥

अग्निर् यथैको भुवनं प्रविष्टो

रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव।

एकस् तथा सर्व-भूतान्तरात्मा

रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिष् च॥

वायुर् यथैको भुवनं प्रविष्टो

रूपं रूपं प्रतिरूपो बभूव।

एकस् तथा सर्वभूतान्तरात्मा
रूपं रूपं प्रतिरूपो बहिष् च॥

सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्
न लिप्यते चाक्षुषैर् बाह्यदोषैः।

एकस् तथा सर्वभूतान्तरात्मा
न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः॥

एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा
एकं रूपं बहुधा यः करोति।

तम् आत्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्
॥ तेषां सुखं शाश्वतं नेतरेषाम्॥

नित्योऽनित्यानां चेतनश् चेतनानाम्
॥ एकी बहूनां यो विदधाति कामान्।

तमात्मस्थं येऽनुपश्यन्ति धीरास्
॥ तेषां शान्तिः शाश्वती नेतरेषाम्॥

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्र तारकं
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयं अग्निः?

तमेव भान्तं अनुभाति सर्वं
तस्य भासा सर्वमिदं विभाति॥

तपः श्रद्धे ये ह्युपवसन्त्यरण्ये
शान्ता विद्वांसो भैक्षचर्या चरन्तः।

सूर्यद्वारेण ते विरजाः प्रयान्ति
यत्रामृतः स पुरुषो ह्यव्ययात्मा॥

परीक्ष्य लोकान् कर्मचितान्
ब्राह्मणो निर्वेदं आयान् 'नास्त्यकृतः कृतेन'।

तद्विज्ञानार्थं स गुरुं एवाभिगच्छेत्
समित्-पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्म-निष्ठम्॥

तस्मै स विद्वान् उपसन्नाय सम्यक्
प्रशान्त-चित्ताय शमान्विताय।

येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यं
प्रोवाच तां तत्त्वतो ब्रह्मविद्याम्॥

प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तत्क्षय उच्यते।
अप्रमत्तेन वेदध्वं शरवत् तन्मयो भवेत्॥

भिद्यते हृदयग्रन्थिः छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे॥

ब्रह्मैवेदं अमृतं पुरस्ताद् ब्रह्म
पश्चाद् ब्रह्म दक्षिणतश्चोत्तरेण।
अधश्चोर्ध्वं च प्रसृतं ब्रह्मैवेदं
विश्वं इदं वरिष्ठम्॥

सत्येन लभ्यस्त्तपसा होष आत्मा
सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।
अन्तःशरीरे ज्योतिरमयो हि शुभो
यं पश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः॥

सत्यमेव जयते नानृतम्
सत्येन पन्था विततो देवयानः।
येनाक्रमन्ति ऋषयो ह्याप्तकामा
यत्र तत् सत्यस्य परमं निधानम्॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो

न मेधया न बहुना श्रुतेन।

यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्

तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम्॥

नायमात्मा बलहीनेन लभ्यो

न च प्रमादात् तपसो वाऽप्यलिङ्गात्।

एतैर् उपायैर् यतते यस्तु विद्वांस्

तस्यैष आत्मा विशते ब्रह्मधाम॥

सम्प्राप्यैनं ऋषयो ज्ञान-तृप्ताः

कृतात्मानो वीतरागाः प्रशान्ताः।

ते सर्वगं सर्वतः प्राप्य धीरा

युक्तात्मनः सर्व एवाविशन्ति॥

वेदान्त-विज्ञान-सुनिश्चितार्थाः

संन्यास-योगाद् यतयः शुद्ध-सत्त्वाः।

ते ब्रह्म-लोकेषु परान्तकाले

परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे॥

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रे

अस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय।

तथा विद्वान् नामरूपाद् विमुक्तः

परात्परं पुरुषं उपैति दिव्यम्॥

स यो ह वै तत् परमं ब्रह्म वेद, ब्रह्मैव भवति

नास्याब्रह्मवित् कुले भवति।

तरति शोकं, तरति पाप्मानं

गुहाग्रन्थिभ्यो विमुक्तोऽमृतो भवति॥

यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह।
आनन्दं ब्रह्मणे विद्वान् न बिभेति कुतश्चन॥

एतं हि वाव न तपति 'किम् अहं साधु नाकरवम्।
किम् अहं पापं अकरवम्' इति॥

युवा स्यात् साधु युवाध्यापकः

अशिष्ठो द्रढिष्ठो बलिष्ठः।

तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात्॥

बलं वाव विज्ञानाद् भूयः, अपि ह शतं विज्ञानवताम्
एको

बलवान् आकम्पयते। स यदा बली भवति अथोत्थाता
भवति, उतिष्ठन् परिचरिता भवति, परिचरन् उपसत्ता
भवति, उपसीदन् द्रष्टा भवति, श्रोता भवति, मन्ता
भवति, बोद्धा भवति, कर्ता भवति, विज्ञाता भवति॥

—०—

शिव संगीत

॥ श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम् ॥

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय

भस्मांगरागाय महेश्वराय।

नित्याय शुद्धाय निरञ्जनाय

तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय

नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय।

मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय

तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय॥

शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द-

सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।

श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय

तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥

वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य-

मुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय।

चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय

तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय॥

यज्ञस्वरूपाय जटाधराय

पिनाकहस्ताय सनातनाय।

दिव्याय देवाय दिगम्बराय

तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥

पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।

शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

—०—

निर्वाणषट्कम्

मनोबुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहं

न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे।

न च व्योमभूमी न तेजो न वायु-

श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्॥

न च प्राणसंज्ञो न वै पंचवायु-
 न वा सप्तधातुर्न वा पंचकोषाः।
 न वाक्पाणिपादं न चोपस्थपायू
 चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्॥
 न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ
 मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः।
 न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्ष-
 शिचदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्॥
 न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःखं
 न मंत्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः।
 अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता
 चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्॥
 न मृत्युर्न शंका न मे जातिभेदः
 पिता नैव मे नैव माता न जन्म।
 न बन्धुर्न मित्रं गुरुर्नैव शिष्य-
 शिचदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्॥
 अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो
 विभुत्वाच्च सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।
 सदा मे समत्वं न मुक्तिर्न बन्धः
 चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम्॥

श्री काशी-विश्वनाथ की आरती

हरि ॐ जय गंगाधर हरशिव जय गिरिजाधीश,
शिव जय गौरीनाथ।

त्वं मां पालय नित्यं २ कृपया जगदीश,
ॐ हर हर हर महादेव॥१॥

कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने शिव
कल्पद्रुमविपिने

गुंजति मधुकरपुंजे २ कुंजवने गहने।
कोकिलकूजति खेलति हंसावलिललिता,
शिव हंसावलिललिता।

रचयति कलाकलापं २ नृत्यति मुदसहिता।
ॐ हर हर हर महादेव॥२॥

तस्मिन् ललितसुदेशे शाला मणिरचिता,
शिव शाला मणिरचिता।

तन्मध्ये हरनिकटे २ गौरी मुदसहिता।
क्रीडां रचयति भूषारंजित निजमीशं,
शिव रंजितनिजमीशम्।

इन्द्रादिकसुरसेवित-ब्रह्मादिकं मुनिसेवित-
प्रणमति ते शीर्षम्।
ॐ हर हर हर महादेव॥३॥

विबुधवधूर्बहुनृत्यति हृदये मुदसहिता,
शिव हृदये मुदसहिता।

किन्नरगायनकुरुते २ सप्तस्वरसहिता।
धिनकत थै थै धिनकत मृदंग वादयते,

शिव मृदंगवादयते।

क्वण क्वण ललिता वेणुं २ मधुरं नादयते।

ॐ हर हर हर महादेव॥४॥

रुण रुण चरणे रचयति नूपुरमुज्ज्वलितं

शिव नूपुरमुज्ज्वलितम्।

चक्रावर्ते भ्रमयति २ कुरुते तां धिकतां।

तां तां लुपचुपतालं तालं नादयते, शिव डमरूवादयते।

अंगुष्ठांगुलिनादं २ लास्यकतां कुरुते।

ॐ हर हर हर महादेव॥५॥

कर्पूरद्युतिगौरं पंचाननसहितं, शिव पंचाननसहितम्।

त्रिनयनशशिधरमौलिं २ विषधरकण्ठयुतम्।

सुन्दरजटाकलापं पावकयुतभालं,

शिव पावकयुतभालम्।

डमरुत्रिशूलपिनाकं २ करधृतनृकपालम्।

ॐ हर हर हर महादेव॥६॥

शंखनिनादं कृत्वा झल्लरि नादयते,

शिव झल्लरि नादयते।

नीराजयते ब्रह्मा नीराजयते विष्णुर्वेद ऋचां पठते।

इति मृदुचरणसरोजं हृदि कमले धृत्वा,

शिव हृदि कमले धृत्वा।

अवलोकयति महेशं, शिवलोकयतिसुरेशं ईशमभिनत्वा।

ॐ हर हर हर महादेव॥७॥

रुण्डै रचयति मालां पन्नगमुपवीतं, शिव

पन्नगमुपवीतम्।

वामविभागे गिरिजा, वामविभागे गौरी,
 रूपं ह्यतिललितम्।
 सुन्दरसकलशरीरे मनसिजकृतभस्माभरणं
 शिवकृतभस्माभरणम्।
 इति वृषभध्वजरूपं, हर शिवशंकररूपं,
 तापत्रयहरणम्।

ॐ हर हर हर महादेव॥८॥

ध्यानं आरतिसमये हृदये-इतिकृत्वा, शिव हृदये
 इतिकृत्वा।

रामं त्रिजटानाथं, शम्भो हर त्रिजटानाथं, ईशं
 अभिनत्वा।

संगीतमेवं प्रतिदिनपठनं यः कुरुते, शिवपठनं यः
 कुरुते।

शिवसायुज्यं गच्छति, हरसायुज्यं गच्छति, भक्त्या यः
 शृणुते।

ॐ हर हर हर महादेव॥९॥

ॐ जय गंगाधर हर शिव जय गिरिजाधीश
 शिव जय गौरीनाथ।

त्वं मां पालय नित्यं त्वं मां पालय शम्भो, कृपया
 जगदीश।

ॐ हर हर हर महादेव॥१०॥

बंगला भजन

(वसन्त-तीव्रा)

डमरू हर करे बाजे बाजे,
त्रिशूल धर-अंग भस्म-भूषण, व्याल माला गले
विराजे।
पंचवदन पिनाक-धर शिव, वृषभ-वाहन भूतनाथ,
रुण्ड-मुण्ड गले विराजित अजर अमर दिगम्बर
राजे॥

—०—

(दरबारी कानड़ा-चौताल)

हर हर हर भूतनाथ पशुपति,
योगीश्वर महादेव शिव पिनाकपाणि।
ऊर्ध्व जलत जटा-जाल, नाचत व्योमकेश भाल,
सप्त-भुवन धरत ताल, टलमल अवनी॥

—०—

(कर्णाटी-एकताल)

ताथैया ताथैया नाचे भोला, बम् बब बाजे गाल।
डिमि डिमि डिमि डमरू बाजे, दुलिछे कपाल माल॥
गरजे गंगा जटा माझे, उगरे अनल त्रिशूल राजे
धक् धक् धक् मौलिबन्ध ज्वले शशांक भाल॥

—०—

तुंहि जगत गुरु तुंहि परमेश्वर,
आदि अनादि पिनाकधर शंकर।
तुंहि भरण-पोषण कर सबको तारण,
सृजन प्रलय तुमसे होये विश्वेश्वर॥

भाल चंद रुण्ड माल शोभित,
वृषभ वाहन और जग अघ हर।
जटाजूट मांझ गंगा विराजित
धन्य धन्य महादेव तुंहि योगेश्वर॥

—०—

कश्मीरी भजन

लीला अमरनाथच

—महाकवि परमानन्द

१. मन थिर कर पूजुन प्रभू
मंतर पर शिव-शम्भू
२. दीह गोफि सत-च्यथ आनन्द लिंग
मन पीठस प्यठ ब्यूठ निसंग
लूख दप्यतनस कैलास श्रंग —मन०
३. कन थव सरस्वती छय वनन
वन्य वन्य पान छुयना सनन
नाम रूप वनि भ्योन भ्योन वनन —मन०

४. लीला यि छय अमरनाथचिय
दीह-दार सान ईकान्तचिय
शम-दम गोफ प्रशान्तचिय —मन०
५. 'त्राहि माम' पर यात्रा च कर
हर-म्बख पननुय पान वर
गोफि मेन यि गुफ छे बराबर —मन०
६. गोड गणपतयारुक गणीश
दूर मो ज्ञान रुज्जिथ चे निश
मूलाधार द्वारुक महीश —मन०
७. ब्रह्मा युस सृष्टि करतार
स्वाधिष्ठान शुराहयार
षट्दल शन्मुख जन कुमार —मन०
८. शिवपोरि फेर कुण्डलने
फेर वज प्राण तत जल कने
सथ समुदुर सनि वोगने —मन०
९. अष्टदल सु द्राव पम्पोष डल
यूर्य फेर नोरकुन मो च डल
व्यचार अछ त संसार चल —मन०
१०. हूर हूर पख न्यूर न्यून वात
दूर प्योमुत छुक कव वशात्?
गथ प्रावनच बोज कथ त बाथ —मन०
११. तीर्थ रोस्त मा कुनि कांह पोदा
वेदन ति ॐकार विन पदा
जीवन मुक्त परमात्मा —मन०

१२. नाभिदीशि दशदल संगमस
यम्य चाऽव्य लूख सत्संग मस
कृष्णास स्थावर-जंगमस —मन०
१३. अंघ्र अंघ्र फेर चक्रबर सय
प्रदिक्षण कर च मन्दर सय
दीव पूज श्याम सोन्दर सय —मन०
१४. मन्दर मुछ त वुछ त चन्द्रयार
सांपनिय तति हर चन्द्रयार
विजयेश्वरी जन्म जन्म पार —मन०
१५. कऽज त्रऽविथ वात थऽजवोर
लऽज तति शिव जटा च्वपोर
अनाहत मण्डलस थाव खोर —मन०
१६. छयफ छुड ह्यथ वात छोण्डबल
विशुद्ध चक्रच जीव थल
दीव-पूज कर जीव-भाव चल —मन०
१७. मंज्य वात खिलनस त खेलनस
पानय जि पानस मेलनस
तील जन तेलस तेलनस —मन०
१८. वातखय वति वति वीरसिरन
तति छिय न वातान वीर सिरन
वर्ज वाव सऽत्य बलवीर इरन —मन०
१९. पुशराव पान परमेश्वरस
प्रदिक्षण कर तत मन्दरस
वऽतिथ रोज मामलीश्वरस —मन०

२०. मन निश दूर कर लय व्यक्षीप
नऽविथ गणीशस सऽर्य लीप
चलनय त सुय गव रत्नदीप —मन०
२१. भर्ग तीर्थ प्यठ छुय स्वर्गद्वार
वर्ग निश मशिरिथ मो च प्रार
भाव अर्घ-पुष्प पूजा छे सार —मन०
२२. रेन्जल त्रऽविथ रीन्च पल
वऽतिथ निशानस मो च डल
कर्मस त धर्मस सूर फल —मन०
२३. कण्ठ दीश युस च्चदाह भवन
नील गंगि प्यठ बोज्ञ वावजन
तति तोर पवनय ओत दवन —मन०
२४. मन्जिल छु मंज्य मंज्य वारयाह
छोट वनुन मोट बोज्ञ वारयाह
अक्रिया द्वारच यिय क्रिया —मन०
२५. लऽज्जिम छु यिय यिय तिय वनव
नन वऽर्य वातव कोर वनव
थकि युस त दपि पगाह वनव —मन०
२६. ईश-दीश उत्तम शीषनाग
ह्यकखय त तत्य द्यन-राथ ज्ञाग
राग त्राव प्राव महा वैराग —मन०
२७. त्याग पंचकृत पंचतरंग
सत-समुद्रकिय च्यथ-तरंग
पद्म-नाभस छिम यिम ति रंग —मन०

२८. खस्त अस्त अस्त पंचालसय
सोऽहं भैरव-बालसय
टख युथ न लगि अति लालसय —मन०
२९. जिन्द रोज बोज जिन्दय मरुन
गर्भ-यात्रायि अपोर तरुन
सतिये छु ततिये शिव वरुन —मन०
३०. शोज्रिथ संकल्प निशि मन
रशि-राग रोस्त काल-दीश मन
शिहलिथ ईश अनीश मन —मन०
३१. छिय परा त पश्यन्ती पशन
मध्यमा त वैखरी मा पशन
यिछ अवस्था द्वे तप-ऋषन —मन०
३२. युस छु परमात्मा त वटकनाथ
यस छिय भैरव विताल साथ
यम्य कऽरख स्वयंवर वशात् —मन०
३३. भाव अमरावतिये च नाव
मल बभूत छल गृहस्थ भाव
शिव-पादन पान पुशिराव —मन०
३४. रूदमुत गुफि युस शुद्ध त बुद्ध
नव निध अधीन तस त अष्टसिद्ध
आकाशवत् केह न घट त बड —मन०
५. नंग मोत हंग तय मंग रोज
ईश्वर दर्शन शब्द बोज
लय कर त ध्यान दयि घर सोज —मन०

३६. गुफि मंज गुफि वात पनजे
त्राव दीवियि त दिवता अन्ये
छयनि छन यिम बभूत कजे —मन०
३७. कनि मंज लाल सुय मजि मंज
छनिरुक छोज छोज रुनि मंज
तप कर दीह अरण्य मंज —मन०
३८. सोऽहम्-शब्द प्रयम प्रणवय
आज्ञा शिखरस त्राव रवय
तालव कपूत आलवय —मन०
३९. सहस्रदल लयगत च प्राव
ब्रह्मरंध्रस छु निष्कल स्वभाव
दम चे दमाले कर त क्राव —मन०
४०. पकवज छि द्वारस मथ मथान
थान गव ज्जि यति बिहान वोथान
समाधि मंज युथ ह्युव्युथान —मन०
४१. पननुय पान पानस चमुन
यिय चमुन तिय समुन तिय शमुन
अऽत्य वुहुन लोलनार अऽत्य हमुन —मन०
४२. युथ थान छुन प्रोवमुत यमन
तिमवय ज्ञोन ब्रून्त्य आव यिमन
परमात्मा परज्जऽनिथ यि मन —मन०
४३. जिसमें जोगी आ पडा
जाग्रत स्वप्नय पिंगला इडा
उतरा वहां कोई ना चढा —मन०

४४. भंवरा कमल में जब बडा
अभिनासी नाही सब कडा
और था कोई ना बडा -मन०

४५. तति फोरुवुन अनाहत नाद
स्वप्न-अन्त त सुषुप्तायि आद
तुर्या त तुर्यातीति समाध -मन०

४६. फीरिथ इडायि किन्ध संगमस
रस पूणमय खोतमुत त वस
तति श्राद करुन छुय यस ब तस -मन०

४७. गोफ चल च त्रऽविथ तस शिवस
यस रोस्त छु न कांछा चितस
पान पुशिरावुन छुय च्य तस -मन०

४८. शिव शिव ध्यान निश मो च डल
चम छय प्रकृत पुरुषस म वल
कोर यि चित्रकार मायायि छल -मन०

४९. यव किज शिव ज्ञानख च्वपऽर्य
रोजनय न केह पापऽज भार्य
भवसर चे सार छुय शिव-तार -मन०

५०. युन गछुन छुय चिन्मात्रा
ज्ञानियस यिय वुछुन यात्रा
पननी छे वननी वारता -मन०

१. तृप्त नव द्वार वात नव दल
वऽतिथ चलिय जन्मच बदल
दीह यात्रा गयि यिय सफल -मन०

५२. दीह छुय वोनमुत दीवद्वार
संसार जंगलुक देवदार
दान कर दान ज्ञान दीह उधार —मन०
५३. फेरुन छुयन अद त्रिभुवनस
वऽतिथ तत् विष्णु-भुवनस
यमलस त कमलस त भवनस —मन०
५४. वुज्जनस छु जल निर्मल उजल
नित्य-नेम वस भवानि-बल
वुधि-भन वाति भवानि-बल —मन०
५५. भर्ग पाद पूज संसर्ग नेर
चमकिय स्वप्रकाशिय अनेर
चलनय जन्म-जन्मक्य बखेर —मन०
५६. भर्ग रूप नव दुर्गा च मान
स्वर्गलूकक्य छिय तस्य नमान
इष्ट दीवी छे पननी प्रमाण —मन०
५७. देवी सु पारवती सती
मऽज्य यस वोनुख मीनावती
शिव तस वरणिय आव ततिय —मन०
५८. ही देवी म्य दया करुम
हर हर हर शाप पाप हरुम
कर्मफल वुछनय वुज वरुम् —मन०
५९. शिव-शक्त अख त नामरूप भ्योन
पान बोज मानि क्याह नोन वनुन

परमानन्द पानस बनून
मन थिर कर पूजून प्रभू॥

—०—

म्वक्त कनि तारख छिस तापदानस
छम ईशानस पोशि-पूजाह॥

आकाशि पोशि-वर्षुन हनि-हनि छुस
रथबान कनि छुस सूर्य देवता।
सायबान बन्योमुत छुस आसमानस॥ छम०

ड्यकस प्यठ चन्द्रम प्रजलान लाल छुस
वाव-लूकपाल छुस करान गजिगाह।
ब्रह्मा त विष्णु छिस सऽत्य जंपानस॥ छम०

चित्रग्वपथ ताह छुस करान सामानस
इन्द्राज म्वरछल-बरदार छुस।
धर्मराज थोवमुत प्यठ धर्म-दानस॥ छम०

सत-ऋषि सथ जल ह्यथ मन्त्र बानस
अतर कोफूर छ्यकान छिस।
सतवय ग्रहदि छिस ह्यथ विमानस॥ छम०

गंगासागर ह्यथ छस गंगा
वुद जालान छस दीपमाला।
लक्ष्मी मीठ्य छ्यस दिवान दामानस॥ छम०

नाबद आपरान महाविद्या छस
करान जमुना छस वावजि वाव।
द्वद मऽज्य सरस्वती छस पानस॥ छम०

जंगि थाल अनवन्य छस पान सिद्धा
 व्यूग लेखान छस कर्मलेखा।
 आत्मरूप बसवुन छु मनकिस थानस॥ छम०
 वासुक त शेषनाग शेरि बरदार छिस
 रत्न हुन्द मुक्त-हार छुस नऽल्य।
 घट चञ्च गाश आव सारिसय जहानस॥ छम०
 कुवीर जी त वरुण छिस खरच-बरदारय
 सोर स्वर्गद्वारय सऽत्य सऽत्य ह्यथ।
 रथ छिख गंडिमत्य मंज्र मैदानस॥ छम०
 ड्यकस प्यट चन्दन ट्योक छुस तीजवानस
 बुथिस छुस क्वरोर सूर्यक तीज।
 छस दया गुल्य गंडिथ तस दयावानस॥ छम०
 अर्ध कर मनस त पोश कर प्राणस
 कृष्ण पूजायि लाग सन्निधानस।
 जालिय पाफ गालिय अज्ञानस
 सोय छि भगवानस पोश-पूजा॥

—०—

ब्यल तय मादल व्यन गुलाब पंपोश दस्तय
 पूजायि लागय परमशिवस शिवनाथस तय॥
 जटामुकुट जट-गंगा वसान छस तय
 दीवियि-देवता विष्णु ब्रह्मा छिस दस-बस्तय
 भक्तियि-भाव जय जयकार अऽसिन तस तय॥
 पूजाय०

दयासागर लोल-विजयाय करनस मस तय
हा पोशमत्यो! होश बल मनि थव ध्यान ह्यस तय
असोर संसार छलरावान सोर रोजि कस तय॥
पूजायि०

पऽस्य-पऽस्य लगहाय शिव-शंकर शिवनावस तय
दर्शन च्यान्युक छु म्य यछ लोल यच हावस तय
टोठतम शिवजी जगत् ईश्वर छुस बेकस तय॥ पूजा०

पंपोश पादव सऽत्य यितम अस्तय अस्तय
चरनन वन्दय जुव त जान ह्यथ बलिंजि वस तय
यिन चानि सऽतिन पोज वुज्यम नागरादस तय॥
पूजा०

अमरनाथस नीलकण्ठस शेरि लागस तय
दयायि सऽतिन कृष्णस प्यठ आर यियितन तस तय
तवय कृष्णो अर्पण गछ शिवनावस तय
पूजायि लागस परमशिवस शिवनाथस तय॥

—०—

शिवनाथ आनन्द अमर्यथ चावतम
सत्गुरु हावतम गटि-मंज गाश॥

यति छुख छारथ कथ बो मकानस
गोमुत छुस अज्ञानस मंज
ओन छुस जऽज हंज वथ वुछनावतम॥ सत्गुरु०

बोलनस संसारचि मायायि
मोकलय चानिय वोपाय सऽत्य

दयायि हंजय नजराह त्रावतम॥ सत्गुरु०

छुय काम-क्रूध-लूभ-मुह-अन्धकारय
ममताय सऽत्य व्यस्तार म्योन
समतायि सऽत्य यमि मंज मोकलावतम॥ सत्गुरु०

सन्तोष व्यचार सत्संग धर्मय
खटनय आयम क्वकर्मय सऽत्य
अनिच्छायि परम-गथ प्रावनावतम॥ सत्गुरु०

अन्दरय युस छुम आनन्द-मन्दरय
तथ्य मन्ज करयो यूग-पूजा
वोपनिषदन हन्ध सिर म्यति बावतम॥ सत्गुरु०

लोकचार अन्ध गोम घरके क्षूभय
जवान छुस रक्षतम लूभय-निश
बुजर छु नजदीख मत मन्दछावतम॥ सत्गुरु०

ब्रह्मण जन्म दिथ मत मन्दछावतम
नब-प्यठ बोन मत दावतम दब
अमरनाथो अमर बनावतम॥ सत्गुरु०

दासन हुन्द दासाह गन्जरावतम
मत मशरावतम पनज ज्ञान
यति छुख पानय तोत वातनावतम॥ सत्गुरु०

अज्ञपा-ज्ञप यज्ञ ज्योत प्रज्ञलावतम
होत-शेष ज्ञन मचरावतम मे
हे महेश दीश दीश मत दशरावतम॥ सत्गुरु०

सथ-च्यथ-आनन्द अमर्यथ चावतम
न्यथ भासनावतम सोऽहं-सो
ॐ शिव शम्भू शब्द शमरावतम॥ सत्गुरु०

मन-नागस प्रेम-पोज वुज्जनावतम
सुलि वुज्जनावतम त हावतम रूप
मंज प्रभातस सातस म सावतम॥ सत्गुरु०

मोह-मायायि सऽत्य मत तम्बलावतम
सतचिय कथ पावनावतम याद
च्यतकुय चेनुन न्यथ चेननावतम॥ सत्गुरु०

सतकि निर्णय पय पकनावतम
दय पननिय नयि हावतम वथ
नाव छुस कृष्ण शिव-भाव वडरावतम
स्वदि वानिनि पऽठ्य हावतम रूप॥ सत्गुरु०

वोपदीश सऽतिन वुछथय त्रावतम
सऽत्य मा आस्यम कुनि केह लीफ
ब्रह्मानन्दसय प्यठ वार थावतम॥ सत्गुरु०

ध्यानच नदियाह निर्मल करिथय
योग-पानि सऽत्यन बरिथय छह
बय तन नावय चय मन नावतम॥ सत्गुरु०

ज्ञानकि न्यथरय वार मुचरावतम
पंपोश ज्ञन फोलरावतम मन
अद्वैत-भाव सऽत्य पानस छावतम॥ सत्गुरु०

मूल-तल ओसुस निर्मल पोन्नुय
 व्यवहार प्रक्रच कोरनम यख
 निर्णय गर्मिय सऽत्य व्यगलावतम॥ सत्तुरु०

नाव छुम कृष्ण छम चऽनिय आशय
 हावतम सत् चित्त आकाशय
 संसारस मंज पुश मत पावतम
 सत्तुरु हावतम गटि मंज गाश॥

— ० —

सन्यासय हा गोसाने
 कुनि कने थिखना वने॥

जटि मन्ज छय गंगा जारी
 ज्ञन छि वसान अमृत धारी।
 सूर-भस्मा वलिथ छु तने॥ कुनि०

ड्यकस प्यठ छिय यिम त्र्य न्यथरय
 शूभवज छिय पम्पोश वथरय
 वासुक नाग छुय योनि कने॥ कुनि०

जाय च्य रटथम शिन्याशयन
 छोप छाथि ह्यथ रूदुख नयन
 सर्वव्यापक छुख हनि हने॥ कुनि०

खास वृषभा छुय वाहने
 सऽर करान छुख त्रिभुवने
 छय च्य उमा खोहवुरि कजे॥ कुनि०

पान म्यान्वो मो नाज्ज तने
काल वृथ यथ सूर बने
शिव च गारुन मंज्जबाग मने॥ कुनि०

अऽर्तिस कास्तम अऽर्चरय
गट कास्तम अमरीश्वरय
मोख च हावतम हरमोख कने॥ कुनि०

—०—

शिव शंकर

मन स्थिर कर मन्तर पर—
शिव-शंकर शम्भो!

मन शु'द बनि साक्षात् ननि-
हनि हनि गटि मंज्ज गाश
सुविचार व्ययि श्रद्धायि पर-शिव०

प्रभातस अछ मन्दिरस
गंग-जल तन नाविथ
ध्यान-धारणायि मनि मंज सुर-शिव०

शिवनाथस गोंड दि अशि-जल
शेरि लागुस भाव पोष
मन-प्राण वार, तुता कर-शिव०

इन्द्रिय नैवेद्य सोम्बराव
मन-त्रामरि मन्ज्ज थाव,
देह-दीप जा'लिथ वार, पर-शिव०

वासनायि धूप थव दज्जवुन
 विज्ञान-दीप प्रज्जवुन
 व्यज्ज-पूर्वक व्यज्जना कर-शिव०

सहस्रदल 'कमल' फोलराव
 शिव-अनुग्रह यिथ प्राव,
 शिव नित सु'र चलि ज्य त, मर,-शिव०

—०—

मातृ संगीत

श्रीमहिषासुरमर्दिनी स्तोत्रम्

अयि गिरिनन्दिनि नन्दितमेदिनि विश्वविनोदिनि नन्दनुते
 गिरिवरविन्ध्यशिरोऽधिनिवासिनि विष्णुविलासिनि जिष्णुनुते।
 भगवति हे शितिकण्ठकुटुम्बिनि भूरिकुटुम्बिनि भूरिकृते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१॥

सुरवरवर्षिणि दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते
 त्रिभुवनपोषिणि शंकरतोषिणि किल्बिषमोषिणि घोषरते।
 दनुजनिरोषिणि दितिसुतरोषिणि दुर्मदशोषिणि सिन्धुसुते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥२॥

अयि जगदम्ब मदम्ब कदम्बवनप्रियवासिनि हासरते
 शिखरिशिरोमणि तुङ्गहिमालय शृङ्गनिजालय मध्यगते।
 मधु मधुरे मधुकैटभगंजिनि कैटभभंजिनि रासरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥३॥

अयि शतखण्ड विखंडितरुण्ड वितुंडितशुंडगजाधिपते
 रिपुगजगंड विदारणचंड पराक्रमशुण्ड मृगाधिपते।
 निजभुजदण्ड निपातितखंड विपातितमुंड भटाधिपते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥४॥

अयि रणदुर्मद शत्रुवधोदित दुर्धरनिर्जर शक्तिभृते
 चतुरविचार धुरीण महाशिवदूतकृत प्रमथाधिपते।
 दुरितदुरीह दुराशयदुर्मति दानवदूतकृतान्तमते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥५॥

अयि शरणागत वैरिवधूवर वीरवराभयदायकरे
 त्रिभुवन मस्तक शूलविरोधि शिरोऽधिकृतामल शूलकरे।
 दुमिदुमितामर दुंदुभिनाद महो मुखरीकृत तिग्मकरे
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥६॥

अयि निजहुंकृतिमात्र निराकृत धूम्रविलोचन धूम्रशते
 समरविशोषित शोणितबीज समुद्भवशोणित बीजतले।
 शिव शिव शुम्भ निशुम्भमहाहव तर्पित भूत पिशाचरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥७॥

धनुरनुसंग रणक्षणसंग परिस्फुरदंग नटत्कटके
 कनक पिशंगपृषत्कनिषंगरसद्भटशृंग हताबटुके।
 कृतचतुरंग बलक्षितिरंग घटद्वहुरंग रटद्वटुके
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥८॥

जय जय जप्यजये जय शब्दपरस्तुति तत्पर विश्वनुते
 झण झणझिझिमि झिंकृतनूपुर शिंजितमोहित भूतपते।
 नटितनटार्ध नटीनटनायक नाटितनाट्य सुगानरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥९॥

अयि सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनोहर कान्तियुते
 श्रितरजनी रजनी रजनी रजनी रजनीकर वक्त्रवृते।
 सुनयनविभ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमर भ्रमराधिपते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१०॥

महितमहाहव वल्लभतल्लिक वल्लितरल्लितभल्लिरते
 विरचितवल्लिक पल्लिकमल्लिक झिल्लिकभिल्लिक वर्गवृते।
 श्रुतकृतफुल्ल समुल्लसितारुणतल्लजपल्लव सल्ललिते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥११॥

अविरलगण्डगलन्मदमेदुर मत्तमतंगज राजपते
 त्रिभुवनभूषण भूतकलानिधि रूपपयोनिधि राजसुते।
 अयि सुदतीजन लालसमानस मोहनमन्मथ राजसुते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१२॥

कमलदलामल कोमलकान्ति कलाकलितामल भाललते
 सकलविलास कलानिलयक्रम केलिचलत्कल हंसकुले।
 अलिकुलसंकुल कुवलय मण्डल मौलिमिलद्वकुलालिकुले
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१३॥

करमुरलीरववीजितकूजित लज्जितकोकिल मंजुमते
 मिलितपुल्लिंद मनोहरगुंजित रंजितशैल निकुंजगते।
 निजगुणभूत महाशबरीगण रङ्गणसम्भृतकेलिरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१४॥

कटितटपीत दुकूलविचित्र मयूखतिरस्कृत चन्द्ररुचे
 प्रणतसुरासुर मौलिमणिस्फुरदंशुलसन्नख चन्द्ररुचे।
 जितकनकाचल मौलिपदोर्जित निर्भरकुंजर कुम्भकुचे
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१५॥

विजितसहस्रकरैक सहस्रकरैक सहस्रकरैकनुते
 कृतसुरतारक संगरतारक संगरतारक सूनसुते।
 सुरथसमाधि समानसमाधि समाधिसमाधि सुजातरते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१६॥
 पदकमलं करुणानिलये वरिवस्यति योऽनुदिनं सुशिवे
 अयि कमले कमलानिलये कमलानिलयः स कथं न भवेत्।
 तव पदमेव परंपदमिव नुशीलयतो मम किं न शिवे
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१७॥
 कनकलसत्कल शीकजलैरनुषिञ्चितितेऽङ्गणरङ्गभुवं
 भजति स किं न शचीकुचकुंभ तटीपरिरंभ सुखानुभवम्।
 तव चरणं शरणं करवाणि मृडानि सदा मयि देहि शिवं
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१८॥
 तव विमलेन्दुकुलं वदनेन्दुमलं सकलं ननु कूलयते
 किमु पुरुहूतपुरीन्दुमुखी सुमुखीभिरसौ विमुखीक्रियते।
 मम तु मतं शिवनामधने भवति कृपया किमु न क्रियते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥१९॥
 अयि मयि दीनदयालुतया कृपयैव त्वया भवितव्यमुमे
 अयि जगतो जननी कृपयासि यथासि तथाऽनुमितासिरते।
 यदुचित्तमत्र भवत्युररी कुरुतादुरुतापमपाकुरुते
 जय जय हे महिषासुरमर्दिनि रम्यकपर्दिनि शैलसुते॥२०॥

-०-

श्री दुर्गा जी

जगजननी जय! जय!! माँ! जगजननी जय! जय!!
 भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय जय॥०॥

तू ही सत्-चित्-सुखमय शुद्ध ब्रह्म-रूपा।
सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा॥१॥

आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर अज आनन्दराशी॥२॥

अविकारी, अघहारी, अकल, कलाधारी।
कर्ता विधि, भर्ता हरि, हर संहारकारी॥३॥

तू विधिवधू, रमा, तू उमा, महामाया।
मूल प्रकृति, विद्या तू, तू जननी, जाया॥४॥

राम कृष्ण तू, सीता, ब्रजरानी राधा।
तू वाञ्छाकल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा॥५॥

दश विद्या, नव-दुर्गा, नाना शस्त्रकरा।
अष्टमातृका, योगिनी, नव-नव-रूप-धरा॥६॥

तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू।
तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डव-लासिनि तू॥७॥

सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाधारा।
विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी धारा॥८॥

तू ही स्नेहसुधामयि, तू अति गरलमना।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना॥९॥

मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे।
कालातीता काली, कमला तू वरदे॥१०॥

शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी।
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी॥११॥

हम अति दीन दुखी माँ विपत-जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे॥१२॥

निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै।
करुणा कर करुणामयि, चरण-शरण दीजै॥१३॥

—०—

कश्मीरी भजन

ॐ श्रीमत् ही भवऽनी छयम म्य आशा चऽनी
क्षणसय मंज दुःख त संकट दूर करतय सऽनी।

छख च अरदाह भुज भवऽनी छख सहस प्यठ चय
सवार

अन्ध अन्ध च्य देवता सऽरी छिय करान च्यय
जारपार

अष्टसिद्धि अऽधीन छय पाद चऽन्य न्यथ
छलऽनी॥०॥

सिरिय तय ब्ययि चन्द्रम छुय प्रारान च्यय हुकमस
कर मऽज्य भवऽज करि आज्ञा प्रकाश बनि जगतस
चानि प्रकाशि किन्य छु सन्तुष्ट त्रिभुवन रोजऽनी॥०॥

यलि इन्द्राज ब्ययि दीव अन्य तंग महिषासुरनय
इन्द्राज आव च्यय शरणय पादन च्य प्योय परनय
पत पत तस देवता आयि फ्रकहत्य त दोरऽनी॥०॥

भूजिथ तिहुन्द हाल अहवाल अद महिषासुर च्यय
वातनोबथन पाताल त्यलि जीर दिचथस खुर सऽत्य

मोकलऽविथख भय निशि दीव करथक
मेहरबानी॥०॥

ॐ शब्द छख सर्वशक्तिमान महामाया च्यय वनान
काम क्रोध लोभ व्ययि अन्धकार भख्यन छख च
कासान

चऽनी भख्य शिवशक्तिरूप ध्यान चोन धारऽनी॥०॥

बोज्ञान छख विनती चय यति चोनय छु दरबार
चानि हुक्म सऽत्य सारि जगत्तुक छु चलान अद
कारबार

अस्यति आमत्य अर्ज करने दोरान त लारऽनी॥०॥

मऽज्य बोज्ञतम छय म्य हाजथ अख भक्ती चऽनिय
घरि घरि रोज्ञतम च सन्मोख हृदयस मंज भवऽनी
सरस्वती हुन्द प्रसाद युथ म्य बनि नेर्यम अमृत
वऽणी॥०॥

—०—

पादि कमलन तल ब आसय, करनि चऽनिय अस्तुती
मोक्ष दिम बोड वर म्य दिम माज्य भर्ग-शाखा
भगवती।

गोम न्यत्रन खून जऽरी छुस च्यकुन जऽरी करान
भास प्रत्यक्ष कास खऽरी अस्य छि पापव
बलिमऽती॥०॥

चानि आशायि योत ब आसय नावोमेद नेरय न ज्ञांह
या म्य वर दिम मोक्ष दामुक नत छुसय प्रारान
यतिय॥०॥

लोल बागस पोश फोलिमत्य वेरि चाने चार्य चार्य
शेरि लागय भाव कोसल शोलवनि कारे पती॥०॥

क्याह वनव अस्य मन्दछेमज्य चन्द छ्यनि सौदा करान
कर दया वज वुछ म तथ कुन शर्मि सज्य अस्य
गलिमती॥०॥

चज्य ग्वण व्यस्तारनुक ताकत अनि कुस कस बनिय
छुय च्य जय जय श्याम सोन्दरी जाम शूमान छिय
छतिय॥०॥

ज्ञान दाता मोक्ष दाता छख जगथ माता च छख
ही भवजनी कर म्य वजणी स्यद्ध मोखस दिम
सरस्वती॥०॥

पज्जि मन युस भख्य चजनी करि निष्कल रात दिन
क्या छु संशय तसन्दि बापथ मोक्ष दामकि बर
वथिव॥०॥

च्यज्य ग्वण छुस बो व्यचारान पन ओमकि खारान
ब छुस

अबसनजकि वर दोन कुनुय कर नत छु आछुर कज्य
कती॥०॥

सर्वव्यापक छख च्वपजरी अस्य छि चजरी क्या वुछव
वन च्य रोस्त कुस बोज्जि जजरी हाव मोख प्यठ
परबती॥०॥

कर्महीनन धर्महीनन कर्त्तव्यन सान्यन म वुछ
डाल स्योद अथ कर्म लान्यन प्रक्रमस चजनि
खतिय॥०॥

वीलज्जरी बोज दासस रोज सन्तुष्ट सर्वदा
छुय च्य रोशन छुस ब तोषण च्जय म्य बखचुम
थज्ज गती॥०॥

— ० —

दासय दया म्य करतम, छखय निर्विकार दीवी।
चरणन तल म्य वरतम, करतम उदार दीवी॥

छखय सृष्टि-स्थिति कर्त्ता, भक्त्यन च पान भर्त्ता
विश्वरूप ही अकर्त्ता, छखय ॐकार दीवी॥०॥

सन्तुष्ट न्यथ म्य आसुम, मंज ध्यानसय म्य भासुम
च्यथ शायि चय विकासुम, दिमि सत्विचार
दीवी॥०॥

त्र्यन कारण च शक्ती, दिमि म्य पनज भक्ती
बनिहे म्य यूग मुक्ती, चल्यम अन्धकार दीवी॥०॥

योगीश्वरन च भासान, प्रथ शायि चय विकासान
यिम सोक्त दिल छि आसान, तिमहय छिय हुशार
दीवी॥०॥

चय छख बन्धु-भ्राता, चय छख पिता त माता
चय छख गुरु त दाता, बोजतम म्य ज्ञार दीवी॥०॥

दिम स्मरण म्य अन्तर, भासतम अन्दर त न्यबर
सन्तापकुय छु म्य जर, ऐ च्यथ स्फार दीवी॥०॥

हा दास! गछ च अर्पण, शुद्ध कर मन दर्पण
आनन्द बनिय विलक्षण, साक्षात्कार दीवी।

— ० —

मऽज्य शारिकाय कर दया वर दया ही भवानी।
कर दयायि हंज दृष्टि सोय छम बऽड मेहरबानी॥

अस्य हय आमत्य च्य निश योर कर्म-खुर्य भावऽनी।
मतय वुछत कर्मस कुन अस्य छि सऽरिय पशेमऽनी॥

कोत तान्य रोजि युन त गछन कोत तान्य रोजि क्रेशुन
वदुन।

तार दिवान सारिनय छख असि ति रोज तारऽनी॥

ओश वसान दारि-दारे मऽज्य भवऽज हावि दर्शुन।
केंहनय छुय तगान बोजुन केंहनय छुस ब ज्ञानऽनी॥

नखि छखय डखि छखय चय च्य सिवा काहनय
म्योनय।

दोह त रात चोनय फिरान अख सदा यि रूहा'नी॥

कुपुत्र छि माजि आसान, मऽज्य छ न ज़ाँह ति
रोशान।

अस्य मंगान चऽनिय दया जगतच राजि रऽनी॥

अष्टादशभुजा छख जगतस बऽगरऽनी।

अस्य हय आमत्य छि डेडि तल अनुग्रह छिय
मंगऽनी॥

पाप-शाप कास्तम चय वालतम भाज्य पापज।
गीर कोरहस ब पापव केहनय छुम न तगजनी॥

दास आव चोन दरबार दारि ओश छुम वसजनी।
कन थव बोज़ फरियाद नाद छुसय दिवजनी॥

लोकचारस मशिय गोम बुजरस छुस स्वरान दय।
काँह गाफिला न म्य हयुव क्रेजिलि पाज सारजनी॥

भक्तिस दर्शुन हाव सन्मुख रोज़ि जगतस।
लोल चानि दोह तय राथ नाल छुसय दिवजनी॥

बूजमुत छ हलि मुशिकल वन्य तवय अस्य आयि
योर।

अख रछा करत वज गौर हिमाचल राजिजानी॥

दास छुस दर इन्तिज़ार भवसागरस दिमि तार।
ल्यम्बि मंज पम्पोश खार बोज़तय च म्यज जजरी॥

— ० —

बंगला भजन

(मिश्र मल्लार-एकताल)

श्यामा मा कि आमार कालो रे। कालरूपा दिगम्बरी
हृदिपद्म करे आलो रे॥

लोके बोले काली कालो, आमार मन तो बोले ना कालो
रे॥

कखनो श्वेत कखनो पीत कखनो नील लोहित रे,

४०
(आमि) आगे नाहि जानि, केमन जननी, भाबिये जनम गे
लो रे,

कखनो पुरुष, कखनो प्रकृति, कखनो शून्यरूपा रे,
(माघेर) ए भाव भाबिये 'कमलाकान्त' सहजे पागल
होलो रे,

—०—

(सिन्धुखमाज-झपताल)

मजलो आमार मन-भ्रमरा श्यामापद-नील-कमले।
(श्यामपद-नील-कमले, कालीपद-नील-कमले)
जतो विषय-मधु तुच्छ होलो कामादि कुसुम सकले॥
चरण कालो, भ्रमर कालो, कालोय कालो मिशे गेलो,
पंचतत्त्व प्रधान मत्त रंग देखे भंग दिले॥
'कमलाकान्त' मने, आशापूर्ण एतो दिने॥
(ताय) सुख दुख समान हालो आनन्द-सागर उथले॥

—०—

(भैरवी-एकताल)

मा त्वं हि तारा, तुमि त्रिगुण धरा परात्परा।
आमि जानि जो ओ दीन दयामयी, तुमि दुर्गमेते
दुखहरा॥

तुमि जले तुमि स्थले, तुमि आद्यमूले गो मा,
आछो सर्वघटे अक्षपुटे, साकार आकार निराकारा॥

तुमि संध्या, तुमि गायत्री, तुमि जगद्धात्री, गो मा,
(तुमि) अकुलेर त्राणकर्त्री, सदा शिवेर मनोहरा॥

(मिश्र सिंधु-झपताल)

सदानन्दमयी काली, महाकालेर मनोमोहिनी।

(तुमि) आपनि नाचो, आपनि गाओ मा आपनि दाओ मा
करतालि॥

आदिभूता सनातनी शून्यरूपा शशि-भाली।

ब्रह्माण्ड लो ना जखन, मुण्डमाला कोथा पेलि॥

सबे मात्र तुमि यंत्री, आमरा तोमार तन्त्रे चलि।

(तुमि) जेमनि नाचाओ तेमनि नाचि, जेमनि बोलाओ
तेमनि बोलि॥

अशान्त 'कमलाकान्त' दिये बोले मा गालागालि।

(एबार) सर्वनाशी धरे असि धर्माधर्म दुटि खेलि॥

— ० —

श्रीरामनामसंकीर्तनम्

प्रणामः

श्रीनाथे जानकीनाथे अभेदः परमात्मनि।

तथापि मम सर्वस्वः रामः कमललोचनः॥

ॐ श्रीरामचन्द्राय नमः॥

स्तवः

वर्णानामर्थसंधानां रसानां छन्दसामपि।

मंगलानां च कर्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ॥१॥

भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः
स्थमीश्वरम्॥२॥

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शंकररूपिणम्।
यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते॥३॥

सीतारामगुणग्राम-पुण्यारण्यविहारिणौ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ॥४॥

उद्धवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।
सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम्॥५॥

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुराः
यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।
यत्पादः प्लवमेव भाति हि भवाम्भोधस्तितीर्षावताम्
वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामाख्यमीशं हरिम्॥६॥

प्रसन्नतां यो न गताभिषेकत
स्तथा न मम्लौ वनवासदुःखतः।
मुखाम्बुजश्री रघुनन्दनस्य मे
सदास्तु सा मञ्जुमंगलप्रदा॥७॥

नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगं
सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारुचापं
नमामि रामं रघुवंशनाथम्॥८॥

मूलं धर्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददम्
वैराग्याम्बुजभास्करं त्वघहरं ध्वान्तापहं तापहम्।

मोहाम्भोधर पुञ्जपाटनविधौ खे संभवं शंकरम्
वन्दे ब्रह्मकुले कलंकशमनं श्रीरामभूप्रियम्॥९॥

सान्द्रानन्दपयोदसौभगतनुं पीताम्बरं सुन्दरम्
पाणौ बाणशरासनं कटिलसत् तूणीरभारं वरम्।
राजीवायतलोचनं धृतजटा जूटेन संशोभितम्
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं रामाभिरामं भजे॥१०॥

कुन्देन्दीवरसुंदरावतिबलौ विज्ञानधामावुभौ
शोभाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ।
मायामानुषरूपिणौ रघुरौ सद्धर्मवन्तौ हि तौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्तिप्रदौ तौ हि
नः॥११॥

ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययम्
श्रीमच्छंभुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा।
संसारामयभेषजं सुमधुरं श्रीजानकीजीवनम्
धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं
श्रीरामनामामृतम्॥१२॥

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्वाणशान्तिप्रदं
ब्रह्माशम्भुफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम्।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिम्
वन्देऽहं करुणाकरं रघुरं भूपालचूडामणिम्॥१३॥

केकिकण्ठाभनीलं सुरवरविलसद्विप्रपादाब्जचिह्नम्
शोभाढ्यं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम्।
पाणौ नाराचचापं कपिनिकरयुतं बन्धुना सेव्यमानम्
नौमीढ्यं जानकीशं रघुवरमनिशं

पुष्पकारूढरामम्॥१४॥

आर्तानामार्तिहन्तारं भीतानां भयनाशनम्।
द्विषतां कालदण्डं तं रामचन्द्रं नमाम्यहम्॥१५॥

श्रीराघवं दशरथात्मजमप्रमेयं
सीतापतिं रघुकुलान्वयरत्नदीपम्।
आजानुबाहुमरविन्ददलायताक्षं
रामं निशाचरविनाशकरं नमामि॥१६॥

वैदेहीसहितं सुरद्रुमतले हैमे महामण्डपे
मध्ये पुष्पक आसने मणिमये वीरासने संस्थितम्।
अग्रे वाचयति प्रभञ्जनसुते तत्त्वं मुनीन्द्रैः परम्
व्याख्यातं भरतादिभिः परिवृतं रामं भजे
श्यामलम्॥१७॥

प्रार्थना

नान्या स्पृहा रघुपते हृदयेऽस्मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसं च॥

संकीर्तनम्

ॐ श्रीसीता-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न-हनुमत्-समेत
श्रीरामचन्द्रपरब्रह्मणे नमः

श्रीनामरामायणम्

बालकाण्डम्

१.	शुद्धब्रह्मपरात्पर	राम
२.	कालात्मकपरमेश्वर	राम
३.	शेषतल्पसुखनिद्रित	राम
४.	ब्रह्माद्यमरप्रार्थित	राम
५.	चण्डकिरणकुलमण्डन	राम
६.	श्रीमद्दशरथनन्दन	राम
७.	कौशल्यासुखवर्द्धन	राम
८.	विश्वामित्रप्रियधन	राम
९.	घोरताटकाघातक	राम
१०.	मारीचादिनिपातक	राम
११.	कौशिकमखसंरक्षक	राम
१२.	श्रीमद् अहल्योद्धारक	राम
१३.	गौतममुनिसंपूजित	राम
१४.	सुरमुनिवरगणसंस्तुत	राम
१५.	नाविकधावितमृदुपद	राम
१६.	मिथिलापुरजनमोहक	राम
१७.	विदेहमानसरञ्जक	राम
१८.	त्र्यम्बककार्मुकभञ्जक	राम
१९.	सीतार्पितवरमालिक	राम

२०.	कृतवैवाहिककौतुक	राम
२१.	भार्गवदर्पविनाशक	राम
२२.	श्रीमद् अयोध्यापालक	राम

अयोध्याकाण्डम्

२३.	अगणितगुणगणभूषित	राम
२४.	अवनीतनयाकामित	राम
२५.	राकाचन्द्रसमानन	राम
२६.	पितृवाक्याश्रितकानन	राम
२७.	प्रियगुहविनिवेदितपद	राम
२८.	तत्क्षालितनिजमृदुपद	राम
२९.	भरद्वाजमुखानन्दक	राम
३०.	चित्रकूटाद्रिनिकेतन	राम
३१.	दशरथसन्ततचिन्तित	राम
३२.	कैकेयीतनयार्थित	राम
३३.	विरचितनिजपितृकर्मक	राम
३४.	भरतार्पितनिजपादुक	राम

अरण्यकाण्डम्

३५.	दण्डकवनजनपावन	राम
३६.	दुष्टविराधविनाशक	राम
३७.	शरभंगसुतीक्ष्णार्चित	राम
३८.	अगस्त्यानुग्रहवर्धित	राम

३९.	गृध्राधिपसंसेवित	राम
४०.	पंचवटीतटसुस्थित	राम
४१.	शूर्पणखार्तिविधायक	राम
४२.	खरदूषणमुखसूदक	राम
४३.	सीताप्रियहरिणानुग	राम
४४.	मारीचार्तिकृताशुग	राम
४५.	विनष्टसीतान्वेषक	राम
४६.	गृध्राधिपगतिदायक	राम
४७.	शबरीदत्तफलाशन	राम
४८.	कबन्धबाहुच्छेदन	राम

किष्किन्धाकाण्डम्

४९.	हनुमत्सेवितनिजपद	राम
५०.	नतसुग्रीवाभीष्टद	राम
५१.	गर्वितबालिसंहारक	राम
५२.	वानरदूतप्रेषक	राम
५३.	हितकरलक्ष्मणसंयुत	राम

सुन्दरकाण्डम्

५४.	कपिवरसंततसंस्मृत	राम
५५.	तद्गतिविघ्नध्वंसक	राम
५६.	सीताप्राणाधारक	राम
५७.	दुष्टदशाननदूषित	राम

५८.	शिष्टहनुमद्भूषित	राम
५९.	सीतावेदितकाकावन	राम
६०.	कृतचूडामणिदर्शन	राम
६१.	कपिवरवचनाश्वासित	राम

युद्धकाण्डम्

६२.	रावणनिधनप्रस्थित	राम
६३.	वानरसैन्यसमावृत	राम
६४.	शोषितसरिदीशार्थित	राम
६५.	विभीषणाभयदायक	राम
६६.	पर्वतसेतुनिबन्धक	राम
६७.	कुम्भकर्णशिरच्छेदक	राम
६८.	राक्षससंघविमर्दक	राम
६९.	अहिमहिरावणचारण	राम
७०.	संहतदशमुखरावण	राम
७१.	विधिभवमुखसुरसंस्तुत	राम
७२.	खस्थितदशरथवीक्षित	राम
७३.	सीतादर्शनमोदित	राम
७४.	अभिषिक्तविभीषणनत	राम
७५.	पुष्पकयानारोहण	राम
७६.	भरद्वाजाभिनिषेवण	राम
७७.	भरतप्राणप्रियकर	राम

७९.	सकलस्वीयसमानत	राम
८०.	रत्नलसत्पीठास्थित	राम
८१.	पट्टाभिषेकालंकृत	राम
८२.	पार्थिवकुलसम्मानित	राम
८३.	विभीषणार्पितरंगक	राम
८४.	कीशकुलानुग्रहकर	राम
८५.	सकलजीवसंरक्षक	राम
८६.	समस्तलोकाधारक	राम

उत्तरकाण्डम्

८७.	आगतमुनिगणसंस्तुत	राम
८८.	विश्रुतदशकण्ठोद्भव	राम
८९.	सीतालिंगननिर्वृत	राम
९०.	नीतिसुरक्षितजनपद	राम
९१.	विपिनत्याजितजनकज	राम
९२.	कारितलवणासुरवध	राम
९३.	स्वगतशाम्बुकसंस्तुत	राम
९४.	स्वतनयकुशलवनन्दित	राम
९५.	अश्वमेधक्रतुदीक्षित	राम
९६.	कालावेदितसुरपद	राम
९७.	आयोध्यकजनमुक्तिद	राम
९८.	विधिमुखविबुधानन्दक	राम
९९.	तेजोमयनिजरूपक	राम

१००.	संसृतिबन्धविमोचक	राम
१०१.	धर्मस्थापनतत्पर	राम
१०२.	भक्तिपरायणमुक्तिद	राम
१०३.	सर्वचराचरपालक	राम
१०४.	सर्वभवामयवारक	राम
१०५.	वैकुण्ठालयसंस्थित	राम
१०६.	नित्यानन्दपदस्थित	राम
१०७.	राम राम जय राजा	राम
१०८.	राम राम जय सीता	राम

प्रार्थना

भयकर मंगल दशरथ	राम
जय जय मंगल सीता	राम
मंगल कर जय मंगल	राम
संगत शुभ विभवोदय	राम
आनन्दामृतवर्षक	राम
आश्रितवत्सल जय जय	राम
रघुपति राघव राजा	राम
पतितपावन सीता	राम

स्तवः

कनकाम्बर कमलासन-जनकाखिल	धाम
सनकादिकमुनिमानस-सदनानघ	भूम

शरणागतसुरनायक चिरकामित	काम
धरणीतल-तरण दशरथनन्दन	राम
पिशिताशन-वनितावध-जगदानन्द	राम
कुशिकात्मज-मखरक्षण-चरिताद्भुत	राम
धनिगौतम-गृहिणीस्वजदध-मोचन	राम
मुनिमण्डल-बहुमानित-पदपावन	राम
स्मरशासन-सुशरासन-लघुभञ्जन	राम
नरनिर्जर-जनरंजन सीतापति	राम
कुसुमायुध-तनुसुन्दर कमलानन	राम
वसुमानितभृगुसम्भव-मदमर्दन	राम
करुणारस-वरुणालय नतवत्सल	राम
शरणं तव चरणं भवहरणं मम	राम

—०—

श्रीराम प्रणामः

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम्।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥१॥

रामाय रामचन्द्राय रामभद्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥२॥

श्रीहनुमत् प्रणामः

अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहम्
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम्।

सकलगुणनिधानं वानरानामधीशम्
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि॥१॥

गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम्।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम्॥२॥

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम्।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लंकाभयंकरम्॥३॥

उल्लंघ्य सिन्धो सलिलं सलीलं
यः शोकवह्निं जनकात्मजायाः।
आदाय तेनैव ददाह लंकां
नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम्॥४॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं
जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम्।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं
श्रीरामदूतं शिरसा नमामि॥५॥

आंजनेयमतिपाटलाननं
काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम्।
पारिजाततरुमूलवासिनं
भावयामि पवमाननन्दनम्॥६॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं
तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम्।
वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं
मारुतिं नमत राक्षसान्तकम्॥७॥

इति अष्टोत्तरशतनामरामायणं समाप्तम्।

जय श्रीरामचन्द्रजी की जय।

जय श्रीसीतामाई जी की जय।

जय श्री हनुमानजी की जय।

०

राम—भजन

(सिन्ध खमाज-तीनताल)

इतनी बिनती रघुनन्दन से,

दुःख-द्वन्द्व हमारो मिटाओ जी॥

निज पद-पंकज-पिंजर में,

चित हंस हमारो बिठाओ जी।

‘तुलसीदास’ कहै कर जोरी,

भवसागर पार उतारो जी॥

०

(धनाश्री-तीनताल)

मेरो मन रामहि राम रटै रे।

राम नाम जप लीजे प्राणी, कोटिक पाप कटै रे।

जनम जनम के खत जु पुराने, नामहि लेत फटै रे॥

कनक कटोरे अमृत भरियो, पीवत कौन नटै रे।

‘मीरा’ कहे प्रभु हरि अविनासी, तन-मन ताहि पटै रे॥

०

(झिंझोटी-दादरा)

ठुमकि चलत रामचन्द्र बाजत पैजनियाँ।

१. किलकि किलकि उठत धाय, गिरत भूमि लटपटाय।
धाय मातु गोद लेत दसरथ की रानियाँ॥
२. आँचल रज अंग झारि, बिबिध भाँति सो दुलारि।
तन मन धन वारि वारि कहत मृदु बचनियाँ॥
३. बिद्रुम सो अरुन अधर, बोलत मुख मधुर मधुर
सुभग नासिका में चारु लटकत लटकनियाँ॥
४. 'तुलसीदास' अति आनन्द, देखि के मुखारविन्द।
रघुबर छवि समान रघुबर छवि बानियाँ॥

०

(दरबारी कानड़ा-दादरा)

प्रेम मुदित मन से कहो, राम राम राम।
श्री राम राम राम, श्री राम राम राम॥

पाप कटे दुःख मिटे, लेत राम-नाम।
भव-समुद्र सुखद नाव एक राम-नाम॥

परम-शान्ति-सुख-निधान नित्य राम-नाम।
निराधार को आधार एक राम-नाम॥

परम गोप्य, परम इष्ट मंत्र राम-नाम।
संत-हृदय सदा बसत एक राम-नाम॥

महादेव सतत जपत दिव्य राम-नाम।
कासि मरत मुक्त करत, कहत राम-नाम॥
मात-पिता, बंधु-सखा, सबहि राम-नाम।
भक्त-जनन-जीवन-धन एक राम-नाम॥

०

(यमनकल्याण-तीव्रा)

श्रीरामचन्द्र कृपालु भजु मन हरण-भव-भय दारुणम्।
नवकंजलोचन, कंज-मुख, कर-कंज,
पद-कंजारुणम्॥

कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरज-सुन्दरम्।
पट पीत मानहुँ तड़ित रुचि शुचि नौमि
जनक-सुता-वरम्॥

भजु दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनम्।
रघुनंद आनन्दकंद कोसलचंद दशरथ-नंदनम्॥

सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु
उदार-अंग-विभूषणम्।

आजानुभुज शर-चाप-धर
संग्राम-जित-खर-दूषणम्॥

इति वदत 'तुलसीदास'
शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनम्।
मम हृदय-कंज निवास कुरु
कामादि-खल-दल-गंजनम्॥

०

(दरबारी कानड़ा-तीनताल)

जिनके हिय में श्रीराम बसे,
उन साधन और किये न किये।
जिन सन्त-चरण रज को परसा
उन तीरथ-नीर पिये न पिये॥
सब भूत दया निजके चित में
उन कोटन दान दिये न दिये।
नित राम रूप जो ध्यान धरे
उन रामको-नाम लिये न लिये॥

०

(पहाड़ी-कहरवा)

मन लागो मेरो चार फकीरी में॥
जो सुख पावों राम-भजन में, सो सुख नाहिं अमीरी
में॥
भला बुरा सबका सुनि लीजै, कर गुजरान गरीबी में॥
प्रेम-नगर में रहनि हमारी, भलि बनि आई सबूरी में॥
हाथ में कूंडी, बगल में सोंटा, चारों दिसि जागीरी
में॥
आखिर यह तन खाक मिलैगा, कहा फिरत मगरूरी॥
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, साहिब मिलै सबूरी
में॥

०

(पहाड़ी-तीनताल)

पायो जी म्हें तो राम-रतन धन पायो॥

वस्तु अमोलक दी म्हारे सतगुरु
किरपा कर अपनायो॥

जनम जनम की पूंजी पाई,
जगमें सभी खोवायो॥

खरचै नहिं कोई चोर न लेवै,
दिन दिन बढ़त सवायो॥

सत की नाव, खेवटिया सतगुरु,
भवसागर तर आयो॥

‘मीरा’ के प्रभु गिरधर नागर
हरख हरख जस गायो॥

०

श्रीकृष्ण संगीत

अच्युताष्टकम्

अच्युतं केशवं रामनारायणं,
कृष्णदामोदरं वासुदेवं हरिम्।
श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं,
जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे॥

अच्युतं केशवं सत्यभामाधवं,
माधवं श्रीधरं राधिकाराधितम्।

इन्दिरामन्दिरं चेतसा सुन्दरं;
देवकीनन्दनं नन्दज संदधे॥

विष्णावे जिष्णावे शंखिने चक्रिणे,
रुक्मिणीरागिणे जानकीजानये।
वल्लवीवल्लभायार्चितायात्मने,
कंसविध्वंसिने वंशिने ते नमः॥

कृष्ण गोविन्द हे राम नारायण,
श्रीपते वासुदेवाजित श्रीनिधे।
अच्युतानन्त हे माधवाधोक्षज,
द्वारकानायक द्रौपदीरक्षक॥

राक्षसक्षोभितः सीतया शोभितो,
दण्डकारण्यभूपुण्यताकारणः।
लक्ष्मणेनान्वितो वानरैः सेवितो,
ऽगस्त्यसम्पूजितो राघवः पातु माम्॥

धेनुकारिष्टकानिष्टकृदद्वेषिहा,
केशिहा कंसहृद्वंशिकावादकः।
पूतनाकोपकः सूरजाखेलनो,
बालगोपालकः पातु मां सर्वदा॥

विद्युदुद्योतवत्प्रस्फुरद्वाससं,
प्रावृडम्भोदवत्प्रोल्लसद्विग्रहम्।
वन्यया मालया शोभितोरः स्थलं,
लोहिताङ्घ्रिद्वयं वारिजाक्षं भजे।

कुञ्चितैः कुन्तलैर्भ्राजमानाननं,
रत्नमौलिं लसत्कुण्डलं गण्डयोः।

हारकेयूरकं कंकणप्रोज्ज्वलं,
किंकिणीमञ्जुलं श्यामलं तं भजे॥

अच्युतस्याष्टकं यः पठेदिष्टदं,
प्रेमतः प्रत्यहं पूरुषः सस्पृहम्।
वृत्ततः सुन्दरं कर्तृविश्वम्भर,
स्तस्य वश्यो हरिर्जायते सत्वरम्॥

०

गूकल हृदय म्योन तऽत्य चोन गूर्य-वान।
च्यथ-व्यमर्शं दिप्तिमान भगवानो॥

ब्रच म्यानि गूपियि चेय पत लारान
बंसुरी-नाद वाद मतानो।
नशिरिथ ह्यस त होश मशिरिथ पर त पान॥०॥

अथवास च्यय सऽत्यन त रास गिन्दान
व्यास-नारुद ति तऽत्य आसानो।
दास-भाव राधा-कृष्ण कृष्ण ज्ञपान॥०॥

दीवियि त देवता सीव चेय करान
भव-सर तव तार लभानो।
ग्यवान-रिवान ज्यव छस न लोसान॥०॥

असवनि कोसम मुख चानि फोलान
कुस तब नज्जि आसि शहलानो।
कुस्तभ त्र्यटि त माल आसहोय पैरान॥०॥

मायायि सऽतिन च शायि-शायि आसान
कायायि-मंजु त भ्योन रोज्ञानो।

सूर्यके आसन छाया छि भासान॥०॥

ॐ शब्द गायत्री शक्त चय जपान

होम-यज्ञ जप-तप जग-सानो।

शम-दम यम-नेम ध्यान-धारणायि दान॥०॥

आकाश म्वख छुख आकाश भासान

ततसत प्रकाश नित आसानो।

देवन-हंदि देव प्राणियन हंदि प्राण॥०॥

युस युथ स्वरिय तस त्युथ छुख हावान

म्वख हाव म्यति श्री नाराणो।

प्रारनच फुरसत छम न रूजमच पान॥०॥

तप-जप भाव-भावनायि चय साधान

साधन तोरय च साधानो।

दर्शन चानि छुक अमृत वर्षान॥०॥

तप ऋष्य बडि अभिमान आय तोषान

आय सूर्य-सूर्य आय क्लेशानो।

न्याय नय अन्दनक वुन्द छिय मन्दान॥०॥

गारहन कूछ त हावहस पान पान

लबि रोजि पान लभि पऽन्य-पानो।

सौर्यस बंध-मुक्त सोरि सुख प्रावान॥०॥

रात-दोह परमानन्द छुय कांछान

परम-आनन्द युद छु पऽन्य-पानो।

वन्य-वन्य वनन्य वन्य चे दिवान॥०॥

भक्तयन चान्यन छु अस्तुत करान
स्वस्थित तिहंदि-म्वख आसानो।
बुजिरस हत-हत अथ-रोट काँछन॥०॥

—०—

गूर-गूर करयो गोवर्धन लालो वे
आनन्दघन म्यानि कन्द बरयो थालो वे॥
हंसो सोऽहं ॐ कन्द नन्दलालो वे
पम फोलि ॐ सऽत्य हम गलि सोखालो वे॥
शम-दम अन्दरिमि ॐ चियि करु मालो वे
दीप अद प्रजलिय अथि पुर मालो वे॥
धर्मुक सोऽथ गछि कर्म खेति सम्भालो वे
ज्ञानि नो सांपनिय हानि कडिय निहालो वे॥
मन चिय बुतराच पवनुक द्यू आलो वे
यछि हंज दांद-जूर्य पछि हुन्द अलफालो वे॥
गुरु-शब्द ब्योल वव कव गोख मतवालो वे
सोय कल जल सऽत्य सुरनावुन थालो वे॥
भखच हंजि न्यन्दि वस सूर्य प्रचण्ड चालो वे
रावचि फेरुस कहवचि सौन खालो वे॥
ह्यलि येलि नेरिय त्यलि मेलिय गूपालो वे
बालगोपालस नऽल्य मोखत तय मालो वे॥
सुफल सांपनिय श्रुफल पुर मालो वे
आकार हेरि खस निराकार हीमालो वे॥

वैराग्य द्राति लोन होस्त गण्ड मसवालो वे
काम क्रोध लोभ मोह मद मनकलि ज़ालो वे॥

लावि लावि सोम्बरिथ सन्तोष रज्जि खालो वे
गुनि लद लोलऽच निर्गुण धियि सालो वे॥

दास ब्यहनाव निर्वास च़ठ ज़ालो वे।
प्रभवास मेलिय ज़ानुक च़ोंग ज़ालो वे॥

यछि पछि मुनिथ अर्घ बरतन थालो वे
पूजि लाग ईश्वरस मनि पम्पोश मालो वे॥

मन किस सोदरस लाग डूगल ज़ालो वे
तव मन्ज लबहन लाल मोलुल लालो वे॥

योग शक्त प्रावख परमानन्द लालो वे
निष्कल अरनिय चावनय शष्कालो वे॥

गूर-गूर करयो गोवर्धन लालो वे
आनन्द घन म्यानि कन्द भरयो थालो वे॥

—०—

बोज़ि बोज़ि जसदाय फरियाद सोन
चूर हय छु नन्दलाल चोनुये॥

यि छु दोऽध वछिनय यल त्रावान
गऽवन छु असि दोऽध चावनावान
पास चोन असि नत बन्द करहोन॥०॥

योर छिस अस्य कूत भय हावान
ओर हय छु ज़ोर असुनाह त्रावान

ति वुछिथ अस्य दपान खोनि ललवोन॥०॥

चूर करनस मंज छुय वोस्ताद
बड्य-बड्य तदबीर छि अमिसय याद
यिम छल नय ज्ञानि प्रानि खोत प्रोन॥०॥

थऽज त दोऽथ असि केहं छुन जरवान
कति किज छु यिवान छिस न डेशान
छु ख्यवान चूरि-चूरि पान वुछितोन॥०॥

ख्ययि हे पानस ति गयोव जान
वान्दरन त पन्जिनय अथि छु ख्यावान
चऽड्य कऽत्य फुटरान सऽत्य ह्यथ दोन॥०॥

कुनि यलि अथि छुस न केहं यिवान
घरवालयन सऽत्य हर छु करान
छुख वनान क्याह तुहुन्द सोरुय छु म्योन॥०॥

सान्यन बालकन छु कडान कल
सऽत्य निथ ह्यछिनावान छुख छल
तिम ति गयि खोगर पाय क्याह सोन॥०॥

पोख्त छस यि खबर बोज्ज सोनुय
कथ बानस मन्ज क्याह सना छुय
सथ बोज्ज प्रथ जायि छुय वातवोन॥०॥

शिखरिस यलि छुस न अथ वातान
गूर्य बालकन तलऽ छुय थावान
जऽद्य करान बानन कति डेशोन॥०॥

अनिघटि मंजु अस्य चीज्ज थावान
आश्चर छु तोतनस छुय वातान
लाल त्र्यटि नऽल्य छिसना प्रजल्वोन॥०॥

युथ न वोऽज्ज लाल त्र्यटि नाल कडहस
ज्ज्ञानख तमिय गाशि लूख वुछिनस
छुय शरीर अमिसुन्द ति गाश अनवोन॥०॥

नीलकण्ठ! लीला आश्चर्यमय
भगवान सँन्जय कँचाह छय
आदि अन्त तमिसुन्द कांसि नो जोऽन॥०॥

—०—

जगि अन्धकार चानि यिन चोलये
लाल अलरय रोनि मन्जुलये॥

दीन-पाल सीनन सऽत्य थावथ
मधुसूदन दोऽध हो चावथ
हो हो करय चत गोल गोलये॥०॥

जसदायि हन्दि नेत्र प्रकाशे
रोज्ज भोज्जनावतम शूर्य बाशे
दुःख त गम म्यज्जि सोरुय चोलये॥०॥

आनन्द-कन्द म्यानि नन्दलालो
मन मोहन दीन-दयालो
मार्यमन्दि अज्ज वोन्द म्योन फोलये॥०॥

मुश्क अम्बर तन हो नावय

श्याम-जामन जरियि हो छावय
नाऽल्य त्रावय हार मोलुलये॥०॥

ज्यवि सऽत्य क्षण-क्षण वुश्चारथ
ख्वोनि ललवथ मन हो धारथ
चानि ध्यान-जल मनि-मल म्य छोलये॥०॥

मछ-गोडनय गंजिमय रोजे
कन म्य शुद्ध गयि तमि छुनि-छुजे
मन म्य आनन्दस सऽत्य रोलये॥०॥

कमिताज तपके बल जाहम
भूमिकायि भोर कासऽनि आहम
बडहम कर चॅय अड कोऽलये॥०॥

नेत्र-कमल वुठचे रऽचफल्य जन
मन-मोहन क्याह रऽत्य शूभन
छिय हषीकेश! केश रम्भोलये॥०॥

मथि शूभान ट्योक छुय चन्दनुक
मथ म्य गछान जुव-जान वन्दनुक
इयक फोलवुन च्य वार प्रजल्वनुये॥०॥

मन छु निवान चूरि नस्त-खञ्जर
बुम-वन्जर क्याह छुय सोन्दर
लोर्ले यमॅनय करय कजुलये॥०॥

ही निर्द्वन्द! मोक्तफऽल्य छिय दन्द
मछनय छिय प्रयिवज मछ-बन्द
मुख च्ये कमलस हू बिल्कुलये॥०॥

क्याह छे होंगज चाऽनी मनोहर

मनि प्रयवुन होंजि हुन्द सन्यर

बूल्य-बोलान ज्ञन त बुलबुलये॥०॥

शूभान क्याह छुय चोनुय होटये

प्रजलवँज च्य नाऽल्य लालें त्रटिये

तमि गाशि गोऽट सिरियि मण्डुलये॥०॥

लोलें पुछे बडि अनुरागय

स्वऽन कनदूर कननय लागय

लोल-बोलऽक्य जरय मोक्तफोलये॥०॥

त्र्यन भुवनन हुन्दें चय राजे

नादें-ब्यन्दें म्यानि आदन बाजे

बेमार मन म्य यिनें चानि बोलये॥०॥

अतलास तें किमखाव वथँरावय

तोसँ-पोम्बँर प्यठ हो त्रावय

शूभान छुस पाऽटय अंजुलये॥०॥

पूतनायि दोध द्युतनय शामय

प्राण कडिथस च्यव अकि दामय

मूक्ष प्रावुन पाप तस गोलये॥०॥

ज्यवुन चोन बूज कम्सासुरनँय

थरें च़ाऽनिनस मरनँकि ज़रँनँय

मोटुस तोषुन होशि सुय डोलये॥०॥

अथें कमलव तें ब्ययि पादि कमलव

छुख च़ पकान आनन्द म्य वोपेंछव

कुनि स्योद छुख पकान कुनि होलये॥०॥

च तिथय पाऽद्य बालकृष्ण यिखना
नीलकण्ठस दर्शन दिखना
पायि थदि! सुति मायि चानि वोलये
लाल अँलँरय रोनि मन्जुलये॥

—०—

गूकल तँ बिन्दैराबन हय लो लो
वलय वेस्य समिवे गिन्दव लो लो॥०॥

श्याम सुन्दुर द्राव खेलनि रास
पतँ पतँ द्रायस शुराहवय सास
मुलीं शब्दस मच लो लो॥०॥

चोकव मन्ज द्रायि चूल त्रॉविथ
ग्रोकँमुत बत अडँछोव थॉवित
अजि द्रायि न्यन्दरे हच लो लो॥०॥

गूपियन सॉमियन हुन्द न परवाय
रासस मन्ज युथ न कांह रटि जाय
लारान मज वन खच लो लो॥०॥

कैह तिम आसँ मंज सीवाये
गरँनय मंज प्रयम तँ माये
मुलीं नादँ तिम नच लो लो॥०॥

कैह आसँ लायान कृष्णस नाद
हा कृष्ण! असि वज करतँ प्रसाद
अख अकिस त्रावान प्रच लो लो॥०॥

कामें दीनें सार्यय लारेयि वन

गूर्य द्रायि छाण्डेनि अडरातन
अन्ध कृष्णस त्रेशिहच लो लो॥०॥

वनचे कुकिलें तें तोतें समिथयें

अन्ध अन्ध रासस मन्त्र भ्रमिथयें
मुचुरिथ अछें लोलें हच लोलें हच लो लो॥०॥

राधायि ज्यवि प्यठ कृष्ण कृष्णय

गोपियि वखनान गोविन्दय
जयगोविन्द जयगोपाल करच लो लो॥०॥

भाग्यवान क्याह तिम गोपियि जान

रास आसें खेलान कृष्णस सान
श्रीकृष्ण प्रयमस मच लो लो॥

कृष्ण 'कमल' फोलें हत्सरसयें

गोपियि हंसनियि आश्वरसयें
मुलीं आह्लाद हच लो लो॥०॥

०

कौशल्याये हिन्दे गोबरो करयो गूर-गूरय
परयो रामरामय कर भजन रामरामय।

कसू गोहम म्ये त्राविथ, कसू ह्यक हाल भविथ
कुस बा अन्यी वन्य मनन'विथ। कर भजन-----

म्ये कमू पाप असिय तिम ति न कौंसि कौंसिय
च गोहम वन व'सिय। कर भजन-----

अच्छयन हुन्द गाश कोत गोम, सिर्य प्रेकाश कोत
गोम

कंह ति छम न वन्य आश कोत गोम। कर
भजन-----

न्यबरै अचू अंदर, तत्य छुई शिवमंदर
तत्य अंदर छुई श्याम सुन्दर। कर भजन-----

०

सुन्दरो सोन संदल गरय, हो हो करय श्याम सुन्दरे।
गोपिय प्रारान गोकुलै, वेरि चान्चि फेरान निर्मलै
खेलव त मेलव अमेरे। हो-हो-----

जसोधा वुछतो न भाग्यवान, टोठेयि यस यिम ज्ञ संतान
बलभद्र त ब्ययि कृष्ण गन्दरै। हो-हो-----

अंतरे पलंग प'रावयो, पा'टिय करछ वथरावयो
अंजलि दशन मोक्त हो जरै। हो-हो-----

गलि गलि दोध बो चावथों, फलि फलि नाबद
ख्यावथो

बादाम कंद चंद हो भरै। हो-हो-----

आसान छुख कैलास कोह, भासान छुख यति रात
दोह

हरमुख क्यय गंगा धरै। हो-हो-----

ना'लि माल खा'लि कनवा'जी, रंग रंग जाम
जरका'री

शीतल स्वभाव पीतांबरै। हो-हो-----

०

फुल. वनि सोन्त. छुय म्योन सालो।

लालो अज वलो माल्युन म्योन॥

आरवल आर क'च गयि. कमि हालो

चालि चालि ओश दारि हारान छस

यच काल गव वुज प्रार कूत कालो। लालो०

यमबरजल लजमच भुवबरनि जालो

प्याल ह्यथ मसवल प्रारान छस

दूरिरुक दाग दिलस ह्यथ छुय गुलालो। लालो०

माय चानि सुलि विलि फोजि ही मालो

ल'यि लोस इ.य कर दिय दर्शुन

द्रिय चानि छम बुज यूत नो व. चालो। लालो०

रोश रोश करहै पोषन मालो

रोशि मति गोय ना गोशन म्योन

रोशि मा पोष.नूल दोह गछि वोबालो। लालो०

आदनुक याद पाव बाद. मो डालो

नाद लोय कुकिलव गोविन्द गू

आदन बाजि म्यानि त्राव शुरि खयालो। लालो०

बा'लि वन्त. इयना ना'लि छस मालो

वा'ल छिस कनन्य ग्राय मारान

का'लि मा रा.वव कस क्या मलालो। लालो०

साकया प्याल चाव माला मालो
 युथ न. स. बाकी रोजी ग्राव
 मस चथ रस. रस. बन. मुतवालो। लालो०
 सास मंज ख़ास सुय रटहोन नालो
 सास मलि सन्यास मेलि गोपालो
 भासकर सास छुय ना'ली नालो। लालो०

०

हिन्दी भजन

(झिंझोरी-दादरा)

मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई।
 दूसरो न कोई, साधो सकल लोक जोई॥
 जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोई।
 शंख चक्र गदा पद्म कंठ माल होई॥
 तात मात भ्रात बंधु आपनो न कोई।
 छाँड़ दई कुल की कान, का करिहे कोई॥
 संतन ढिग बैठ बैठ लोकलाज खोई।
 अब तो बात फैल गई, जानत सब कोई॥
 अँसुवन जल सींच सींच प्रेम बेल बोई।
 'मीरा' प्रभु लगन लगी, होनी हो सो होई॥

०

म्हाने चाकर राखो जी।
 गिरिधारी लला! चाकर राखो जी॥०॥

चाकर रहसूँ बाग लगासूँ, नित उठ दरसन पासूँ।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, गोविन्द लीला गासूँ॥

चाकरी में दरसन पाऊँ, सुमिरन पाऊ खरची।
भाव-भगति जागीरी पाऊँ, तीनों बाता सरसी॥

मोर-मुकुट पीताम्बर सोहे, गल बैजंती माला।
वृन्दावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला॥

ऊँचे ऊँचे महल बनाऊँ, बिच बिच राखूँ बारी।
सांवरिया के दरसन पाऊँ, पहिर कुसुम्बी सारी॥

जोगी आया जोग करनकू, तप करने सन्यासी।
हरी-भजनकू साधू आये, वृन्दावन के वासी॥

मीरा के प्रभु गहिर गंभीरा, हृदय रहो जो धीरा।
आधी रात प्रभु दरसन दीन्हों, जमुनाजी के तीरा॥



(भैरवी-तीनताल)

हमारे प्रभु अवगुन चित न धरो।
समदरसी है नाम तिहारो, सोई पार करो॥

इक नदियाँ इक नार कहावत, मैलो नीर भरो।
जब मिलिकै दोउ एक बरन भए, सुरसरि नाम परो॥

इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परो।
पारस गुण अवगुण नहिं चितवत, कंचन करत खरो॥

सो दुबिधा पारस नहिं जानत, कंचन करत खरो
एक जीव इक ब्रह्म कहावत, 'सूर' स्याम झगरो॥

यम माया भ्रम-जाल कहावत सूरदास जगरो।
अबकी बेर मोहि पार उतारो, नहिं प्रन जात टरो॥

०

(काफी-तीनताल)

तुम मेरी राखो लाज हरी।
तुम जानत सब अन्तरजामी
करनी कछु न करी॥

औगुन मोते बिसरत नाहीं
पल छिन घरी घरी।
सब प्रपंच की पोट बाँधिकै करि
अपने सीस धरी॥

दारा तन धन मोह लिये हैं
सुधि-बुधि सब बिसरी।
'सूर' पतित को बेग उधारो,
अब मेरी नाव भरी॥

०

(आसावरी-तीनताल)

प्यारे, दरसन दीजो आय
तुम बिन रह्यो न जाय॥

जल बिन कमल, चन्द बिन रजनी
ऐसे तुम देख्याँ बिन सजनी
आकुल व्याकुल फिरूँ रैन दिन
बिरह कलेजो खाय। - प्यारे०

दिवस न भूख, नींद नहीं रैना
मुख सूँ कथत न आवै बैना
कहा कहूँ कछु कहत न आवै
मिलकर तपत बुझाय॥ - प्यारे०

यूँ तरसावो अन्तरजामी
आय मिलो किरपा कर स्वामी
'मीरा' दासी जनम-जनम की
पड़ी तुम्हारे पाय॥ - प्यारे०

०

(भैरवी-तीनताल)

जोगी मत जा, मत जा, मत जा
पाँय परूँ मैं चेरी तेरी हूँ॥

प्रेम भगति को पैँडो ही न्यारो
हमकूँ गैल बता जा॥०॥

अगर चन्दन की चिता रचाऊँ
अपने हाथ जला जा॥०॥

जल बल भई भसम की ढेरी
अपने अंग लगा जा॥०॥

‘मीरा’ कहे प्रभु गिरिधर नागर
जोत में जोत मिला जा॥०॥

—०—

इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकले
गोविंद नाम लेकर, फिर प्राण तन से निकले।

श्री गंगा जी का तट हो, या जमुना जी का बट हो
मेरा साँवरा निकट हो। फिर प्राण तन-----

श्री बिन्दरबन का स्थल हो मेरे मुख में तुलसी दल
हो

विष्णु चरण का जल हो। फिर प्राण तन-----

साँवरा सम्मुख खड़ा हो, बंशी का स्वर भरा
तिरछा चरण धरा हो। फिर प्राण तन-----

सिर सोहना मुकुट हो, मुखड़े पे काली लट हो
यही ध्यान मेरे घट हो। फिर प्राण तन-----

निकले जो प्राण मुख से, तेरा नाम बोलूँ सुख से
बच जाऊँ घोर दुख से। फिर प्राण तन-----

मुझ दास ही है अर्जी खुदगर्ज की है गर्जी
आगे तुम्हारी मर्जी। फिर प्राण तन-----

—०—

ॐ

श्री श्री रामकृष्ण संगीत

०

आरात्रिक भजन

खण्डन-भवबन्धन, जगवन्दन, वन्दि तोमाय।
निरंजन नररूपधर, निर्गुण गुणमय॥

मोचन-अघदूषण, जगभूषण, चिद्धनकाय।
ज्ञानांजन-विमलनयन, वीक्षणे मोह जाय॥

भास्वर भावसागर चिर उन्मद प्रेमपाथार।
भक्तार्जन-युगलचरण तारण भवपार॥

जृम्भित युग-ईश्वर, जगदीश्वर, योगसहाय।
निरोधन, समाहितमन निरखि तव कृपाय॥

भंजन दुःखगंजन, करुणाधन, कर्मकठोर।
प्राणार्पाण जगततारण कृन्तन कलिडोर॥

वंचन काम-कांचन अतिनिन्दित इन्द्रियराग।
त्यागीश्वर, हे नरवर, देह पदे अनुराग॥

निर्भय, गतसंशय दृढनिश्चयमानसवान।
निष्कारण भक्तशरण, त्यजि जातिकुलमान॥

सम्पद तव श्रीपद, भवगोष्पद-वारि यथाय।
प्रेमार्पण, समदरशन, जगजन-दुःख जाय॥

नमो नमो प्रभु, वाक्यमनातीत, मनोवचनैकाधार।

ज्योतिर ज्योति, उजल हृदिकन्दर तुमि तम-भंजन हार॥

धे धे धे लंग रंग भंग बाजे अंग संग मृदंग।

गाइछे छंद भक्तवृन्द आरती तोमार॥

जय जय आरति तोमार।

हर हर आरति तोमार।

शिव शिव आरति तोमार।

खण्डन भव-बन्धन, जग-वन्दन, वन्दि तोमाय।

॥ जय श्री गुरु महाराज जी की जय ॥

—०—

श्री रामकृष्ण स्तोत्रम्

ॐ ह्रीं ऋतं त्वमचलो गुणजित् गुणेड्यः

नक्तन्दिवं सकरुणं तव पादपद्मम्।

मोहंकषं बहुकृतं न भजे यतोऽहम्

तस्मात् त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो॥

भक्तिर्भगश्च भजनं भवभेदकारि

गच्छन्त्यलं सुविपुलं गमनाय तत्त्वम्।

वक्त्रोद्धृतन्तु हृदि मे न च भाति किञ्चित्

तस्मात् त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो॥

तेजस्तरन्ति तरसा त्वयि तृप्ततृष्णाः

रागे कृते ऋतपथे त्वयि रामकृष्णो।

मर्त्यामृतं तव पदं मरणोर्मिनाशम्

तस्मात् त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो॥

कृत्यं करोति कलुषं कुहकान्तकारि
ष्णान्तं शिवं सुविमलं तव नाम नाथ।
यस्मात् अहं त्वशरणो जगदेकगम्य
तस्मात् त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो॥

ॐ स्थापकाय च धर्मस्य सर्वधर्मस्वरूपिणे।
अवतारवरिष्ठाय रामकृष्णाय ते नमः॥

ॐ नमः श्री-भगवते रामकृष्णाय नमो नमः।
ॐ नमः श्री-भगवते रामकृष्णाय नमो नमः।
ॐ नमः श्री-भगवते रामकृष्णाय नमो नमः।

०

॥ श्री नारायणी स्तोत्रम् ॥

सर्व-मंगल-मांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥

सृष्टि-स्थिति-विनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते॥

शरणागत-दीनार्त-परित्राण-परायणे।
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥

जय नारायणि नमोऽस्तु ते।

जय नारायणि नमोऽस्तु ते॥

जय नारायणि नमोऽस्तु ते॥॥

जय श्री गुरु महाराज जी की जय!

जय महामायी जी की जय!

जय स्वामी जी महाराज जी की जय!

जय श्री वितस्ता माई जी की जय!

—०—

॥ श्री रामकृष्ण - स्तोत्रम् ॥

आचण्डालाप्रतिहतरयो यस्य प्रेमप्रवाहः
लोकातीतोऽप्यहह न जहौ लोककल्याणमार्गम्।
त्रैलोक्येऽप्यप्रतिममहिमा जानकीप्राणबन्धः
भक्त्या ज्ञानं वृतवरवपुः सीतया यो हि रामः॥
स्तब्धीकृत्य प्रलयकलितं वाहवोत्थं महान्तं
हित्वा रात्रिं प्रकृतिसहजामन्धतामिस्रमिश्राम्।
गीतं शान्तं मधुरमपि यः सिंहनादं जगर्ज
सोऽयं जातः प्रथितपुरुषो रामकृष्णस्त्विदानीम्॥

नरदेव देव जय जय नरदेव
शक्तिसमुद्रसमुत्थतरंगं
दर्शितप्रेमविजृम्भितरंगम्।
संशयराक्षसनाशमहास्त्रं
यामि गुरुं शरणं भववैद्यम्॥

नरदेव देव जय जय नरदेव
अद्वयतत्त्वसमाहितचित्तं
प्रोज्ज्वलभक्तिपटावृतवृत्तम्
कर्मकलेवरमभुतचेष्टं
यामि गुरुं शरणं भववैद्यम्॥

नरदेव देव जय जय नरदेव

—०—

॥ श्रीरामकृष्णप्रणामः ॥

निरञ्जनं नित्यमनन्तरूपं
 भक्तानुकम्पाधृतविग्रहं वै।
 ईशावतारं परमेशमीड्यम्
 तं रामकृष्णं शिरसा नमामः॥

—०—

॥ श्री-श्रीरामकृष्णस्तवराजः॥

ॐ कारवेद्यः पुरुषः पुराणो
 बुद्धेश्व साक्षी निखिलस्य जन्तोः।
 यो वेत्ति सर्वं न च यस्य वेत्ता
 परात्मरूपो भुवि रामकृष्णः॥१॥

न वेदगम्यो न च योगगम्यो
 ध्यानैर्न जापैर्न तपोभिरुग्रैः।
 ज्ञेयः कदापीह ततोऽवतीर्णो
 दयानिधे त्वं भुवि रामकृष्णः॥२॥

मोक्षस्वरूपं तव धाम नित्यं
 यथा तदाप्नोति विशुद्धचित्तः।
 तथोपदेष्टाऽखिलतवत्ता
 त्वं विश्वधाता भुवि रामकृष्णः॥३॥

भक्तेस्तथा शुद्धज्ञानस्य मार्गो
 प्रदर्शितौ द्वौ भवमुक्तिहेतु।
 तयोर्गतानां ध्रुवनायकोऽसि
 त्वं मोक्षसेतुर्भुवि रामकृष्णः॥४॥

गतिस्त्वमेका जगतां जडानां
पुरा विसृष्टेश्चिदखण्डरूपः।
तद्वल्लये स्या अधुनासि तद्वत्
त्वमादिदेवो भुवि रामकृष्णः॥५॥

वर्णाश्रमाचारविहीनशान्ताः
संन्यासिनो ज्ञानविधूतचित्ताः।
ध्यायन्ति यं नित्यमभेद दृष्ट्या
स एव हि त्वं भुवि रामकृष्णः॥६॥

तेजोमयं दर्शयसि स्वरूपं
कोषान्तरस्थं परमार्थतत्त्वम्।
संस्पर्शमात्रेण नृणां समाधिं
विधाय सद्यो भुवि रामकृष्णः॥७॥

रागादिशून्यां तव सौम्यमूर्तिं
दृष्ट्वा पुनश्चात्र न जन्मभाजः।
स्थाने यदादाय विशुद्धसत्त्व-
मिहावतीर्णो भुवि रामकृष्णः॥८॥

महाविचित्रं महदादिकार्यं
लब्ध्वाऽप्यधिष्ठानमनाद्यनन्तम्।
करोति नित्या प्रकृतिस्तवाद्या
तद् ब्रह्म सच्चिद् भुवि रामकृष्णः॥९॥

कृशाणुवत् तापविदग्धचित्ताः
संसारिणः शान्तिनिकेतनं त्वाम्।
संप्राप्य शान्ता हि भवन्ति तेषां
त्वं शान्तिदाता भुवि रामकृष्णः॥१०॥

षडंगयोगो न यतः सुसाध्यो
ज्ञानाधिकारी सुलभो न यस्मात्।
गरीयसी भक्तिरतः कलौ स्यात्
तद् ज्ञापकस्त्वं भुवि रामकृष्णः॥११॥

नाकादिलोकं सुखदञ्च दिव्यं
सुरम्यमैश्वर्यमहं न याचे।
हृदासने त्वं कृपया सदा वै
वसेति याचे भुवि रामकृष्णः॥१२॥

यं ब्रह्म विष्णु गिरिशश्च देवाः
ध्यायन्ति गायन्ति नमन्ति नित्यम्।
तैः प्रार्थितस्तस्य परावतारो
द्विबाहुधारी भुवि रामकृष्णः॥१३॥

वन्दे जगद्बीजमखण्डमेकं
वन्दे सुरैः सेवितपादपीठम्।
वन्दे भवेशं भवरोगवैद्यं
तमेव वन्दे भुवि रामकृष्णम्॥१४॥

रामकृष्णं चिदानन्दं यः स्तौति भक्तिमान् सदा।
तस्य चित्तं भवेत् शुद्धं तत्त्वज्ञानं स्वयं ततः॥१५॥

—०—

॥ श्री-श्री-रामकृष्णाष्टकम् ॥

विश्वस्य धाता पुरुषस्त्वमाद्यो-
ऽव्यक्तेन रूपेण ततं त्वयेदम्।
हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम्॥१॥

त्व पासि विश्वं सृजसि त्वमेव
 त्वमादिदेवो विनिहंसि सर्वम्।
 हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
 कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम्॥२॥

मायां समाश्रित्य करोषि लीलां
 भक्तान् समुद्धर्तमनन्तमूर्तिः।
 हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
 कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम्॥३॥

विधृत्य रूपं नरवत्त्वया वै
 विज्ञापितो धर्म इहाति गुह्यः।
 हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
 कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम्॥४॥

तपोऽथ ते त्यागमदृष्टपूर्वं
 दृष्ट्वा नमस्यन्ति कथं न विज्ञाः।
 हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
 कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम्॥५॥

श्रुत्वात्र ते नाम भवन्ति भक्ताः
 दृष्ट्वा वयं त्वां न तु भक्तियुक्ताः।
 हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
 कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम्॥६॥

सत्यं विभुं शान्तमनादिरूपं
 प्रसादये त्वामजमन्तशून्यम्।
 हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
 कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम्॥७॥

जानामि तत्त्वं न हि दैशिकेन्द्र
 किन्ते स्वरूपं किमु भावजातम्।
 हे रामकृष्ण त्वयि भक्तिहीने
 कृपाकटाक्षं कुरु देव नित्यम्॥८॥

—०—

॥ श्रीरामकृष्णस्तोत्रदशकम् ॥

ब्रह्म-रूपमादि-मध्य-शेष-सर्व-भासकं
 भाव-षट्क-हीन-रूप-नित्य-सत्यमद्वयम्।
 वाङ्मनोऽति-गोचरञ्च नेति-नेति-भावितं
 तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम्॥१॥

आदितेय-भी-हरं सुरारि-दैत्य-नाशकं
 साधु-शिष्ट-कामदं मही-सुभार-हारकम्।
 स्वात्म-रूप-तत्त्वकं युगे युगे च दर्शितं
 तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम्॥२॥

सर्व-भूत-सर्ग-कर्म-सूत्र-बन्ध-कारणं
 ज्ञान-कर्म-पाप-पुण्य-तारतम्य-साधनम्।
 बुद्धि-वास-साक्षि-रूप-सर्व-कर्म-भासनं
 तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम्॥३॥

सर्व-जीव-पाप-नाश-कारणं भवेश्वरं
 स्वीकृतञ्च गर्भ-वास-देह-दानमीदृशम्।
 यापितं स्व-लीलया च येन दिव्य-जीवनं
 तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम्॥४॥

तुल्य-लोष्ट-काञ्चनञ्च हेय-नेय-धी-गतं

स्त्रीषु नित्य-मातृरूप-शक्ति-भाव-भावुकम्।
ज्ञान-भक्ति-भुक्ति-मुक्ति-शुद्ध-बुद्धि-दायकं
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम्॥५॥

सर्व-धर्म-गम्य-मूल-सत्य-तत्त्व-देशकं
सिद्ध-सर्व-सम्प्रदाय-सम्प्रदाय वर्जितम्।
सर्व-शास्त्र-मर्म-दर्शि-सर्वविनिरक्षरं
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम्॥६॥

चारु-दर्श-कालिका-सुगीत-चारु-गायकं
कीर्तनेषु मत्तवच्च नित्य-भावविह्वलम्।
सूपदेश-दायकं हि शोक-ताप-वारकं
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम्॥७॥

पाद-पद्म-तत्त्व-बोध-शान्ति-सौख्य-दायकं
सक्त-चित्त-भक्त-सूनु-नित्य-वित्त-वर्धकम्।
दग्धि-दर्प-दारणान्तु-निर्भयज्जगद्गुरुं
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम्॥८॥

पञ्च-वर्ष-बाल-भाव-युक्त-हंस-रूपिणं
सर्व-लोक-रञ्जनं भवाब्धि-संग-भञ्जनम्।
शान्ति-सौख्य-सद्म-जीव-जन्मभीति नाशनं
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम्॥९॥

धर्म-हान-हारकं त्वधर्म-कर्म-वारकं
लोक-धर्म-चारणञ्च सर्व-धर्म-कोविदम्।
त्यागि-गेहि-सेव्य-नित्य-पावनाग्नि-पंकजं
तं नमामि देव-देव-रामकृष्णमीश्वरम्॥१०॥

स्तोत्र-शून्य-सोमकं सदीश भाव-व्यञ्जकं
 नित्य-पाठकस्य वै विपत्ति-पुञ्ज-नाशकम्।
 स्यात्कदापि जाप-याग-योग-भोग-सौलभं
 दुर्लभन्तु रामकृष्ण-राग-भक्ति-भावनम्॥११॥

इति श्रीविरजानन्द-रचितं भक्ति-साधकम्।
 स्तव-सारं समाप्तं वै श्रीरामकृष्ण-तूणकम्॥१२॥

—०—

श्रीरामकृष्णध्यानम्

हृदयकमलमध्ये राजितं निर्विकल्पं
 सदसदखिलभेदातीतमेकस्वरूपम्।
 प्रकृतिविकृतिशून्यं नित्यमानन्दमूर्तिं
 विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः॥१॥

निरुपममतिसूक्ष्मं निष्प्रपञ्चं निरीहं
 गगनसदृशमीशं सर्वभूताधिवासम्।
 त्रिगुणरहितसच्चिद्ब्रह्मरूपं वरेण्यं
 विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः॥२॥

वितरितुमवतीर्णं ज्ञानभक्तिप्रशांतीः
 प्रणयगलितचित्तं जीवदुःखासहिष्णुम्।
 धृतसहजसमार्थिं चिन्मयं कोमलांग
 विमलपरमहंसं रामकृष्णं भजामः॥३॥

—०—

श्रीरामकृष्णषट्कम्

विशुद्धविज्ञानमगाधसौख्यं,
विश्वस्य बीजं करुणापयोधिः।
अनाद्यनंतं प्रकृतेः परस्तात्,
तत्तत्त्वमेकं भुवि रामकृष्णः॥१॥

न नेति भीत्या श्रुतयो वदन्ति,
वदन्ति साक्षात् न च यं कदाचित्।
चिदेकरूपः शिव ईश्वराणां,
महेश्वरोऽसौ भुवि रामकृष्णः॥२॥

यं नित्यमानन्दमनंतमेकं,
शिवेति नाम्ना श्रुतयो गृणन्ति।
तस्यावतारो नररूपधारी,
कृपासुधाब्धिर्भुवि रामकृष्णः॥३॥

विज्ञानपीयूषनिमग्नमूर्तिः,
पस्पर्शं यान् यान् दयया करेण।
ते कामिनीकांचनरिक्तचित्ताः,
सद्यो बभूवुर्भुवि रामकृष्णः॥४॥

प्रेमाब्धिगंभीरतरंगभगैरांदोलितो,
यो भगवद्विलीनः भक्तिर्विशुद्धा।
स्वयमाविरासीत् पुंविग्रहोऽहो,
भुवि रामकृष्णः॥५॥

तमद्भुतं कंचिदचित्यशक्तिं,
वन्दे प्रशान्तं परिपूर्णबोधम्।

ज्ञानस्य भक्तेश्च विशुद्धमूर्ति,
द्विमूर्तिमेकं भुवि रामकृष्णः॥६॥

—०—

श्री-रामकृष्ण-शरणं रामकृष्ण-शरणम्
रामकृष्ण-शरणं शरण्ये।

कृपा हि केवलं कृपा हि केवलम्
कृपा हि केवलं शरण्ये।

शरणागतहं शरणागतहम्,
शरणागतहं शरण्ये।

नमः श्री-गुरुवे नमः श्री-गुरुवे
नमः श्री-गुरुवे नमो नमः।

रामकृष्ण-शरणं रामकृष्ण-शरणम्
रामकृष्ण-शरणं शरण्ये।

—०—

श्री गुरुस्तवाष्टक

(गौड़सारंग - तीनताल)

भव-सागर-तारण-कारण हे,
रविनन्दन-बन्धन-खण्डन हे।
शरणागत किंकर भीत मने,
गुरुदेव दया करो दीनजने॥१॥

हृदिकन्दर-तामस-भास्कर हे,
तुमि विष्णु-प्रजापति-शंकर हे।
परब्रह्म-परात्पर वेद भणे,
गुरुदेव दया करो दीनजने॥२॥

मन-वारण-शासन-अंकुश हे,
नर-त्राणतरे हरि चाक्षुष हे।
गुण-गान-परायण देव गणे,
गुरुदेव दया करो दीनजने॥३॥

कुल-कुण्डलिनी-घुम-भञ्जक हे,
हृदि-ग्रन्थि-विदारण-कारक हे।
मम मानस चंचल रात्रि-दिने,
गुरुदेव दया करो दीनजने॥४॥

रिपूसूदन मंगल-नायक हे,
सुखशान्ति वराभय-दायक हे।
त्रय-ताप हरे तव नाम-गुणे,
गुरुदेव दया करो दीनजने॥५॥

अभिमान-प्रभाव-विमर्दक हे,
गति-हीनजने तुमि रक्षक हे।
चित शंकित वंचित भक्ति-धने,
गुरुदेव दया करो दीनजने॥६॥

तव नाम सदा शुभ-साधक हे,
पतिताधम-मानव-पावक हे।
महिमा तव गोचर शुद्ध मने,
गुरुदेव दया करो दीनजने॥७॥

जय सद्गुरु ईश्वर-प्रापक हे,
भव-रोग-विकार विनाशक हे।
मन जेन रहे तव श्रीचरणे,
गुरुदेव दया करो दीनजने॥८॥

—०—

श्रीरामकृष्ण-जयाष्टकम्

(गौड़सारंग - कहरवा)

भव-भय-भंजन पुरुष निरंजन, रतिपति-गंजन-कारी।
यति-जन-रंजन-मनोमद खण्डन, जय भवबन्धन-हारी॥
जय जनपालक सुरदलनायक, जय जय विश्वविधाता।
चिर-शुभसाधक मतिमल-पावक, जय चितसंशय त्राता॥
सुरनरवन्दन विजय विबन्धन, चितमनम-नन्दनकारी।
रिपुचय-मन्थन जय भवतारण, स्थल-जल-भूधर-धारी॥
शमदम-मण्डन अभय-निकेतन, जय जय मंगल-दाता।
जय सुखसागर नटवर, नागर, जय शरणागत-त्राता॥
भ्रमतमभास्कर जय परमेश्वर, सुखकर-सुन्दर-भाषी।
अचल सनातन जय भवपावन, जय विजयी अविनाशी॥
भक्त-विमोहन वरतनु-धारण, जय हरिकीर्तन-भोला।
गद-गद-भाषण चितमन-तोषण, ढल-ढल-नर्तन लीला॥
मति-गति-वर्धन कलिबल-मर्दन, विषय-विराग-प्रसारी।
जड-चित-चेतक भवजल-भेलक, जय नरमानस चारी॥

जय पुरुषोत्तम अनुपम-संयम, जय जय अन्तर्यामी।
खरतर-साधन नरदुःख-वारण, जय रामकृष्ण नमामि॥

— ० —

आयस ब लोल चाने, भगवान लोल चाने
रामकृष्णदीव म्याने।

आयस ब लोल चाने, भगवान लोल चाने
रामकृष्णदीव म्याने॥

पोषन व माल करान मालन ति लाल जरान
लालन छु म्वक्त हरान प्रारान मायि चाने
गजिसा ब म्वक्त छाने भगवान लोल चाने॥०॥

वाजिनस ब मायि चाने रोज्ञान च छायि छाये
बासान म्य जायि जाये छायन ति लोल ग्राये
रजवस ब छायि लाने भगवान लोल चाने॥०॥

सन्मुख च दिम म्य दर्शुन करतम म्य लोल वर्शुन
फोलिहे म्य लोल यावुन चानि अकि लोल ग्राये
लजिमच ब लोल लाने भगवान लोल चाने॥०॥

यलि यलि लोल पथर प्यव जायि जायि वोथ वोपद्रव
संकट तुल भख्यव अद द्राख च लीलाये
रूप चोन कुस ज्ञाने भगवान लोल चाने॥०॥

श्रीराम रूप दोरुथ कौशल्यायि ललनोवुख
लोलुक तचर च्य होवुथ लोल नार सीताये
सीता त क्याजि माने भगवान लोल चाने॥०॥

ओसुख च कृष्ण भगवान लोलुक बहार छावान

मथरायि गिन्दनावान राधा त गूर्यबाये
जलवान च्य अशि वाने भगवान लोल चाने॥०॥

रामकृष्ण रूप प्रोवुथ चन्द्रायि हाल बोवुथ
लोल बल च्य पान होवुथ शक्ति माजि शारदाये
द्वैत-भाव सु कति ज्ञाने भगवान लोल चाने॥०॥

चण्डी च पान दुर्गा सीता स्वरूप राधा
शारदायि रूप श्रद्धा सुय रूप छु कालिकाये
माजि रूप जगथ माने भगवान लोल चाने॥०॥

शक्ति स्वरूप पानय भक्ति स्वरूप पानय
मुक्ती दिवान पानय भख्यन च जायि जाये
मन छल ब लोल वाने भगवान लोल चाने॥०॥

ब्योन-ब्योन स्वरूप चऽनी वनि क्याह यि लोल वऽणी
चऽन्य रंग छि ना अजऽनी लोल रंग मायि छाये
लोल रंग न ज्ञांहे ति प्राणे भगवान लोल चाने॥०॥

ग्वड छुख च ग्रायि मारान पत छुख च छायि प्रारान
पोत छायि मायि तारान लोति लोति सानि राये
सूर गोम म्य अनज्ञाने भगवान लोल चाने॥०॥

तन मन त प्राण म्योनुय सामान छुय यि चोनुय
नत कुस कबील क्रोनुय गंडिथ छुय म्यानि काये
द्रायस कबील क्राने भगवान लोल चाने॥०॥

क्याह-गछि कम खजानस अथ लोलकिस मकानस
बति वातहा मुकामस स्यजि नजरि अकि ग्राये
अछ्य म्य गयम काने भगवान लोल चाने॥०॥

नरकस म्वकलावतम दर्शुन म्य पान हावतम
खोनि मंज पननि थावतम मरहा ब लोल चाने
गल ज्ञन ब शीन माने भगवान लोल चाने॥०॥

०

कृष्ण भगवान रामकृष्ण भगवान म्योन कोतू गव
ब कस त्रऽवनस गलि गलि लोल मस चावनऽवनस॥

लोल मस प्यालन लालन बर्यनम गलि गलि
चावनऽवनस॥

लोल खण्ड त नाबद थालन बर्यनम फलि फलि
ख्यावनऽवनस॥

ब लालन फलि फलि ख्यावनऽवनस लोल बोरेनम म्य
होल कोरेनम

श्रीरामकृष्ण रूप भगवान म्योन कोत गव
ब कस त्रऽवनसय गलि गलि०

यन गोम नीरिथ तन आम न फीरिथ वति प्यठ त्रऽविथ गोम
सुलि चीर्य नीरिथ वति वति फीरिथ वथ रावरऽविथ गोम

म्य बाले वथ रावरऽविथ गोम लल नोवुम मनि मंज सोवुम
श्रीरामकृष्ण रूप भगवान म्योन कोत गव
ब कस त्रऽवनसय गलि गलि०

प्रारान प्रारान वेरि चानि रऽवम रऽचहंज न्यन्दर तय नेह
अछ्य म्य लोसम छारान त गारान लाल म्यानि वोज यि त
व्यह

पान रोवुम चोन नाव प्रोवुम श्रीरामकृष्ण रूप भगवान

म्योन कोतगव ब कस त्रऽवनसय गलि गलि०

ब ति कोत त्रावय दामान चोनुय छुख च लोल आरय
वोऽज

ब ति अदरावय सामान चोनुय वज्जि म्य लोलुक पोज
म्य वज्जि वोज लोलय सरकुय पोज पान भोवुम अभिमान
त्रोवुम

श्रीरामकृष्णरूप भगवान म्योन कोत गव

ब कस त्रऽवनसय गलि गलि०

चोनुय लोला च्यय छस भावान मशरावान छस पान
लोल मंजु चोनुय लोल ललनावान पुशरावान च्यव पान
ब वन्दहय पादन पननिय प्राण जलनोवुम अद ललनोवुम
श्रीरामकृष्णरूप भगवान म्योन कोत गव
ब कस त्रऽवनसय गलि गलि०

लोल छ्वोख बडनम मत वोज त्रावतम हावतम अन्द वन्द
गाश

लूख नद हडनम मत मन्दछावतम चऽनी छम म्य आश
जगथ गुरु चऽनी छम म्य आश लोल भोवुम चानि वेरि
भोवुम

श्रीरामकृष्णरूप भगवान म्योन कोत गव

ब कस त्रऽवनसय गलि गलि लोल मस चावनऽवनस॥

—०—

विष्णु रूपय गदाधरय हरी हरय परमहंसो
कास असि यति कालज थरय—हरी हरय०

खुदीराम मोल ओसया ब्राह्मण
न्यतकमीं त सत्यवादी
टोऽठ तस ओस श्रीरघुवरय-हरी हरय०

गयायि तस ब्रोन्ठ पान होवुथ
स्वपनस मंज तस यि च्य भोवुथ
यिम जन्मस चोनुय घरय-हरी हरय०

माजि चन्द्रायि मंज स्वपनस
विज्जि विज्जे होवुथ दर्शुन
नोऽन च वुछनख लक्ष्मी वरय-हरी हरय०

फागन जून पछ दोयि प्रातः काल
ह्योतुथ जन्म कामारपुकुरय-हरी हरय०

शशि-पानय हऽवथ लीला
गाह च गोब गोख गाह च्य पोशा
यिम वुछान माऽज गया बेसुधय-हरी हरय०

लय यूगच प्रय च्य सऽतीय
बाल कालय तोरय अऽसय
ग्यवान नचान गछान बेसुरय-हरी हरय०

भक्तिभाव नोन ओसया ग्वन
दीव दीह तय म्वख प्रजल्वुन
शान्तस्वरूप गदाधरय-हरी हरय०

माऽज काली आदि च्य रटथम
न्यथ च्य पूजाह तस करथम
सो च्य प्रऽवथन दक्षिणेश्वरय-हरी हरय०

पांछ साधनायि वैष्णव च्ये
 त्रे तान्त्रिक अद्वैत सऽत्य
 स्वद च्य करिथख शक्ति धरय-हरी हरय०
 पंचवटी गंग भट्ठे
 रऽत्य रातन तप च्य सोदथम
 ओसुख अवतार त्यागीश्वरय-हरी हरय०
 गाह च चैतन्य नित्यानन्द
 गाह च गौरङ्ग गोवर्धन
 गाह च पानय शिव-शंकरय-हरी हरय०
 शारदा जी पान वरथन
 ह्यछि नऽवथन सो च्य भक्ति ज्ञन
 सो च्य करथनशक्ति सुरय-हरी हरय०
 मथ च्य सऽरिय अनुभऽविथम
 पांछ वेद सऽरिय सार च्य वनिथम
 गाल कर्मज असि अरसरय-हरी हरय०
 कलि कालय ह्यतुथ ज्ञन
 पान ईश्वर नोन च ओसुख
 दासस हरू यमने थरय-हरी हरय०

—०—

रामकृष्ण कर दया वोज, तन मन हवाल म्योनुय
 मन हय्थ कथ शायि ब्यूठुख, क्याह छुय मलाल
 म्योनुय॥०॥

हे दयि! बोज स जऽरी च्यय रोस्त कस ब वनय

करयो आरचरय क्याह छुय मलाल म्योनय॥०॥

संसार छु आवलुनुय, यि छु सनि खोत सोनुय
यथ मंज आस ब हय्यय॥०॥

चऽवनस मूह मस, रूदुम न ध्यान ब्ययि ह्यस
वोनमथ गोस तनय॥०॥

होरुम म्य कष्ट हन हन, हरोहर छुख थाव कन
ओरचर त आलवनय॥०॥

सूक्ष्म निर्मल रटुम ब्रथ, प्रत्यक्ष पाठिन ब वुछहथ
सऽत्य ज्ञान लोचनय॥०॥

च्यतस सो कल करुम पूर, अज्ञानमल गछयम दूर
ही टाठि गधादरय॥०॥

पादन तल ब यिमयो, चऽनिय तोता ब करयो
वार वार आर अनय॥०॥

वासनायव नाल रोटहस संकल्पन ब चोटहस
कोरहस पन पनय॥०॥

दिम सत्संग म्य हरदम, यियम शांती त शम-दम
अद दास चोन ब बनय॥०॥

दास थवतन समाधान, चलिहेस यि दीह अभिमान
मंगान छु क्षण क्षणय॥०॥

आकाशि सिरिय प्रकाश नोन द्राव
गाश आव रामकृष्ण दर्शुन म्य हाव॥०॥

राथ गयि प्रभात आव फोलनस
वेल वोत प्राणस पान छलनस
न्यन्दरे हति मति अच्छ मुचराव॥०॥

गुल फ्वोल्या बागन हिय वननय
दूर फलि म्योन गोयना कननय
लोल सऽत्य बोलनस बुल्लुल त काव॥०॥

वल सोन मस रोज़ ज्वल त्राविथ
कवोलबल वस कल मल त्राविथ
व्यचार ज़ल सऽत्य तन मन नाव॥०॥

चतुर्दल मंज्र छुय गोड गणपत
मूषक वाहन वल्लभा ह्यथ
गजम्बख मूलाधार पर्जनाव॥०॥

षठदल ब्रह्मा षोडष थान
हम्सस खसिथ चोर वीद वंखनान
परम प्वषस पम्पोश वथराव॥०॥

दशदल मन्ज्र जाय विष्णास
लक्ष्मी सहित गरुड वाहन यस
पंकज-पादन पान पुशराव॥०॥

द्वादशान्त मण्डलस मन्ज्र शिवनाथ
ब्रेशिभस खसिथ उमा ह्यथ साथ
अनाहत नाद-बिन्दसय कन थाव॥०॥

षोडशदल कुय बोज़ महिमा

तति छु जीव आत्मच प्रतिमा
विशुद्ध चक्रस शुद्ध-भाव प्राव॥०॥

द्वादशदल मन्त्र परम आत्मदीव

त्रयोदश मन्त्र छुय पननुय जीव
ब्रह्मरन्ध्रस मन्त्र सिरियि प्रभाव॥०॥

सहस्रदलसय प्रदक्षिण फेर

गुरु आज्ञायि तति वति वति नेर
जगतस मन्त्र भगवद् गीत गाव॥०॥

वेल वोत अमर्यथ वर्षनकुय

परमानन्दने दर्शनकुय
लक्ष्मणो लोल चे दारि मुचराव॥०॥

—०—

युथ न छ्यन गछख म्य अकिसँय क्षणसँय
ललनावथ मनसँय मन्त्र।

रामकृष्ण छाण्डथ दक्षिणेश्वरसँर
ललनावथ मनसँय मन्त्र॥

खगँ खगँ अवतार दारिथ

लूख तारिथ सम्सारँक्य

रूदखा रथँवान पानँ अर्जनसँय॥०॥

असोर संसार सोर न स द्रामो

भय चामो संसारुक

क्याह छु ह्योन तँ ह्युन क्याह छु न्युन चन्दँसँय॥०॥

लाज थवैथा द्रौपदी माजे
 खसै च्य आयिय पादन शरण्य
 करिथ अम्बार तस च्य वर्धनसय ॥०॥

किसि खोरुथ परबथ पानय
 अकि आनय बालकन सज्य
 क्याह करव अस्य गोवर्धनसैय ॥०॥

नादन म्यान्यन कन म्यति थावतम
 वथ म्य हावतम सत्य धर्मच
 छसया प्रारान शुभ दर्शनसैय
 ललैनावथ मनसैय मन्ज ॥०॥

—०—

रामकृष्णा नाव चान्य द'य मन्य गले
 वोथ मन हा कले शब्द जप ओम
 होश थव वासनायि द्यान रोजि सोम
 मन प्राण स'त्य भासि सर फोलि पम
 मान रट पानस विघ्न हान चले। वोथ मन-----

कस चावि लोलकिस प्यालस मस
 सुय करि तय ओर चावन यस
 लोल.कि दरियाव गोड़ पान छले। वोथ मन-----

मन बुद्ध स.ति छुय खूर तय हम
 सो.हं रजि स'त्य पान नावि लम
 अहं त्रवित सोहं फो.ले। वोथ मन-----

प्राणचे त्रकरे शब्द पर मान
सार रठ बोझ स.ति पूर तोलान
सत चिय साक्षी लेख अमले। वोथ मन-----

सोहम् ह 'यकि स 'ति परमानस
यति तति प्यतरुन छुय पानस
होश थव वासनायि युथ न माल गले। वोथ मन-----

शब्द बूल कुकिले गोविंद गो
पोशनूल छिय ज्ञपान कृष्ण गोपो
श्रवनय सूरित कस्तूर कले। वोथ मन-----

सो.न खसि कहवचि तार.चि तोल
तोलि सुय र.चि रचि य 'मि अहं गोल
भ्योन भ्योन मोल छुय सो.नस त सरतले। वोथ मन--

यावन बागस फुलया छम
नाद खस साधान तेज बिंदम
सत्य लोक समाधि सहज प्रजले। वोथ मन-----

ही फो.जि जारन आरन आखल
गुस्वल गुलाब ब्ययि यंब.र्जल
बंबूर छारान छुय यंब.र्जले। वोथ मन-----

मनकिस ध्यानस सोहं खानस
सहज संदानस सो.रनुय ह्युव
दम हू सम रोज अद पम फोले। वोथ मन-----

कन थव क्या ज्ञपान शब्द जीर बम
चेनतो आ 'कलो दर नफसि दम

10
कलि-कलि कल घनेयम, वुज्ज म्ये शशिकले।
वोथ मन-----

परमान्नद त्राव फिकिर त. गम
चिंतामन रत्न स'त्य ज्ञपुन ओम्
बुय-बुय त्रावित दःय मनि गले। वोथ मन-----

यी ओस रोव.मुत तीय पननि गरे
गोरन दुपनम अतिथय प्रार
ओरुत प्रारान ओश कर मेले। वोथ मन-----

०

नादा लायस लोल छु आमुतये,
व्यसिये रामकृष्ण कोतये गोम।

च छुक ज्ञप यज्ञनुक ज्ञप,
चई छुक तप वनुक तप
च छुक साधन हुन्द साधैये। व्यसिये-----

चई छुई यूगियन हुन्द यूग, चई छुक प्राणियन हुन्द
प्राण, चई छुक सत.कुय संवादै। व्यसिये-----

वेदन मंज छुख सामवेद, देवन मंज छुक इन्द्राजई
दैत्यन मंज छुक प्रह्लादै। व्यसिये-----

रज्जोगुण किन्य छुक ब्रह्मा जी,
सत् गुण किन्य छुक विष्णु भगवान
तमो गुण गालान छुख व्याधै। व्यसिये-----

दासस दित त्युथुई ज्ञान यथ दपान छई ब्रह्म ज्ञान
च्यानि दयायि स'त्य प्रावि बिन्द नादै। व्यसिये-----

०

वारवन्तम मारमत्ये (रामकृष्णे), छुख च कत्ये।
व'न्य ब दिमह वत्य वत्ये। छुख-----

स्यंद बढ्यन गंग आरन, प्यठ ब प्रारान छुस
ध्यान दारान मौख्त हारान, सथ व्यचारन छुस
लारवुन छुस वारवत्ये। छुख-----

जन्मुकुय छुख च पूरन, क्याजि दूरान छुख
नूर बर्यथय सूरमत्ये। छुख-----

यूग्यक्यव ज्ञान नेत्रव पद्म पोत्रव स'त्य
वछत म्ये कुन निन्दर हत्ये। छुख-----

दिववुन छुस निश्कामय शहर गामय वोन
काम दग्द जाम छत्ये। छुख-----

दर्शन अमृत वर्षुम, दिम ब लोगमुत छुस
फल कुल ज्ञन प्यठ दत्ये। छुख-----

बाल वन्य यित 'दासस' निश, आलव'य हिय पान
बाल रटहथ नालमत्ये। छुख-----

०

(शहाना - झपताल)

तुमि ब्रह्म 'रामकृष्ण', तुमि कृष्ण, तुमि राम।
तुमि विष्णु, तुमि जिष्णु, प्रभविष्णु प्राणाराम।।

तुमि आधेय-आधार, तुमि ब्रह्म निराकार।
 तुमि नर-रूप-धर, विजित-कनक-काम॥
 अपार-करुणा सिन्धु, तुमि नाथ दीनबन्धु।
 जाचे इन्दु कृपा बिन्दु, चरणे करि प्रणाम॥

— ० —

(कौमुदी-खमाज-एकताल)

रामकृष्ण-चरण-सरोजे जो रे मन मधुप मोर।
 कंटके आवृत विषय-केतकी, थेकोना, थेकोना ताहे
 विभोर॥

जनम-मरण-विषम-व्याधि, निरवधि कतो सहिबे
 आर।

प्रेम-पीयूष पिया रे श्रीपदे, भवेरि जातना रबे ना
 तोर॥

धर्माधर्म-सुख-दुःख-शान्ति-ज्वाला-द्वन्द्व-खेला
 माझे नाहि निस्तार॥

ज्ञान-कृपाणे परम जतने काट, कटका करम-डोर;
 'रामकृष्ण' नाम बोलो रे वदने, मोहेरि जामिनी होइबे
 भोर।

दुःस्वपन-ज्वाला रबे-ना रबे-ना, छुटे जाबे तोर घुमेरि
 घोर॥

— ० —

(सुर-प्रेम मुदित मन से कहो राम राम... ..)

प्रेम भरे मन रे गाह रामकृष्ण नाम।

श्रीरामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम।

आनन्द वर्षक नाम मम प्राणाराम

रामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम॥

अन्तरे जतने राखो मन रे अविराम

दीन कागालेरइ धन रामकृष्ण नाम

रामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम॥

एकइ वृन्ते फुटिल रे राधा, कृष्ण, श्याम,

शिव, काली, ब्रह्मा, विष्णु, श्यामा सीताराम।

नाम ब्रह्म, एकइ जेने मन रे गाह नाम

जनम मरण साथी रामकृष्ण नाम

रामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम, श्रीरामकृष्ण नाम॥

—०—

॥ श्री शारदा स्तोत्रम् ॥

प्रकृतिं परमामभयां वरदां

नररूपधरां जनतापहराम्।

शरणागतसेवकतोषकरीं

प्रणमामि परां जननीं जगताम्॥१॥

गुणहीनसुतानपराधयुतान्

कृपयाद्य समुद्धर मोहगतान्।

तरणीं भवसागरपारकरीं

प्रणमामि परां जननीं जगताम्॥२॥

विषयं कुसुमं परिहृत्य सदा

चरणाम्बुरुहामृतशान्तिसुधाम्।

पिब भृंगमनो भवरोगहरां

प्रणमामि परां जननीं जगताम्॥३॥

कृपां कुरु महादेवि सुतेषु प्रणतेषु च।

चरणाश्रयदानेन कृपामयि नमोऽस्तुते॥४॥

लज्जापटावृते नित्यं सारदे ज्ञानदायिके।

पापेभ्यो नः सदा रक्ष कृपामयि नमोऽस्तुते॥५॥

रामकृष्णगतप्राणां तन्नामश्रवणप्रियाम्।

तद्भावरज्जिताकारां प्रणमामि मुहुर्मुहुः॥६॥

पवित्रं चरितं यस्याः पवित्रं जीवनं तथा।

पवित्रतास्वरूपिण्यै तस्यै कुर्मो नमो नमः॥७॥

देवीं प्रसन्नां प्रणतार्तिहन्त्रीं

योगीन्द्रपूज्यां युगधर्मपात्रीम्।

तां सारदां भक्तिविज्ञानदात्रीं

दयास्वरूपां प्रणमामि नित्यम्॥८॥

स्नेहेन बध्नासि मनोऽस्मदीयं

दोषानशेषान् सगुणीकरोषि।

अहेतुना नो दयसे सदोषान्

स्वाङ्गे गृहीत्वा यदिदं विचित्रम्॥९॥

प्रसीद मातर्विनयेन याचे
 नित्यं भव स्नेहवती सुतेषु।
 प्रेमैकबिन्दुं चिरदग्धचित्ते
 विषिञ्च चित्तं कुरु नः सुशान्तम्॥१०॥

जननीं शारदां देवीं रामकृष्णं जगद्गुरुम्।
 पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः॥११॥

— ० —

स्तवः

अनन्तरूपिणि अनन्तगुणवति
 अनन्त-नाम्नि गिरिजे मा।
 शिवहन्मोहिनि विश्वविलासिनि
 रामकृष्णजय-दायिनि मा॥

जगज्जननि (त्वं) त्रिलोकपालिनि
 विश्वसुवासिनि शुभदे मा।
 दुर्गतिनाशिनि सन्मतिदायिनि
 भोग-मोक्षसुख-कारिणि मा॥

परमे पार्वति सुन्दरि भगवति
 दुर्गे भामति त्वं मे मा।
 प्रसीद मातर्नगेन्द्र-नन्दिनि
 चिरसुखदायिनि जयदे मा॥

बंगला भजन

पतितपावनी शारदा देवी!

शोक नाशिनी, तापहारिणी,
शान्तिदायिनी, भवानी।

—०—

नाहि जे तोमार भेदाभेद ज्ञान
सन्तान तोमार हिन्दु मुसलमान।
पूजिछे तोमाय मार्किनवासी
नह कि तुमि ता देन जननी॥

निजेरे तुमि करिया गोपन
साधिले मा गो कठोर साधन।
त्रिगुणधारिणी विश्वजननी
मुक्तिदायिनी शंकरी॥

—०—

॥ विवेकानन्द गीतिस्तोत्रम् ॥

मूर्तमहेश्वरमुज्ज्वलभास्करमिष्टममरनरवन्द्यम्।
वन्दे वेदतनुमुज्झितगर्हितकांचनकामिनि बन्धम्॥

कोटिभानुकरदीप्तसिंहमहो कटितटकौपीनवन्तम्।
अभीरभीःहुंकारनादितदिंगमुखप्रचण्डताण्डवनृत्यम्॥

भुक्तिमुक्तिकृपाकटाक्षप्रेक्षणमघदलविदलनदक्षम्।
बालचन्द्रधरमिन्दुवन्द्यमिह नौमि गुरुविवेकानन्दम्॥

॥ विवेकानन्दपंचकम् ॥

अनित्यदृश्येषु विविच्य नित्यं तस्मिन्समाधत्त इह स्म लीलया।
विवेकवैराग्यविशुद्धचित्तं, योऽसौ विवेकी तमहं नमामि॥१॥

विवेकजानन्दनिमग्नचित्तं, विवेकदानैकविनोदशीलम्।
विवेकभासा कमनीयकांतिं, विवेकिनं तं सततं नमामि॥२॥

ऋतं च विज्ञानमधिश्रयद्यन्निरंतरं चादिमध्यान्तहीनम्।
सुखं सुरूपं प्रकरोति यस्य आनन्दमूर्तिं तमहं नमामि॥३॥

सूर्यो यथान्धं हि तमो निहन्ति विष्णुर्यथा दुष्टजनांश्छिनत्ति।
तथैव यस्याखिलनेत्रलोभं रूपं त्रितापं विमुखीकरोति॥४॥

तं देशिकेन्द्र परमं पवित्रं, विश्वस्य पालं मधुरं यतीन्द्रम्।
हिताय नृणां नरमूर्तिमन्त्रं विवेक-आनन्दमहं नमामि॥५॥

नमः श्रीयतिराजाय विवेकानन्दसूरये।
सच्चित्सुखस्वरूपायस्वामिने तापहारिणे॥६॥

विविध संकलन

लल-वाख्

आमि पन सोदरस नावि छस लमान
 कति बोझि दय म्योन म्यति दियि तार
 आम्यन टाक्यन पोज ज्ञन शमान
 जुव छुम भ्रमान घर गछ हा॥१॥

लल बोह द्रायस लोल रे
 छांडान लूसुम द्यन क्योह राथ
 वुछुम पंडिथ पनजे घरे
 सुय म्य रोटमस न्यछतुर त साथ॥२॥

दमाह दम कोरमस दमन-हाले
 प्रजल्योम दीफ त ननेयम ज्ञाथ
 अन्दर्युम प्रकाश न्यबर छोटुम
 घटि रोटुम त करमस थफ॥३॥

पर तय पान यम्य स्वम मोन
 यम्य ह्युव मोन द्यन क्योह राथ
 यमिसय अद्वय मन सोपुन
 तमिय ड्यूठुय सुर-गुरु-नाथ॥४॥

भान गोल तय प्रकाश आव जूने
 चन्दर गोल तय केहं ति ना कुने
 च्यथ गोल तय केहं ति ना कुने
 गयि भू भुर्वः स्वः व्यसर्जिथ क्यथ॥५॥

दीव वटा दीवर वटा

प्यठ-ब्बन छुय ईक वाठ

पूज कस करख हूट भटा!

कर मनस पवनस संग्ठाठ॥६॥

मूढ ज्ञानिथ पशिथ त कोर

कोऽल श्रुतवोन जड-रूपी आस

युस यि दपिय तस तिय बोल

योहय तत्त्वविदस छु अभ्यास॥७॥

शील त मान छुय पोज क्रंजे

म्वछि यम्य रोट मालि योद वाव

होस्त युस मसवाल गण्डे

ति यस तगि तय सु अद निहाल॥८॥

श्य वन चटिथ शशिकल बुज्जम

प्रक्रथ होंज्जम पंवन-सऽतिय

लोलकि-नार वऽलिंज बुज्जम

शंकर लोबुम तमिय सऽतिय॥९॥

सहजस शम त दम नो गछे

यछि नो प्रावख मुक्ति-द्वार

सलिलस लवण ज्ञन मीलिथ गछे

तोति छुय दुर्लभ सहज-व्यचार॥१०॥

केह छिय न्यन्दरि हतिय वुदी

केचन वुद्यन न्यसर प्ययी

केह छिय स्नान करिथ अपूतिय

केह छिय गेह बज्जिथ ति अक्रय॥११॥

अकुय ओंकार युस नाभि धरे
 कुम्भय ब्रह्माण्डस सुम गरे
 अख सुय मन्थर च्यतस करे
 तस सास मन्थर क्याह करे॥१२॥

गगन चय भूतल चय
 चय छुख दान पवन त राथ
 अर्ग चन्दुन पोश पोज चय
 चय छुख सोरुय त लगिजिय क्याह॥१३॥

पानस लऽगिथ रूदुख म्य च
 म्य चे छांडान लूसुम दोह
 पानस मन्ज यलि ड्यूठुख म्य-च॥
 म्य चे त पानस द्युतुम छोह॥१४॥

कुश पोश तेल दऽफ जल ना गछे
 सद्भाव ग्वर कथ युस मनि ह्यये
 शम्भूहस स्वरि नित्य पननि यछे
 सदा प्यजे सहज अक्रय ना ज्यये॥१५॥

लल बो लूसस छांडान त गारान
 हल म्य कोरसस रसनि शतिय
 वुछुन ह्योतमस तार्य डीठिमस बरन
 म्य ति कल गनेयि जि जोगमस ततिय॥१६॥

कन्द्यव गेह त्यज कन्द्यव वनवास
 व्यफल मन ना रटिथ त वास
 दान-राथ गन्जरिथ पनुन श्वास
 यिथुय छुख त त्युथुय आस॥१७॥

चि यि कर्म कोरुम सु अर्चुन
 यि रसनि वोश्चोरुम ति मन्थर
 योहय लोगमो दिहस पर्जुन
 सुय यि परम-शिवुन तन्थर॥१८॥

छांडान लूसस पऽनी पानस
 द्वयपिथ ज्ञानस वोतुम न कांह
 लय कोरमस त वऽचस अल-थानस
 बर्य-बर्य बान त चवान न कांह॥१९॥

शिव शिव करान हंस गथ स्वरिथ
 रूज्जिथ व्यवहार्य द्यन क्योह राथ
 लागि रोस अद्वय युस मन करिथ
 तस्य न्यथ प्रसन्न सुरु-गुरु-नाथ॥२०॥

ॐकार यलि लये ओनुम
 वुह्य कोरुम पननु पान
 षु वोऽत त्रऽविथ सथ मार्ग रोदुम
 त्यलि लल ब वऽचस प्रकाशस्थाने॥२१॥

ग्वरन वोननम कुनुय वचुन
 न्यबर दोपनम अन्दरय अचुन
 सुय गव ललि म्य वाख त वचुन
 तवय म्य ह्योतुम नंगय नचुन॥२२॥

क्याह कर पांचन दहन त काहन
 वोख-शुन यथ ल्येजि करिथ यिम गय
 सऽरिय समहन यथ रज्जि लमहन
 अद क्याज्जि राविहे काहन गाव॥२३॥

देहचि लरि दारि-बर त्रोपरिम

प्राण-चूर रोटुम त द्युतमस दम
हृदयिचि कूठरि अन्दर गोण्डुम
ॐ-कि चोबु तुलमस बम॥ २४॥

अन्दरिय आयस चन्दरय गारान
गारान आयस हिह्यन हिह्य
चय, हे नाराण, चय हे नारान
चय, हे नाराण! यिम कम विह॥ २५॥

चालुन छु वुज्जमल त त्रटै
चालुन छु मन्दिन्यन गटकार
चालुन छु पान पनुन कडुन ग्रटै
ह्यत मालि! सन्तूष वाति पानै॥ २६॥

ट्योठ मोधुर तय म्यूठ ज़हर
यस यूत छुनुख जतन बाव
यम्य यथ करँय कलँ तँ कहर
सु तथ शहर वऽतिथ प्यव॥ २७॥

कव छुख दिवान अनिने बछ
त्रुक हय छुख त अन्दरय गछ
शिव छुय अत्य तय कुन मो गछ
सहज कथि म्यानि करतो पछ॥ २८॥

ख्यन-ख्यन करान कुन नो वातख
न ख्यन गछख अहंकऽरी
सोमुय ख्य मालि सोमुय आसख
समि ख्यन मुचरनय बरन्यन तऽरी॥ २९॥

सोबूर छुय ज्युर मरच त नूनय
ख्यन छुय ट्योठ त ख्ययस कुस
सोबूर छुय मालि सोन्सुन्द टूरय
म्बोल छुय थोद त ह्ययस कुस॥३०॥

यहय मातृ-रूपी पय दिये
यहय भार्या-रूपी करि विशेष
यहय माया-रूपी अन्ति जूव ह्यये
शिव छुय क्रूठ त चेन वोपदीश॥३१॥

केंचन रज्ज छय शिहिज बूनी
न्यबर नेरव शुहुल करव
केंचन रज्ज छय बर प्यठ हूनीं
नेरव न्यबर त जंग ख्ययव
केंचन रज्ज छय अदल-त-बदल
केंचन रज्ज छय जदल छाया॥३२॥

असिय अज्जस्य त असिय आसव
असिय दार कर्य पतय वथ
शिवस सोरि न ज्योन त मरुन
रवस सोरि न अतय गथ॥३३॥

गुरु शब्दस युस यछ पछ भरे
ज्ञान वगि रटि च्यथ तोरगस
इन्द्रिय शोमरिथ आनन्द करे
अद कुस मरि तय मारन कस॥३४॥

छयन आयि त गछुन गछे
पकुन गछे द्यन कोह राथ

घोरय आयि त तूर्य गछुन गछे
 केह न त केह न त केह न त क्याह॥३५॥

—०—

गो.डज गणपत जियस कुन कर नमस्कार।
 पतह रठ राजरेनि हुंद खास. दरबार॥

व'नित क्या ह्यक. ब. देवी चा'ज लीला।
 करै वो'ज मूर्खगियि किज मूर्ख. खेला॥

च. माता शारिका संतुष्ट म्य' प्यठ रोज़।
 गदा आमुत ब.दर्गाह छुस सदा बोज़॥

वहा'रित जाल संसारन वो.लुम नाल।
 करुम वो.ज चार. नत. क्या म्योन छुय हाल॥

मदन लोभन मोहन क'रम.च छनम जाय।
 कृपाये किज करुम मो.कलावनुक पाय॥

अहंकारन स्याठाह ह्यो.तमुत छुनस तल।
 इमन चो.न मुशकिलन माता मरुम हल॥

ब.दर्शन छुस न वातन न्यथ भवानी।
 क्षमा पापन म्य' करतम या'जि भवानी॥

को.ठ्यन शक्ती अ'छिन थावतै पनुन गाश।
 दरई दुनिया फकत चा'जिय म्य' छम आश॥

म्य' मूर्खस गछत. वूजित मा'जि भवानी।
 सिवाये चानि वन. कुस छुम म्यो'नुय॥

दिलुक तमन्ना म्य' कडतं छुस ब. चोन दास।
रक्षा करतं पद्यन चान्यन तल.य आस॥

कर्मफल. किज अगर केंछा म्य छुम पाप।
क्षमा सागर च. य'मि किज छक करुम माफ॥

कलम तुल. पान. लेख म्या'ज कर्म लेखा।
करुम स्य'ज कांह अगर ह'जि छम म्य रेखा॥

कृपा सागर. जगत माता छु चोन नाव।
शरण आसै पद्यन पनन्यन तल.य थाव॥

सिवाये चानि छुम नह कांह रछन वोला।
च. देवी म्या'ज छखना मा'जि तय मोला॥

भुज्जव अष्टादशव सूति कर च. रक्षपाल।
च. य'मि किज आस. वज छख दीन दयाला॥

च्य रुस्तुय कस वन. कुस बोजि म्योनय।
ब. छुसना नावकार सन्तान चोनय॥

यि अक मशहूर कथ प्रथ कांह छु ज्ञानन।
कु पुत्र छुय कु माता छय न. आसान॥

मंगुन छुम नह तगान बोजुन तगान छुय।
चववुन शुर माजि इथ पा'ठि दो.ध मंगान छुय॥

दिलस य'च कोल अमिकुय छुम म्य हावस।
दितम दर्शुन लगय पार्थ पार्थ ब. नावस॥

ब. चान्यन पादि कमलन रथ वन्दय ना।
शरीर अर्पण पनुन च्यय पत करय ना॥

पनुन जुव जान वा'लिंजि खोंठ वन्दय ना।
पन.नि इम टा'ठि छिम सा'रिय वन्दय ना॥

लगय ना चाजि मायाये लगय ना।
लगय ना बजि दयाये लगय ना॥

इमन पंपोश. नेत्रन च्यय लगय ना।
मुकट धारी सुन्दर शेरस लगय ना॥

यि केंछा छुम चोनुय छुम वन्दय ना।
क्षमा करतम क्षमा करतम च. क्षमा॥

च. छकना राजर्यज राजन दिवान राज्य।
अतीत आमुत छुस ब. बख्शुम ज्ञानकुय ताज॥

गछान दिथ छक अमीरन च.य अमीरी।
दरई दुनिया म्य करतम दस्तगीरी॥

च्य निश शाहो गदा प्रथ कांह बराबर।
म्य पादन तल कृपाये पनजि किज वर॥

ब. जा'री छुस करान च्य'य दस्त बस्तै।
करय अर्पन जिगर ज्ञन पोश. दस्तै॥

दो.युम ब्याखा च्य ह्यु छुमन. कांह ति दाता।
बहर क.स्मुक मदद कर म्योन माता॥

गंडित गुलि छुस करान च्यय जार. पारह।
प'तिमि वक्तय मतय करतम अवारह॥

परैशा'नी यि म्या'जिय करत. वो.ज दूर।
इच्छाये दिल क'रित गछतम म्य मन्जूर॥

च. छख म्या'ज इष्ट देवी कष्ट कास्तम।
सदा सन्तुष्ट रूजित मनि भास्तम॥

वनान सा'री छि चाजे जायि सिद्ध पीठ।
सिद्धत करतं म्य ह्यु व मोक.लित गछिय कीठ॥

ब. कश्मीर का.ति व'थि नेकनाम सत्जन।
कृपाये चाजि किज सरतलि बन्योक सो.न॥

मूर्ख बो.ज किज न छम शक्ती न भक्ती।
दयालु छख गछुम बख्खित म्य मुक्ती॥

ब. छुस आरुत बन्योमुत आर्वल ज़न।
गछर चलिहेम बनिहेम आ'न. ह्युव मन॥

अगर रछहं पद्यन तल कुस म्य पोर्यम।
तवै किज चा'ज भक्ती ज़ाह न. सोर्यम॥

कबूल गछतम क'रित वो.ज म्या'ज ज़ा'री।
वन्दय रथ पादि कमलन मा'जि चो.पा'री॥

यि लीला परि युस सुबहन त. शामन।
त'मिस देवी सफल करि मनि कामन॥

दपान 'दासस' छय चा'निस टांठ भक्ती।
ब दुनिया सुख ब उकबा दिम म्य मुक्ती॥

—०—

गिन्दुनाह छा जिन्द मरुन
पान रोस्त पान सोरुन
सहज व्यचार करुन ... सहज व्यचार करुन

श्रुत छे तस रोस्त छुन
मूद युस सु लूस्त छुन
ब दपुन फ्रूस्त छुन ... सहज०

दीह त मन त बुद्ध ति छुन
विध ऋध सिद्ध ति छुन
मुह त भ्रम त मद ति छुन ... सहज०

वीदन वोनमुतुय
बुद्धव वनि ओनमुतुय
बुद्धव निश छ्योनमुतुय ... सहज०

शक्त वोनहस त शिवय
जाव कस त आव कवय
निश त द्यन शशि त रवय ... सहज०

सत चित आनन्दमये
वऽतिथ मोयि मोये
वऽतिथ यस न मुये ... सहज०

मनि दऽय कासवुनुय
अऽसिथ आसवुनुय
नऽसिथ भासवुनुय ... सहज०

परमात्मा त अपर
दीश काल विन त सत-गुर
भोरमुत यम्य चराचर ... सहज०

बूझिथ वार पऽठिय
त्रऽविथ टठज्य अटऽठिय
पाखण्डी त पऽठी ... सहज०

चित्त स्वरुनुय चिदाकाश
सूर्य तति छुय स्वप्रकाश
अस्त-उदय छुस्न थित नाश ... सहज०

तति सोरुय छु श्रपान
तति मा पान व्यपान्
भगवान् तथ्य छि दपान ... सहज०

सूर्यस मा छे छाये
चय वोथ अमि शाये
भायि चलनय च्य ग्राये ... सहज०

यच गाट प्ययि घाटय्
त्रऽविथ फुट फ्राटय
फुट् क्याह जि तिय ब वाटय ... सहज०

भगवान् अविनाशे
अविनाश आकाशे
घट अऽस्यतन त गाशे ... सहज०

तस रोस्त यिय च ज्ञानख
तिय तिय ठोर च मानख
रोचख त भयानख ... सहज०

शंकायि मनि त्रऽविथ
यिम युथ गयि प्रऽविथ
सऽधिथ रूद्य सऽविथ ... सहज०

प्रेम स्वर वहवने
रेह हेयि हनि हने

पोज लागि तील कने ... सहज०

नव-दारि मन्दोरे
चोपऽर्य मन दोरे
लयि तथ त्रपोरे ... सहज०

वार यलि वुछि मन्दर
रोजि न तथ्य अन्दर
अन्दवन्द श्यामसोन्दर ... सहज०

वछ त्रऽविथ त दारे
योर ज्ञानि तोर लारे
तस विन क्याह जि लारे ... सहज०

ललि वोन छु ललवुनुय
बालगूपाल कुनुय
वोन थव छुख न ओनुय ... सहज०

वोनमुत यि स्वात्म यछे
सहजस प्राव पछे
शम त दम नाव गछे ... सहज०

परमानन्द वुन्दस
कृष्णस ति पान वन्दस
सोन्तस क्याह त हरदस
सहज व्यचार करुन॥

— ० —

वेल वोत मेलनुक दर्शुन म्य हाव

ससस सससस संशेष व्याव॥

अद्वैत-रूप छुख कुनुय आसवुन

अकि ज्योतिरूप सऽत्य न्यथ भासवुन
कुनुय छुख तवय छुय केवल नाव॥प्रयम०॥

द्वय-लक्षण छुख शिव-शक्ति रूप

दुयी त्रऽविथ छुख प्रजलवुन दऽफ
द्वयि-हन्दि दय च्यंय छुह रुत स्वभाव॥प्रयम०॥

त्रैलोक्यनाथ छुख त्रिभुवन सार

त्रय-ग्वन सऽत्य छुख करान व्यवहार
त्रिनेत्र दारवनि नजराह त्राव॥प्रयम०॥

चतुर्भुज वऽतिथ छुख चोवापोर

च्वन तरफन ह्यथ अवस्थायि चोर
च्वन वीदन मंज छुख भक्ति-भाव॥प्रयम०॥

पंच-म्वख आसवुन छुख शिव जी

पांचन प्राणन पऽरवुन चय
यमि पांच तरनि तार म्याज धर्म-नाव॥प्रयम०॥

शयि शयि छांडथ छुम चोन लोन

ष-म्वखिस कुमारजिय सुन्द छुख मोल
षडक्षर नाव चोन औषध द्राव॥प्रयम०॥

सथ-संग सादन हुन्द सत्य-रूप

सत्यवादी छुख छुय न केह लीफ
सत् सदाशिव वथ म्य सतच हाव॥प्रयम०॥

अष्टस्यज सऽत्य छुय कर म्योन पाय

अष्टदल हृदयस मंज चऽज जाय

अष्टमूर्ति विष्णु छुख चय मोक्ष दाव॥प्रयम०॥

नव्युम घर धर्मक चोन दर ध्यान

नव द्वार मुचरिथ रठ मन त प्राण
नव निदान बर्य बर्य छिय त्राव त्राव॥प्रयम०॥

दशभुज नाव चोन नागिन्द्रहार

दहवनि दिशान हुन्द छुख चय सार
दहन इन्द्रियनय म्यति शमराव॥प्रयम०॥

एकादश-रुद्र चऽन्य भक्तिय छिय

तिथुय कर्त यिथ पर्जनावोथ चय
अद कति रावि असि काहन गाव॥प्रयम०॥

बाहन बुर्जन मन्ज चोन व्यवहार

बाहन यज्ञन मन्ज चोन व्यस्तार
बाहन सूर्यन चोन तीज नोन द्राव॥प्रयम०॥

हेरच-त्रुवश हुन्द छुख रुत फल

राथ-द्यन अऽस्यतन म्य चऽनिय कल
त्रयोदश आत्म-सूर्य तीर्थ मन नाव॥प्रयम०॥

चवदाह रत्न द्राख चय ओस भक्ति-भाव

चवदश हन्दि स्वामियो म्य ति मोकलाव
पुनिम हन्ज जून छ्यस मत मन्दछाव॥प्रयम०॥

पुनिम त मावसि व्रथ दऽर्य दऽर्य

न्यथ करहाय पूज पोश चऽर्य चऽर्य
लोकक्यन पोशन करतम क्राव॥प्रयम०॥

कृष्णास प्रेम चोन यन प्यठ ज्ञाव
 चऽज सीव करने जन्मस आव
 कऽल्य मेलि वावस सऽतिन वाव
 प्रयम सरकिय पंपोश छाव॥

— ० —

टोठान चय छुख भक्ति-भावस
 श्याम-रूप लगयो राम-नावस॥

सासि म्वख गीत छुय ग्यवान शेषनाग
 राथ-द्यन अऽस्यतन म्य चोनुय राग
 ज्ञनक-राज्ज चय करनोवथन त्याग
 राज्ज-भर्तृहरियस दितुथ वैराग
 योग किज टोठ्योख भुशुण्ड-कावस॥श्याम रूप०॥

शंख-मंज शब्द त्रावनस लगयो
 बोज्जवुन मोक्ष दावनस लगयो
 असवुन म्वख हावनस लगयो
 नाश-रस्तिस यौवनस लगयो
 लगयो सथ-रूपकिस स्वभावस॥श्याम रूप०॥

हे शिव केशव छुस चोन दास
 शिव-रूप बसवुन छुख च कैलास
 राम-रूप लंकायि करवुन डास
 कृष्ण-रूप किज छुख खेलान रास
 तार दिम मोहनिस दरियावस॥श्याम रूप०॥

कति थँव्य समयन कंसस जोर
 कति रूज रावणास तिछ दोर-दोर

कति रूद्य लंकायि बाह शथ पोर
अज्र ताज संसार कस रूद सोर
कम्य दीप प्रजलोव मन्ज वावस॥श्याम रूप०॥

सर्वव्यापक छुख मन्ज मनस
कृष्ण रूप दऽरिथ मन्ज वनस
कल ह्यथ वामन-जीवनस
आश्चर च्य होवुथ अर्जनस
चाजि भक्तियि हुन्द छुम म्य हावस॥श्याम रूप०॥

रामचन्द्र शीतल छुय स्वभाव
पुनिम-दोह-शिव-आरती करनाव
चन्द्रचूड सूर्य ह्युह दर्शुन म्य हाव
कृष्णस शिव-लोल तिथ गनिराव
थिथ पार्थी करि दरि मावस
श्याम रूप लगयो राम-नावस॥

०

भय-रोस्त थावतम ज्ञय-सानो
दय रोटमय चोन दामानो॥

ताप मन्ज कोत गछ अन्जानय
ब्रोठ छुम ज्यूठ स्यकि-मैदानय।
न्यथननि नय हुन्दि सायिबानो॥०॥

मन्ज कांडिनय प्योस कमजोरय
पतकनि ह्यम छुस ननवोरुय।
अर्जन दोविन रथबाणो॥०॥

साध-सन्त गयि पथ कुन म्य त्रऽविथ
 हंस पखवय पान वुफनऽविथ।
 ओन त रोन छुस करान मानमानो॥०॥

नाश-रसिति छयम चऽनिय आशा
 अनिसय अनि गटि-मंज अलात गाशा।
 रनिसय क्युत लद त विमानो॥०॥

मत वुछ त म्यानिस कर्मस कुन
 धर्मस ब्राह्मणस छुय यि द्युन पोऽन।
 म्वकलाविथ निम भगवानो॥०॥

धर्म-दान रोस्त छुस कर्म-हूनुय
 ब्रह्म-ज्जोऽ रोस्त दूशलद क्षूनुय।
 यिथि ग्वण छुस च्य वर मगानो॥०॥

आदीनन अवतार दौरिथ
 तौर्य गामत्यन भवसर तऽरिथ।
 कृष्णस ति तार हा दयावानो
 दय रोटमय चोन दामानो॥०॥

—०—

सज्जन बन मन कर कैलासय
 बस्तिथि मन्ज वनवासय रोज्ञ॥

च्यतकुय-भस्म मल वल अतलासय
 साद प्रकृच सन्यासय रोज्ञ।
 ॐ शिव शम्भो कर अभ्यासय॥बस्तिथि०॥

विषय-त्यागुक दर माघ-मासय

सत्संगकुय वोपवासय कर।
 आत्म-तीर्थ मन नाव मोह-मस कासय॥बस्तियि०॥
 पान पर्जनऽविथ पान म आसय
 सर्व-संकल्पन ग्रासय कर।
 तल-प्यठ त्राविथ त्राव तलवासय॥बस्तियि०॥
 श्रीकृष्ण महाराजन ख्यूल रासय
 गोपियि शुराह-सासय ह्यथ।
 बाल-ब्रह्मचारिय तोति नाव द्रासय॥ब०॥
 महामाया ह्यथ रछवुन दासय
 शिवनाथ हृदया वासय छुय।
 तोति तस नाव द्राव साध-सन्यासय॥ब०॥
 कृष्ण अन्दरिमि त्याग मल सूर-सासय
 न्यबरिमि राग वोल्लासय कर।
 शुकदेवस यिय वनिथ गव व्यासय
 बस्तियि मन्त्र वनवासय रोज्ञ॥

—०—

होश दिम लगयो पंपोश पादन
 हा साधन हन्दि साधो हो॥
 यूगियन हन्दि यूग प्राणियन हन्दि प्राण
 ज्ञानियन हन्दि हा ज्ञानो।
 चानि प्रसाद सऽत्य स्यद छि तप साधन॥हा०॥
 अच्यत चानि-सऽत्य च्यतकुय चेनुन
 न-त गछि मेनुन क्रन्जिल्यन पोज।

प्रेम-जल छुय वुज्जान भाव-नागरादन॥हा०॥

ब्रह्म-जन्मस यिथ छुस न ब्रह्म-स्मरच
वुछ म म्यानि राक्षस-प्रक्रच कुन।
चानि सऽत्य भक्ति च्याज कऽर प्रह्लादन॥०॥

पूरन-प्वरश छयम चऽनिय लादन
प्रणव-पान वन्दहाय पादन च्वन।
नाद-ब्यन्द कन थाव सान्यन नादन॥०॥

व्यचार-नेत्रन जऽज-गाश अन छि अज
हर हरम्बख च्यय दिमहाय वज।
निश्कल-मन निश्काम रामरादन॥०॥

अनुग्रह चोन गछि आसुन साधन
क्याह छु पापन कमन ज्ञादन प्यठ।
दय छुख त क्षय कर सान्यन अपराधन॥०॥

कृष्ण अय चानि कपटनि-तल नेरिहे
अद कति पैरिहे जाम नव्य-नव्य।
पुशि कति प्ययिहेस होन्जन त रादन॥०॥

छोंपि मन्ज आय तस छोचाह बनिहे
अद कति बनिहे जेछर यूत
याद अय रोजहस वुनि छुस आदन॥०॥

—०—

प्रबाथ हो आव अछि मुचराव
न्यन्दर मो त्राव न्यन्दर मो त्राव॥

छु चमकान आत्म-सिर्युक गाश
 न्यबर अन्दर यि च्यथ आकाश।
 मुचर अछि-दार्य मो त्रोपराव॥०॥
 छतज ह्यतिनय च्य कृहनिय कीश
 च चेनन कोन छुख वोपदीश।
 समय गव रंग बदलिथ आव॥०॥
 समय ज्ञान बांड-जशनाह ज्ञान
 गछ्यस युथ त्युथ गंडुन सामान।
 नोवुय नोव पऽथराह ह्यथ चाव॥०॥
 ज्ञानुक दीप प्रज्जलवुन ज्ञान
 व्यचार नेत्रौ वुछ शिव ध्यान।
 वुज्जिय युथ न ख्यालुक वाव॥०॥
 संगरमालन छचर सांपुन
 जगथ सोरुय ह्योतुन नांपुन।
 च म्बोख अद्वैत अऽनस हाव॥०॥
 वोद्यूगाह कर्त स्वामी स्वर
 स्यदथ पानय दिविय ईश्वर।
 सु करिय युथ च करहस भाव॥०॥
 म कर चेर फेर होशस कुन
 वोद्यूगक्य-ज्याम नऽलिय छन।
 च्यतस वुज्जनाव आलुछ साव॥०॥
 गछुन हुशार बड गथ छय
 च्य लागज क्वस लागथ छय।
 निराशन पानय गाश हो आव॥०॥

कम खाव धर्म-पादन पाव

गछ आत्म-तीर्थ तन मन नाव।

बखच-सर प्रेम पोन्याह छाव॥०॥

खगन च्वन मंज छु चूर्युम जान

ख्यथ च्यथ गछान छु ख्वश भगवान।

पतिम पहरस छु युथ स्वभाव॥०॥

खगण त्रन गछि करुन वोपवास

ग्रहस्थ त्यागुन बनुन बनवास।

छ वुनि-क्यन बस कुनुय दय-नाव॥०॥

खग-राजस छ जय-जयकार

योहय छ स्यद-दिनुक मोखतार।

चह भूगन भूग मोक्षय प्राव॥०॥

गनीमथ ज्ञान अमिसुन्द राज्य

कलस प्यठ थव व्यचारुक ताज।

कमानाह तुल निशानाह पाव॥०॥

दयस निश यलि च्वनवय चाय

दिचन प्यठ कनि अमिसय जाय।

असुन्द पानय वजर गंजराव॥०॥

खगन हुन्द अनुग्रहकुय अन

तप-अग्न पाकवन गय ज्ञन।

यिवान छुस येथ्य ख्वगस मन्ज छाव॥०॥

शोन्गुन छुय ख्वश यिवान वुनिक्यन

स्यदथ छुय दय दिवान वुज-क्यन।

यिथिस वेलस सु मो मशराव॥०॥

यिवान छिय वुछिनि कम कम दीव
ह्यसस कुस आसि वुज-क्यन ज्जीव।
स्यदच हन्दि यारबल छस नाव॥०॥

फुलय लज्य भावक्यन पोशन
मुबारक साहिबि-होशन।
यिथिस वेलस करज ह्यज क्राव॥०॥

करज ह्यन बूल्य जानावार
कृष्ण कर पोशनूलज कार।
प्रयम-सऽत्य कृष्ण गीथाह गाव
न्यन्दर मो त्राव न्यन्दर मो त्राव॥

—०—

मनें पोश लागय शेरे, पूजा करय टाछि वेरे।
आनन्दघन बोझ द्रेरे, सोऽहं शब्दावुम सोझ॥

इन्द्रिय करहय अर्पण, देह-तीर्थस प्यठ तप्रण।
प्यतरन ति शर क्याह नेरे, सोऽहं शब्दावुम सोझ॥

शुर्य बॅच बन्ध तय बांधव, सोर छम 'तत्-त्वं' अनुभव।
धरमॅच फुट तव नेरे, सोऽहं शब्दावुम सोझ॥

प्रारब्धुक भार चोलुम, अभ्यास अनुभव पोलुम।
चानि वेरि चानि अकि जेरे, सोऽहं शब्दावुम सोझ॥

जायि पथ जायि वुज वुछहथ, मायि भडि मायि नाल
रटहथ।

सोन वुगुन ति समिसँय फेरे, सोऽहं शब्दावुम सोऽज्ज॥

वारँ वुछ वुछ वारँ वुछहथ, वुछ वुछ वुछहथ तँ वुछहथ।
वुछवुन नोनँ क्याह नेरे, सोऽहं शब्दावुम सोऽज्ज॥

यिय छुख तँ तिय छुख पानस, यिय छुस तँ तिय छुस
पानस।

पॉजपान पननिय वेरे, सोऽहं शब्दावुम सोऽज्ज॥

युसँ विज्ज यमि विज्जि आसे, सोय विज्ज तमि विज्जि भासे।
विज्जि विज्जि वुज्जवुन चूरे, सोऽहं शब्दावुम सोऽज्ज॥

कर्य कर्य करवुन करि क्याह, पर्य पर्य परवुन परि क्याह।
करनस तँ परनस पूरे, सोऽहं शब्दावुम सोऽज्ज॥

पूर कर पवनस तँ पानस, शूभ क्याह यथ वॉजवानस।
फालव ति पॉजपान फेरे, सोऽहं शब्दावुम सोऽज्ज॥

—०—

संसार छुय मुह जंजाल, वासना गाल वासना गाल।

अँस वहरिथ छु काल शाहमार, वासना गाल वासना
गाल॥

वासना छय शोंगिथ शाहमार, वासना ज्ञन त यचकोल
ब्यमार।

विषयन वुछिथ गछान हुशयार, वासना गाल वासना
गाल॥

अज्ञानँच छि गँज्य वुहवुज, काम क्रूध छुख पाकँनावान।

भूगान छु तथ जीव कंगाल, वासना गाल वासना गाल॥

बाज-गशें फेर शिव-भाव प्राव, सोरुय जगथ म्य मंज
द्राव।

प्रथमाभासँ परज्जनाव लाल, वासना गाल वासना गाल॥

अँथ्य थानस वनान छि श्मशान अति रोज्ञान पान
भगवान्।

वीद्य गॅलिथ भस्मा मोचान, वासना गाल वासना गाल॥

अति नो रोज्ञान छि छल बल, अति नो रूद कामुक
बल।

अँथ्य ज्ञागि रोज्ञ रोज्ञि नो काल, वासना गाल वासना
गाल॥

विषयव सँत्य मेलि नो दय, नज्जि बनि अमि सँत्य पापन
क्षय।

यि छि सॉरय वासनायि हंज चाल, वासना गाल वासना
गाल॥

—०—

जाफर्य पोशस छु लक्ष्मी अंग तय
सोऽन सुन्द रंग तय पूजायि लाग॥

सऽत्य देव लक्ष्मी नारायण तय
सर्व देव-ज्ञाथ कासि दुर्गथ
पोश पूज कर तस भक्ति-भाव मंग तय॥०॥

मादलि हियि पंपोशन ढेर कर
तुलसी छाऽव्य शेरतस पान
सोन्दर ड्यक्सऽय द्योक लाग कोंग तय॥०॥

सोय दियि मोक्ष ब्ययि भक्ती-भाव
धारणा ध्यान ज्ञान यूग व्यचार
वसनस नाव खसनस क्युत प्रंग तय॥०॥

सत्त्वरुषन निशि ह्यछ करुन भक्ति-भाव
पान थव दास-भाव तिम बरहंग तय॥०॥

यूत ज्ञानख त्यूत पूजि मंज लीन बन
भक्ति-भावस मज्जं अऽधीन बन
सुय छुय रुत साथ सोऽय रऽच जंग तय॥०॥

सोऽय दया मंगतस भक्ति-भावस सान
योऽस कासि राग देह-आभिमान
व्यवहारन छख ओनमुत तंग तय॥०॥

ज्ञान कुलिसँय छिय शम दम लंग तय
शान्ती मूल मोक्ष त्युहुरुय छुस
ख्यत भक्ति-भाव रस भरिथय टंग तय॥०॥

ब्रह्माँड पान ज्ञान वार सैरस नेर
सारिनय तीर्थ-यात्रायन फेर
जोर मुचराव च्यथ-तोरगस डंग तय॥०॥

—०—

क्याह ह्यक वनिथ ज्यवि प्यठ अनिथ
सुय ज्ञानि यस युथ बनिथ आव॥

घरिय ओसुस छ्यनिथ त छटिथ
यादय प्योमो तस म्योन नाव।
मस गोस कस ह्यक अन्दरिम प्रनिथ॥०॥

च्यथ बुद्ध मन प्यव वतिय छयनिथ
 दृश्युक छुय अत्यन्त अभाव।
 तति क्याह मन स्वरि ज्यव ह्यकि वनिथ॥०॥
 थिम गोम सनिथ तिय गोस वनिथ
 क्या म्य रोस्त नय अख हवाव।
 सन्तन त साधन यहय कथ छि ननिथ॥०॥
 केहं मुननय केहं मुनन छि छटिथ
 केचन वुर वुगरह केचन पुलाव।
 तस त्युथ मज्ज युस युथ ह्यकि रनिथ॥०॥
 तन मन धन छुन ग्वरन कऽनिथ
 परवाय न केहं लूख तुल्यतन ति टाव।
 मालूम तस युस छु दीह निश तनिथ॥०॥
 गोवेन्दन वोन बनिथ त सीनथ
 अद नैज पऽठिय बाज्जार द्राव।
 म्बोल कम न गछान किबरय छॉनिथ॥०॥

०

आहमो रोगे रोगे, जोगे मति मस्तानय।
 ज्ञान हा ओस अभिज्यथ साथय॥
 कोरथम च्य शक्तिपातय
 नतें ना ओस मोकलन पायिय।
 जोगे मति मस्तानय॥०॥
 गंगा जटि छय जऽरी
 करथम च्य पननिय यऽरी।

पादन लगय पार्य पारिय॥०॥

भक्तिवत्सल ही निर्मलय

चऽनी कल छि निष्कलय।

मूक्षदाता सर्वमंगलय॥०॥

ड्यकसय छुय चन्द्रमय

सुय वुछिथ चोलमो म्य गमय।

हृदयस आव परम शमय॥०॥

गटिसँय कोरथम म्य नाशिय

प्रथ तरफ गाश छु गाशिय।

दासन छि चऽनिय आशिय॥०॥

कोरथम च्य मे प्रसादय

सीव चऽज पम्पोश पादय।

सीवै-वैज छि संत तय साधय॥०॥

चानि दर्शन चोऽल म्य होलुय

चँय म्यऽज मऽज्य तय मोलुय।

च्यय हवाल गोवेन्द कोलुय

जोगे मति मस्तानय॥

—०—

दय नो वुछान यालि चालि ग्राये

वुछान सु अन्दरिमि राये कुन।

दय नो वुछान अथ बुथ छलनस

वुछान सु मनि दँय चलनस कुन।

वुछान न दय प्रनि-क्रेहनि कायाये॥०॥

दय नो वुछान वननस त प्रननस
वुछान सु सननस त सोरनस कुन।

दय नो वुछान धन-ध्यार-दाये॥०॥

दय नो वुछाय कम-ज्याद परनस
वुछान सु तथ अमल करनस कुन।

दय खोश स्यजरस पजरस माये॥०॥

दय छु न वुछान वर्णाश्रमस
वुछान सु मिटनस भ्रमस कुन।

संशय गलनस ब्ययि वासनाये॥०॥

दय छु न वुछान रँच कथ करनस
सु वुछान ज़िन्दय मरनस कुन।

धर्मव मंज वुछान छय अहिंसाये॥०॥

दय नो वुछान जाऽच तय नावस
वुछान सु भक्ति-भावस कुन।

माये वुछान खोऽत पूजाये॥०॥

दय नो वुछान ख्यनस त चनस
दय वुछान छियो मनस कुन।
यस टोठि तस वुछिने कर्मलीखाये॥०॥

दय नो वुछान ब्रथ न्यति धरनस
वुछान छु सुय शरणस कुन।
गोवेन्द वोरणै दयि सन्जि दयाये॥०॥

रंध मो दि अथ गंध पानस
अमि साबनि मल नो च़लिय

अथ तस्बी वलिथ जन्दै
अमि फन्दै सु नो मेलिय

असलस कमीनस खसलथ नने
कावस क्रहन्यार चलिनो ज़ांह

काव ते छलिहे सऽत्य साबने
कावस क्रहन्यार च़लिनो ज़ांह

—०—

कष्ट कास्तम भगवान हरे
सन्तुष्ट रोज़तम गऽरि गरे॥

भ्रमचे वुनले वुजरोवुस
मोह छटि अनिगटि वति रोवुस।
च़्यय रोस्त कुस म्य अथ रोट करे॥०॥

भवसर क्रिमनय रटिनम खोऽर
कमज़ोर लऽगिथ गोस कमज़ोर।
छाम्बरि लोगमुत छुस छाम्बरे॥०॥

वेरि बो लागय शेरि पम्पोश
गद् गद् वाऽणिय थावतंम गोश।
वद्य वद्य यच़ छम म्यच़ मा हरे॥०॥

वैकुण्ठ प्यठ यित ननँवोरुय
गरुडस खसिथ त्रऽविथ सर्वोरिया।

म्बकलावतम संकटचे थरे॥०॥

संकट मंज तस प्रह्लादस

कन थाव-तस अऽर्चर नादस।

हिरण्यकष्यप अद मद उतरे॥०॥

हंग आख द्रौपदी नंग नछथस

नंगें वुछुनकु तस सामरथ कस।

रंग रंग आव बरनें जाम तस हरे॥०॥

लक्ष्मण! छारुन परमानन्द

चराचर युस पोशि अन्द-वन्द।

लोलो करान नेरि ओऽन लोलरे॥०॥

—०—

घरि घरि पूज कर गुरु पादन तय

भट्ट इकवटें रठ मन तय प्राण॥०॥

गुरु छुय ब्रह्मा जी आसन तय

गुरु छुय सत् किज श्री भगवान।

गुरु छुस महेश्वर आस मानन तय॥०॥

गुरु शब्दस प्यठ वारें थाव कन तय

तारें तर च मारसर पननुय पान।

जरि जेरि क्याह आसि नाव नेरन तय॥०॥

सोऽहं हम पज्जि रज्जि लमुन तय

बाल रठ च नाव छुय वावें अज्ञान।

लबि रोज आसख तार लबन तय॥०॥

सुलि च वोथ प्रथ प्रभातन तय
करतँ कर च वर त थाव पय लय सान।
खय कास मनकिस आईनस तय॥०॥

पार दिस नख तल यलि रोजि सोऽन तय
रऽविथ आसख मोख्त लभान।
म्वचि पथ कुन म्वचि रूप बदन तय॥०॥

काम क्रूथ लूभ मूहन तय
राजस ताराज करिहे जान।
दानँ दातँ अऽसिथ छुख बेछन तय॥०॥

ब्रह्मण जन्म किज छुख च भ्रमन तय
ब्रह्म अख तँ माया ब्याख ज्ञानान।
पनस सऽत्य डींज ज्ञान डेंजि सऽत्य पन तय॥०॥

परमानन्दसय गोन्दि लक्ष्मण तय
वन्दतस वन्द जुव तय जान।
तव आसि परमानन्द प्रावन तय॥०॥

—०—

यस निश सु प्रकाश द्राव नोनुय
तस जानि जानस द्यू वोनुय॥

हरदम ओमस लय च कर
च्यथ नाम तोरगस तय च कर
दोर त्राव ब्रोंठ तोत छु वातनुय॥०॥

ओमस त पानस लय च कर
ओम पद सऽत्य पान सर च कर

ओम रोस्त केहं छुन लारनुय॥०॥

हरम्बख तस गछि लारनुय

गुरुम्बख सुय गछि धारणुय।

सार छुनें संसारस युनुय॥०॥

मन्ज मयखान गछि मय चोनुय

पय ह्यथ थानस वातनुय।

जाम छिय ब्योन ब्योन त मय कुनुय॥०॥

ज्ञान कर च पानस छुख च क्याह

ओसुख क्याह तय आस क्याह।

हाह ज्ञान तोत छा तूरुनुय॥०॥

ह्यकखय च लाय डुंग सोदरस

अथि ह्यथ दुर्दान बोऽठ च खस।

यछि कस लालस मेलनुय॥०॥

वासुदीव सऽखी प्राव मनस

न्यथ छुसय प्रारान दर्शनस।

ओऽन क्याह ज्ञानि जग तय प्रोनुय॥०॥

—०—

सोऽख शब्द दर्शन चाने

आनन्दघन टाठि म्याने

राथ-द्यन करान छुस च्यन्तन

क्षण-क्षण छुम म्य चंचल मन

ईश्वर दूर्यर चाने॥०॥

राग चोन युस म्य छुम मनसय
सात सात रातस द्यनसय
म्यऽज दुःख च्य रोस कुस ज्ञाने॥०॥

राजन हन्दि महाराजे
टाठि म्यानि आदन बाजे
लीखिथ म्य क्याह ओस लाने॥०॥

योदवय च म्याज कथ बोझख
दूरि दूरि चूरि क्याज्जि रोज़ख
रोज्ज चूरि हद्-गुफायि म्याने॥०॥

यचकोल च्य तें म्य दूर्यर
किथ ज़ोरुथ यथ कोरुथ न पूर्यर
अद कर यि ज़ट यलि प्राने॥०॥

ओसुस ज़लें बॅय निर्मल
मूह कठकशि कोरनम म्य छल
वचिनम कचि शीनें माने॥०॥

त्रेशि हतिस मनसॅय त्रेशा
अमृत वर्शुन बॅ डेशा
गलि शीन अकि कटाक्ष चाने॥०॥

कर्म किज वेश कऽत्य दऽरिम
गर्दभ बुथि भाँर्य सऽरिम
वृषभ वीश तलें अलबाने॥०॥

कामनायि ओतुर कोरॅनस
अमृत भास्योम दीहॅ रस

श्रोपॅरोवुम म्य दानि दाने॥०॥

कन थोवुम नॅ सतगुरु शब्दन
ज्जर चोनुम खोऽद्य प्रारब्धन
कर्मव कोडुस परनि छाने॥०॥

अऽर्तिस चाव अमृत रस
संसार निशि बनि मूक्ष तस
बनि नोऽन अनुग्रह चाने॥०॥

—०—

शोकरो डुंग लाय सोदरस
महरम गछ्ख दुरदान सय
दुरदान बॅ ति कोताह ज्जरय
सूर गोम चाने दूर्यरय॥०॥

अथ दर्द बागस अछतो अन्दर
च्चशर्वेय तरफव त्राव नज्जर
बेसर छि फेरान दर-बॅ-दरय॥०॥

अथ दर्द बागस अछतो अन्दर
च्चशर्वेय कूजव त्राव नज्जर
नज्जराह त्रऽविथ जल नेर न्यबर॥०॥

दोऽद छुम म्य जिगरस हाव कस
दऽर छम न मुचरिथ हाव तस
अंदरिम दोऽद गोम अन्दरय॥०॥

—०—

शरीर ज़ोलनम अम्य हा लोलनारन
 बे आरस आर नो छुये
 शरीर ज़ोलनम अम्य मदनवारन
 बे आरस आर नो छुये॥

प्राण ज़ोलनम पवर्नेकि नारन
 शशिकलि हुन्द म्य नार छुये
 समाह कोरनम म्य ओंकारन॥०॥

लँयि लोसम म्य तोसँ चारन
 रुम चार्यमस म्य मोये मोये
 दमकिय पन ज़न छस खारन॥०॥

बडि मनसर यार छुस बँ गारन
 मा ईश्वर अथ मन्ज छुये
 काम-क्रूध-लूभ-मूह छुस बँ थारन॥०॥

बुछत मारँ कऽत्य कर्य अहंकारन
 नार गोंडनम हा मोये मोये
 फान कोरनस अनफासँक्य नारन॥०॥

बदन ज़ोलनम अम्य मदनवारन
 हय व्यसि यार यियम नये
 व्यचार मनसर गारहोन व्यचारन॥०॥

शास्तर बल छुसया गारन
 नॉल्य दासस शास्तर मा छुये
 शास्त्र बरसर ताज दीन दारन॥०॥

अज्ज वाति बूजुम मोल म्योन कोसम वतन वथरावसय।
लछ ज्ञन डुविथ सन्ताप पाप अन्तःकरण घर्नावसय॥

ठोकर कुठिस मन्ज रंग रुत प्रंग आदरुक पैरावसय।
सोम्बरिथ रसिल्य रऽत्य कर्मफल मस खॉस्य बर्य बर्य
थावसय॥

अशि गंग वाने खोर छलस रुमालि गुमँ वथरावसय।
तिम पाद हृदयस मंज रटिथ द्वख दऽद्य जन्मकि
बावसय॥

भावुक घन्यर लोलुक सन्यर वऽलिंज मुचरिथ हावसय।
नोवँ नागरादस सोन्थ ज्ञन श्रेह मायि हुन्द वुज्जनावसय॥

ग्वर-भावनाये सऽत्य शेर नोमरिथ खोरन तल त्रावसय।
घरँ-बार तय आसुन बसुन सोरुय पनुन पुशरावसय॥

गट-पछि चन्दर ज्ञन नाम रूप अख अख कला
व्यगलावसय।

सिरियस अन्दर लय प्रावि जून सार्यय बनन त्यच
मावसय॥

— ० —

वुछिम गथ चॉज दैवागथ च्य ब्यन दय नो सरय लो लो
म्य अन्दर कर पनुन मन्दर बँ च्यय पूजाह करय लो लो।

बँ चाने वेरि सोम्बरावय अछव किन्य रंग रूपुक रस
कनव किज शब्द-साजुक मस अनिथ खास्यन भरय लो
लो।

म्य कुन वुछ वुछ असान छुख दूरि रूजिथ आसमानन
मंज

गुपिथ छुख दास्तानन मंज यि दूरि नो जरय लो लो।

फिजा त्राजविथ म्य खनिर्मय जिस्य जमीनस तल तें पूरेंज
छिम

स्यठा देवार लूरेंज छिम च्य रोस्तुय क्याह करय लो लो।

बें छुस पोंपुर च्य दीपस पथ चटिथ यिम जाम करहा गथ
दिहमनय जाम चटनस वथ क्योमा हू मा मरय लो लो।

नितम पम्पोश पादन तल तिमन हुन्द बम्बुरा सूजिथ
कंडययन प्यठ छुस मरे रूजिथ बें चाने आसरय लो लो।

जमीनस जन्मकिस वविर्मय अशिकि दुर्दान केंह बुविर्मय
अछिन मंज छिम रछिथ थविर्मय तिमय खावे जरय लो
लो।

यिमन जोयन अन्दर योदवय छु चाने सहज धर्मुक जल
बठयन हुन्द छुस सम्योमुत मल म्य चावुम आगरय लो
लो।

पनुन मे तीजकुय आगुर यिमन जर्न अन्दर भासुम
कुन्यर भाजविथ यि दैय कासुम घटे हन्दि गाशरय लो
लो।

— ० —

स्मरण पनज दिचऽनम लोलुक निशान व्यसिये
रछरुन तोगुम न रोवुम ओसुम नैं बानैं व्यसिये।

पथे कालि छुम न द्युतमुत स्वनें म्वोक्त दान व्यसिये
अनि सारि क्याह लबस वोऽज तिम म्वोक्त दान
व्यसिये।

वाऽलिंजि मन्ज थवुन गोऽछ हावुम थोवम अथस प्यठ
राह कस छु कोऽर म्य पानस नोक्सान पाने व्यसिये।

हावुन छु रावरावुन चाबुक समर छु खामेय
थावान छि छाव बापथ बानन जि ठान व्यसिये।

यनें सुय निशान रोवुम तनें मच गामेच त फलवाल
न्युन ह्योन न केह ति फेरान छुस वान वान व्यसिये।

यछ पछ म हार व्याखा ह्यथ योर वाति कांछाह
तस छा कमी निशानन भय भय खजान व्यसिये।

डोलान कोहन वनन मंज शोलान छि गुलशनन मंज
जोतान छि तारकन मंज कऽत्याह निशान व्यसिये।

व्यसरिथ डलिथ पथर प्यथ बुथ क्याह दिमव तमिस
निश

पथ फेरनुक पकान छा युथ हू बहान व्यसिये।

मानव जि अस्य ह्यमव पथ छोर्या तसुन्द मुहब्बत
पैबन्द यि आदनुक छा शुर्य दोस्तान व्यसिये।

दिल फुटिमत्यन सु तोशान यऽच गरिमत्यन छु रोशान
गछ वरिमत्यन सोदामन पृछ गाघिबान व्यसिये।

अन्ध पख्य तती छु आसान बोऽद्ध बोर सूरदासुन
बोज्ञान छु माय लाऽगिथ लोलुक तरान व्यसिये।

पानय म्य पान हाऽविथ आशायि धारनाऽविथ
तनहा चोलुख म्य त्राऽविथ कस म्यानि जूगिरायो।

वुछनाऽवथस मनुक मल स्वोन म्योन द्राव सरतल
वुछमख न वार कोरथम चस म्यानि जूगिरायो।

ह्यकखय वुछिय च तिम छोऽख मुचरिथ यि सीन
हावय

चय वन चयय रोस भावय कस म्यानि जूगिरायो।

यव किन्य बेस्वम छि कोमल हृदयस कठोर वाणी
ग्रावन दिमव यती छ्यन बसँ म्यानि जूगिरायो।

लोबमख त वोऽज मँ रावुम बालन काहन मँ छावुम
सत्संग प्याल चावुम मस म्यानि जूगिरायो।

भगवान सोन बूजिन असि चाऽन्य आशि रूजिन
हथ वांसि माजि माऽलिस लस म्यानि जूगिरायो।

न्यथ इष्टदीव सन्धन पम्पोशि पादनँय तल
बोम्बुर बनिथ चवान गछ मस म्यानि जूगिरायो।

दयि सुन्द प्रसाद सत्जन भख्यन छि बाऽगरावान
लोलुक चवान त चावान मस म्यानि जूगिरायो।

पजि लोलके प्रभावय भूगान स्वख त सावय
नीरूग राज यूगस खस म्यानि जूगिरायो।

वोपकार म्यानि बापथ थोद योग पीठ त्राऽविथ
असि निश ति क्यूंच कालाह वस म्यानि जूगिरायो।

यवँ किज च परम त्यागी लोग छुख न राजदरन

यथ फुटिमतिस मनस मंज बस म्यानि जूगिरायो।

भाषण मोधुर्य मोधुर्य कर फुटराव शक्करसँ म्वल
अभिमान कोसमन हर अस म्यानि जूगिरायो।

— ० —

आमच मनस रँच वासना ईश्वर सफल करिना सना।
एकान्तकिस गहलिस अन्दर उपरामकिस शिहिलिस
अन्दर

पम्पोष पादन द्वन मलान पननिस ग्वरस बो
आसहा॥०॥

पूजायि व्यध केह ज्ञान मा लोलस निषध केह मान
मा

छ्यपि चूरि कुनि म्यूठा दिवान लोतँ तथ खोरस
आसहा॥०॥

यचँ लोल अछ वछ थाववुन अछ टींटी रोस्त ओश
त्राववुन

सुन्दर मोखच कान्ती वुछान तस सोन्दरस बो
आसहा॥०॥

वाणी तसज विज्ञानमय ज्ञन साम ग्यवनस पानँ दय
तन मन बनित्थ कन बोझवुन मधुरिस स्वरस बो
आसहा॥०॥

सत् शब्द नोन व्यस्तारिहे उद्गीथ स्वर योद खारिदे
करवुन मनन सादुल चवान श्रवणुक सु रस बो
आसहा॥०॥

बूजिथ श्रवण पादन प्योमुत संसार निश म्वकलिथ
गोमुत

पुशिरिथ पनुन सोरुय जगत परमेश्वरस बो
आसहा॥०॥

वुज तात्! वन्य वन्य गारिहम करपद्य हृदयस सारिहम
जल-बिन्दु ज्ञन मीलिथ गोमुत सोख सागरस बो
आसहा॥०॥

— ० —

पांछ दोह यावननि श्रावणनि सूरी।
यी बूल त्याग कस्तूरीये॥

मत्तें वुछत संसारचि शोभायि कुन
मत्तें वुछत देह स्वन लंकायि कुन
वद्य वद्य गयि लद्य लद्य लूर्य लूरी-यी बूल०

संसार वन छु कस लारि क्याह यस छु तस
जेठुन छु ब्रेठुन बस कर बस
यति प्यव सारिनय पुशि पूर्य पूरी-यी बूल०

व्यवहार बोज्ज सोस्त अन धन द्वार सोस्त
गाटजार सोस्त ब्रह्म व्यचार रोस्त
मूज हिव्य गयि हूज ज्ञन वूर्य वूरी-यी बूल०

त्याग वैरागुक बन अधिकाऽरी
संकल्प विकल्प साऽरिय त्राव
ममता पत्तें थाव वथ युथ न दूरी-यी बूल०

मोह जाल मंज नेरनुक वोपया

कर, राज्ञ हंसुन साया त्राव

अमर नाथचिय जानवर जूरी-यी बूल०

क्रिययि खोऽत छुय शुद्ध वासनायि फल

पूजायि खोत प्रेमस तें मायि फल

कृष्णस रायि चानि आयि मन्जूरी-यी बूल०

— ० —

हे दय! बोझ कनय च्यय रोस्त कस बॅ वनय।

करयो अरचनय च्यय रोस्त कस बॅ वनय॥

संसार आवलुनुय यि छु सनि खोत सोनुय

अथ्य मन्ज आस ह्यनय च्यय रोस्त कस ब वनय॥

चोवनस मोह मसय रूढुम न ध्यान ह्यसय

वोनमथ गोस तनय च्यय रोस्त कस ब वनय॥

हरुम म्य कष्ट हन हन हरि-हर छुख थवुम कन

आऽरचर आलवनय च्यय रोस्त कस ब वनय॥

सूक्ष्म निर्मल करुम व्रथ प्रत्यक्ष पाऽठिन ब वुछहथ

सऽत्य ज्ञान लोचनय च्यय रोस्त कस ब वनय॥

च्यतस सोय कल करुम पूर अज्ञान मल गछ्यम दूर

हे टाठि निरञ्जनय, च्यय रोस्त कस ब वनय॥

पादन तल ब प्यमय चाऽनिय तोता करय

वार वार आर अनय च्यय रोस्त कस ब वनय॥

वासनायव नाल रोटहस संकल्पव ब चोटहस

कोडहस पन पनय, च्यय रोस्त कस ब वनय॥

दितम सत्संग म्य हरदम यियम शान्ती त शम-दम
बनिथ आज्ञाद बनय च्यय रोस्त कस ब वनय॥

विष्ण थवतन समाधान चलयसद्यवँ देह अभिमान
मंगन छुय क्षण क्षणय, च्यय रोस्त कस ब वनय॥

— ० —

यियि कति भक्तिस मनि मन्ज भाव
दियि नय दात यस मंगने द्राव॥

अनुग्रह पननुय अनुभव रूप
अनिस अनिगटि क्याह करि दऽप
बुछि सुय यस दपि अछ मुचराव॥०॥

स्वर्गस छि मुचरिथ दारि त बर
अछ रछ नचवनि तथ्य अन्दर
हरि युस थरि गुल सुय करि क्राव॥०॥

दयि लोन कम्य ज्ञोन पर्जनऽविथ
ह्योकमुत छु कम्य कस सीर भऽविथ
सोदरय मंज वाव तार्यस नाव॥०॥

चन्दकुय रावि तस यस न दियि दय
द्रॅल्यदस संचित पोशस न वय
रोऽनमुत अन् कति तस ह्ययि छाव॥०॥

करवुन हरजुव पौज पानय
पजि युथ समयस सामानय
कर्म खुर यस यियि तस क्याह ग्राव॥०॥

परमानन्द वन्तं सुदामुन
दोऽदरिथ कुलिसय यिया बामुन
हरदय सदी पोश फुलनाव॥०॥

— ० —

रामकृष्ण मनसैय मन्ज वथरावय
भावय पननिय गोसँ तँ गम
पम्पोश बागस मंज वथरावय॥०॥

चतुर्दल छुख गणपत नावय
मूषक वाहन दुर्ग नासम
मूलाधोरी दार वथरावय॥०॥

षठदल ब्रह्मा बडि प्रभावय
हम्मस खसिथ छुम चोन आश्रम
षोडष थान थान वथरावय॥०॥

दशदल कृष्ण छुख बडि चिकँचावय
गरुडावाहन निश न वेश भ्रम
मन पूरख पूरय वथरावय॥०॥

द्वादश दल निर्मल स्वभावय
वृषभवाहन अलख तँ आगम
अनाहत मण्डलस मन्ज वथरावय॥०॥

षोडशदल मन मूढ स्वभावय
दीव छिय वखनान जीव आत्म
विशुद्ध चक्रस मन्ज वथरावय॥०॥

द्वादल परम आत्म गुण गावय
यूगी छि तति करवँज शम त दम
आज्ञा शिखरस मन्ज वथरावय॥०॥

सहस्रदल सँय शेर पादन तल त्रावय
गुरु-वाक्य सऽतिन वथ म्य हावतम
ब्रह्मरन्ध्रस मन्दरस वथरावय॥०॥

जऽज हन्दि जल सऽत्य थलरावनावय
सर जन पम्पोश मन म्य फोलिहेम
मन म्योन मन्जुल लोति लोति अलरावय॥०॥

हाल म्योन भऽव्यतव तस रामकृष्णस
आरकऽच दाँसी प्रारान छस
लछनावि मन मन्जलिस वथरावय॥०॥

शेछ्य म्यऽज नियितोस बुलबुल तँ कावय
अछबल बागस मन्ज यियिहेम
लछनावि गछ कुठि मन्ज वथरावय॥०॥

परमानन्द प्राव सोख तय सावय
गुरु-म्वोख मानुन छुय सोऽहम्
मान-अवमान निश रोज निर्मावय॥०॥

—०—

कर्म भूमिकायि दिजि धर्मुक बल।
संतोष ब्यालि भवि आनन्द फल॥

द्वयि प्राण दान्द-जूर्य द्यन त राथ वाय
कम्भक कर जोर तिम नँय लाय

हिल कर युथ न बीठ रोज़ि कांह र्यल॥-सं०

लोल के अलफाल तुम नऽविथ
धैर यट फुरि दत फुटरऽविथ
वैरुक स्नेह युथ न रोज़्यस तल॥-सं०

व्यचार बऽठ्य त बेर लऽदिथ क्यथ
श्रुच यन द्यव शोज़रऽविथ वथ
समदृष्टिपात ज़न पद फेरि ज़ल॥-सं०

सोन्थ छुय दोह तारें मोऽत यावुन
पज़ि नज़ि साथा रावरावुन
वव ब्योल मव प्रार करू मंगल॥-सं०

त्रपुरिथ स्फुरनायि नाऽम्य वुडर
सुरके रबि च़ख सऽतिन भर
इन्द्रिय गगरन करू वट्ठल॥०-सं०

भक्त्य हज़ि न्यंदि फेरि साधनायि खीत्य
ह्यलि नेरि तपके पप सग सऽत्य
संभावनायि फोऽलि पंपोष डल॥०-सं०

विषये पऽश वऽर रछिनावुख
तिमनय अथि युथ न खीत्य ख्यावख
भावचि रावछि नेर निष्कल॥-सं०

ह्यलि यलि नेरि त्यलि संपन्यस क्राव
वैराग द्राति सऽत्य लून्य लून्य त्राव
संबन्ध रोस्त मऽव्य लाव्यन वल॥-सं०

मटि खसँनचि रज्जि मटि मटि सार
साधनि अनँ भऽय बन्ध तँ यार
न्यति नेम सुमरिथ अद समि खल॥-सं०

त्रिगुण त्याग नोम अख ग्वणि लद
निर्मान प्रावख निर्वान पद
शम सऽत्य तम दित त कर कुशल॥-सं०

ध्यान धारणायि वान मुड विस्तार
ज्ञान दान खास खास घास निश चार
मनके अनुभव वार दित छल॥-सं०

त्यागके अर्थ सऽत्य वार छोम्बनाव
प्रोऽन तँ जग भ्योन भ्योन फुट ज्ञन थाव
ज्ञागि रोज लागनयि त्रऽविथ ज्वल॥-सं०

तूलिथ अद थव अम्बरस माल
सोऽहम् हायक सऽत्य नख वाल
लोति भार वातनऽविथ खनबल॥-सं०

शम दम यम नेम घाट वात नाव
शान्ति श्रद्धायि जल पकनाव नाव
पानस शिहलिथ मानसबल॥-सं०

लागँनयि वालि माल आगस तार
खाऽल्य युथ न रोज्जि हाऽल्य जागीरदार
फाऽज्जिल त बाऽकी नेरि कस तल॥-सं०

चौरिथ ब्ययि ब्यथि सन्ध्यथ थव
सोन्थ येलि यियि त्यलि फलि फलि वव

उपकार वोपदिय नोव नोव थल॥-स०

योग मायायि हुंद भूगी आस
यी छय दुय तस सऽत्य ति कास
साधु नाव प्योय तय स्वादँ मो डल॥-सं०

कर्मफल सोरिय गुरुशब्दय
संच्यथ क्रियमान प्रारब्धय
कर्मकांड वनि नेरि ज्ञान वुज्जमल॥-सं०

स्वयं प्रकाशिकि विज्ञानय
त्राऽविथ मान भियि अभिमानय
प्राऽविथ रोज्ञ द्वादशान्त मण्डल॥-सं०

परमानन्द ओस जमीन्दार
हूरिथ धन द्वार सूरिथ लार
वांगऽवारिच चृजिस गांगल
संतोष ब्यालि बवि आनन्द फल॥

— ० —

पांचू त्रे भागलिस करारदादस
वादस ज़्याद न ज़ि कम॥

फिक्रि टोंगँ मनकिस नागयरादस
ज़िक्रि नेरि आबि ज़मज़म
शीरिनि पत गोऽल पान फरहादस॥०॥

करखय गंगुल नव आबादस
प्रानि हाचि तुलनय न नम
ख्वद आबाद कर मो प्रार कादस॥स०

कमविथ करिजि होश दीशि फसादस
 ऋषि अमि रऽशि चम निशि
 कऽमिल्यो कमविथ वातख स्वादस॥०॥

चख त्रऽविथ चख त्राव कमादस
 नयि मंज लबख ज़ीर बम
 तुल कदम स्वम पख वातख मुरादस॥०॥

गऽलिथ गरिजि फाल किब्रँ पौलादस
 सिब्रँ हालि ज़ोर ज़ोर दम
 मो खार शाह वात खार उस्तादस॥०॥

म्य दप्योव बहाव वात्यम दादस
 करिहेम छोकन मरहम
 यस दिन तस यिन तोरय नादस॥०॥

दिमँ क्याह जवाब करिमँतिस वादस
 लोसुन दोह ह्योतनम
 गछिमय बखशिथ वुछम इरादस॥०॥

दिलसऽफी छय मर्दि आज़ादस
 नंदस छे बंदगी कम
 फरियाद-रस वात म्याऽनिस दादस॥०॥

—०—

अर्ध रातन गुल्य गण्डिथ बोजि ज़ार म्योन
 माऽज्य भवऽनी अज़ करतय चारँ म्योन
 आदि म्योन तय अन्त म्योन, आधार म्योन
 सायि म्योन तय, सार म्योन, शेहजार म्योन॥०॥

अहमका तय अन् पढ़ा तय जऽहिला
गॉफिला तय शर्मिसारा नॉदिमा
होल जिगरुक कास, ब्ययि अन्धकार म्योन॥०॥

जान्-निसारा दर्दि-दिल ह्यथ दर जिगर
पापे-कर्मव अऽर करेमँच छम मगर
पापे-घटि अर्थे रोट करुम, सरदार म्योन॥०॥

हांऽगिन्या छस म्वल म्योनय छुय पता
अख कतरा चाऽज नज़राह छम स्यठा
चय गौहर चय दोरे शेहजार म्योन॥०॥

रूस्यकँटा नाफ ह्यथ छस दर-बे-दर
असँलचिय मॉज्य मा म्य छम बुनि केह-खबर
चँय ज्ञान तय चँय हय म्वक्तय-हार म्योन॥०॥

तंग-दस्ती शर्मि-सॉरय तय हचर
सोरबुन दोह अन्त रोस्तुय छुम सफर
आद्य-शक्ती जान वोज इसरार म्योन॥०॥

साधवँय तय सन्तवँय तय ज्ञॉनियव
यूगियव तय पण्डितव ब्ययि पॉटियव
मॉज्य लगयम कांसि नय रोऽट भार म्योन॥०॥

दोह कलस प्यठ योर बे वाऽचस शामनय
मुर वऽहरिथ त्रिथ बे लॉयिथ जामँनय
खाऽल्य बे नेरा यति भरिथ दरबार चोन॥०॥

दामनस तल मॉज्य रछतम परदे सान
लूक-पामन युथ न लगियय म्योन पान

चँय सम्पत चँय हय भवसर तार म्योन॥०॥

सॉयिला छुस शान्तरूपी बोज़ सदा
अर्थ छेऽन तय न्यथनोन आमुत गदा
शक्तिरूपी वोज च्य यिधिनय आर म्योन॥०॥

सर पथर पादन तल म्य त्रोवमय
होल जिगरुक हाल पननुय भोवमय
दयारूपी जय च्य छुय बारबार म्योन॥०॥

—०—

ईकुत म्य भास्योम पननिस पानस
जानस जुव किथँ हवाल गव॥

सरँ कोऽर यि संसार, कुनि छुस न बोठ तँ तार
अपजुय छु वाऽज्यगार बाजि खेलान
काल मो रावराव डाल द्यू पानस॥०॥

दृश्यमान जगथ भान सोरुय छु अनजान
कर अनुसन्धान रठ मन त प्राण
सऽलि डल करिथ सोनँ लांकि ब्यह ठिकानस॥०॥

सत्संग सब ब्यह डबि डालानस
निःसग भाव बोज़ साज सेतार
कल थाव छल मा गछि बेगानस॥०॥

सोज़ बोज़ दिलकुय रोजू ठिकानस
न्यबरिमि राग रोज़ जाग ह्यथ न्यथ
पानय खबर ह्यू पननिस पानस॥०॥

संसार ज्यन द्वार सोरुय षठ व्यकार
गुण भागयि निशि छुस न मोकजार
चित विकास फोल्लराव चित द्यू पानस॥०॥

नेर न्यबर अछ अन्दर हेरि बोन कर नज़र
जेर ज़बर युथ न गछि बेखबर
वोन द्यू पानस साँऽल कर जहानस॥०॥

मस्तान प्योमुत देवान गोमुत
लूकन निशि बेकॅल बन्योमुत
गाऽर ज़ाऽज ह्यू आस ज़ान थाव पानस॥०॥

लोकचार छु रावान असनैय तँ गिन्दनैय
यौवनस मंज़ कति रिन्दनय छु होश
बुजरस वन्त क्यथ तीर खसि कामनस॥०॥

दोऽर त्राव ज़ोरव लारू ठिकानस
मनसर मानसबल वुछ जाय
राय नाथ! यिय छय, त्राय थाव च पानस
जानस जुव किथँ हवाल गव॥०॥

—०—

च शमा छख ब छुस परवान चोनुय
म्य रोटमुत माऽज्य छुम दामान चोनुय॥

चवान छस लोल मस रातस दोहस बो
बँ कोऽत गछ त्रऽविथैय मयखान चोनुय॥०॥

सिरिय चन्द्रम छु प्रज़लान क्याह मुकुट चोन
छु गाह त्रावान दोहय दस्तान चोनुय॥०॥

छु ब्रह्मा विष्णु महेश दस्त-बस्तय
छु गणपत डेडि प्यठ दरबान चोनुय॥०॥

कृपा दृष्टि च करतम क्याह गछिय कम
छु बोऽड दरबार आऽलीशान चोनुय॥०॥

चलान छिख दाऽद्य दुःख मुक्ती बनान छख
यिमन अनुग्रह छु सपदान चोऽन भवऽनी॥०॥

बै शरमन्द छस च्य अर्पण क्याह करय बो
छु सोरुय पान ब्ययि जुव-जान चोनुय॥०॥

परॉवय गीत चाऽनी माऽज्य भवाऽनी
परान कमि लोल छिय मस्तान चोनुय॥०॥

—०—

जीवो संसार सोरुय भ्रम छुय
दम छुय गनीमथ तँ छारुन दय,
हशानह यि जन्म तँ मशानह रावँवुन तँ
वुनि छुय यावुन द्यवँ बनि तिय॥

ललद्यदि कल कऽर प्यठ रामँ-नावस
अर्थँ लोल भावस वुछ क्याह छु फल।
मन बुद्ध छि जँय यार मो मशरावुन तँ॥०॥

स्यदँमाऽल्य बुद्ध कऽर रूद इकँ-आसन,
वासना माऽरँन तँ छोऽरुन जल
तमि लोलँ भावय किज दय छु छारुन तँ॥०॥

कामँदीव जीनिथ पामन लगँ न

तगिनें पथ कुन बुजरस छल
लूक सोन्त बोऽड गछि यलि यियि श्रावुण तँ॥०॥

दोह गछि नीरिथ फीरिथ यियि नँ
भक्ती छि मुक्ती रोज़ निष्कल।
आदन यार छय सु मो राव रावुन तँ॥०॥

केंह कुन गछि न यछि पछि छारुन
दारुन छु मनि मन्ज दय न्यर्मल।
क्वम कर वोम सय सु मो कल रावुन त॥०॥

पथ कालि वोवमुत छु अज्ज छुख ति होरन
सोरन छिन ज़ाह यिम कर्म फल।
कुंज लाग वाऽणिय डबि मुच़रावुन त॥०॥

हान छम म्य कर्मन हंज छुस वनन
खनन मन वाजि द्यव गलि मल।
श्री कृष्ण कव ह्योतथम छलरावुन त॥०॥

लूक हुन्द गेलुन वनान तस क्या करि
स्वरि युस अमर पान ओजल।
लोति खोऽत लोऽत छुय भोर लोऽच़रावुन त॥०॥

थरि पोश फवलनावतन यथ ज़नमस
वन कस जीवुन छु मन चंचल।
दाऽद्वलद मटि छुय च़्यय बलरावुन त॥०॥

— ० —

द्वैत वोपशम शान्त शिव शाय।
शिव छुस म्य क्या छुम परवाय॥

वैराग राग छुम मनसय
सन्तोष वच सऽत्य सनसय
ब्रह्म ऐक्युक छम अभिप्राय-शिव०

हर-म्वख फेरनुक अभ्यास
व्यश्व साऽर करनुक अध्यास
त्रिभुवननाथ छुस न्यरमाय-शिव०

न्यरद्वन्द्व भस्मा मलिथय
द्वन्द्व रोस्त न्यरभय बनिथय
दयक अम्बर बे परवाय-शिव०

ग्वणत्रयि अव्यद्यायि निश दूर
काम, क्रूध, कति पोरन चूर
च्यथ स्फार गाशस छम न छाय-शिव०

सत् व्यचार दून्य छम दज्जवन्य
च्यथ व्यकास जोत छस व्रजवन्य।
संकल्प ज्युन दज्जान बेवाय-शिव०

त्रिगुणात्मयक माया त्रिशूल
समतायि तमि ताप त्रय छि दूर
अज्जपाज्जप डॉबर बजाय-शिव०

त्रिन्यथर दारवुन भैरव
व्यश्वरूप छुस विरूपाख्य शिव
पर-शक्ति संव्यच हुन्द पाय-शिव०

न्यवैर आसन दाऽरिथ
राग रोऽस शासन करिथ

त्याग के त्याग सऽय न्यर् वोपाय—शिव०

अभ्यास बंग चीट्य चीटिय
अनुभव नश सऽत्य सऽतिय
छुम खुमार-स्वात्म-संव्यत् पाय—शिव०

वृषबय व्यवीक छुम वाहन
फेरान साऽलन त सालन
सिंह-वाहन मायायि-छाय—शिव०

छुस जटाजूट बय भैरव
वुत्पथ, थ्यत्, लय त प्रणव
छुम अनर्गल प्रवाह गंगायि—शिव०

विज्ञान बालुक छुम गणीश
स्यद स्वरूप-संव्यत् छम अशीष,
क्षीम-कुमार बाण ह्यथ जायि-जाय—शिव०

साक्षात् कीवल तें न्यर्मल
ब्रह्मास्मीति भावना अचल
शान्तस्वरूप प्राप्त प्रयम तें माय—शिव०

—०—

पोऽतें जूने मोऽत बुज्जंनोवुम
ललनोवुम नारायण॥

प्रयि तसॅन्जे हिधितन म्यॅ नाऽवॅम
पोश वथरोस अन्द गोशन।
रोशि यियिना होश रावॅरोवुम॥०॥

बालें पान तस पथ रावें रोवुम
 हालें कमि सुय नालें रटहन
 शिव-शम्भो शून्य बोलेंनोवुम॥०॥

कामें दीवस नाम लेखेंनोवम
 पामें थऽविनम कर डेशन
 रुम रुम सुय राम रमनोवुम॥०॥

दारें पथ दारें वारें बुछनोवुम
 जूनि छान्दुम मन्ज तारकन
 मारकन मंज लाल मऽचरोवुम॥०॥

लोल मंजले लाल ललनोवुम
 बोल नोवुम सुब शामन
 चीर्य सोवुम सुलि वुज्जनोवुम॥०॥

जीरबम कुय सीर वुज्जनोवुम
 फेर नोवुम तति हेरि बोऽन
 वेरि तसँन्जि शेरि वातनोवुम॥०॥

ज्यव नार सँत्य वार छलनोवम
 तव लोलन नार शोलान
 अछव बूजुम कनव वुछनोवुम॥०॥

कन्द नाबद आरदनोवुम
 फन्द करिथ घूर्य अन्तन
 अन्द लोबमुत वोन्द फोलनोवुम॥०॥

हंस दारय पान पर्जनोवुम
 प्रारि प्रारोस राम् रादन

ब्रह्मसर पान सर करनोवुम॥०॥

अथवासय रास खेलनोवुम

श्वास-ओश्वास नोऽन छु भासन

सास भास्कर व्यकास भासनोवुम॥०॥

—०—

लगय पादन बॅ पाऽरी, राजिर्यनि रानिब्राऽरी॥०

वोथहा सुलमुले राज्ञा छि तुलमुले।

दोऽथ हय भावस डुलि-डुले॥राजिर्यनि०

केह वसान डूंग नावन,

रऽत्य रऽत्य फल छि प्रावन।

केह यिवान ननवाऽरी॥राजिर्यनि०

अलम चानि लछि बज्जय,

केह छि लोचि केह छि थज्जय।

स्वर्ग बोनि अन्ध अन्दी॥राजिर्यनि०

साम छिय स्वनॅ सन्दिय,

भक्तय छिय अन्ध अन्दिय।

लागय ब पोश गुन्दी॥राजिर्यनि०

शाहमार छुय च्य हटे,

प्रज्ञा छुय च्य मटे।

यिमॅ हा ब लटि लटे॥राजिर्यनि०

म्य छयना चाऽनी कल,

जाय दिम म्य पादन तल

वथरावय बें मखमल॥राजिर्यनि०

चन्दन कुल मंज नागस,

बिहिथ छख पोश बागस।

पम्पोश पूजि लागस॥राजिर्यनि०

दोधरहामि द्युत म्य तारा,

बोजतम जार पारा।

कास्तम म्य लाचोरी॥राजिर्यनि०

यस चोऽन नाव मशे,

तस छय पश पशे।

नरकन मन्ज सु केशे॥राजिर्यनि०

युस चोन नाव स्वरे,

तस क्या यम करे।

जाय चाऽज म्यानि घरे

राजिर्यनि रानि बोरि॥

—०—

चे व्यन कय द्यन ह्यकय गुज्जर'विथ

कसू गोख त्रविथ ही शम्भू।

अज्ञानय छुम वथ रावर'विथ, कोच्यन मंज

फिरन'विथ म्ये

चोप हेरस छ'नतम वथ म्ये हविथ। कसू-----

ओन छुस पकनस हतबज वथ छम, पत छम लारान

अऽन्य वासना

शूभ्या चे गछुन म्ये पथर प'विथ। कसू-----

दया च्यन आय अज तान्य थ्यकन, यथ मंजिलसलूख
पकान ग'य

छम्बस प्यठ छुख म्ये चलान त्रविथ। कसू-----

क्रेरि मंज खार म्योन बोडमुत पानय, बडि दय
दयावानय छुख

युथ न यथ नावस गछय मंदछविथ। कसू-----

छुस वोतमुत नख शमशेरि द'न्दरे, मुह निन्दरे मंज
प्योमुत छुस

चानि जेरि रोस कुस ह्यक्यम वुज्जन'विथ। कसू-----

कायायि क'ठिस प्यठ छुस खसिथ, रोजुम त वसिथ
प्योन छुम क्रूठ

दर्मस ब्रह्मणस निम मौकल'विथ। कसू-----

रूशिथ छुखहम दीशिथ भावय, न्यथनन्य सई ब्रोठ
वावय छुम

स्यदक्य ज़ाम थविमय प'रविथ। कसू-----

रोन छुस प्योमुत मंज म'दानस; आशवानस म यूत
प्रारनाव

श्रद्धा दिहम न अनय मन न'विथ। कसू-----

दासस यूत अधीन गन्जर'विथ, म्ये छुनू त्रविथ लूकन
तान्य

वेशनार पन-निम मूख प्रावन'विथ। कसू-----

दयि नो वुछान यालि चालि ग्राये, वुछन सु अन्दरिमि
राये कुन

दय नो वुछान अथ बुथ छलनस, वुछान सु मनि द.य
चलनस कुन

दय नो वुछान प्रेनि केहनि कायाये, वुछासु अन्दरिमी
राये कुन-----

दय नो वुछान वननस त प्रननस, वुछान सु सननस त
सोरनस कुन

दय नो वुछान धन ध्यार दाये, वुछान सु-----

दय नो वुछान कम ज्याद परनस, वुछान सु तथ
अमल करनस कुन

दय खौश स्यजरस पजरस माये, वुछान सु-----

दय छुन वुछान वर्णाश्रमस, वुछान सु मिटनस भ्रमम
कुन

संशय गलनस ब्ययि वासनाये। वुछान सु-----

दय छुन वुछान र'च कथ करनस, सु वुछान जिनन्दय
मरनस कुन

धर्मव मंज वुछान छुय अहिंसाये। वुछान सु-----

दय नो वुछान ज्ञातस त नावस, वुछान सु भक्ति
भावस कुन

माये वुछान खौत पूजाये। वुछान सु-----

दय नो वुछान ख्यनस त चनस दय वुछान छु मनस
कुन

यस टोठि तस वुछान न कर्मलीखाये, वुछान सु-----

दय नो वुछान वृत न्यति दरनस, वुछान छु सुय
शरणस कुन

गोविन्द वोरणै दय संजि दयाये। वुछान सु-----

—०—

रामकृष्ण म्योन कोतये गोम, ब्रोठ ज्ञनमस नय कदर
बेयि यी ना दोह तारय, लोकचारस वन्तवे

तन दिमह, मन दिमह, धन दिमह सोरूय
मेल्यि ना मौल लोल सोदा बाजारस वन्तवे।

रामकृष्ण म्योन-----

टास यस आव, तस अकिस आव, नत सदा बूझ
सार्यिवय

टास स'त्थी क्या छु सबदान, शिकारस वन्तवे।

रामकृष्ण म्योन-----

दर्शन चान्य स.ती बलह, सुई छुम ददिस दवा
कदरि सेहत क्या छु आसान बेनारस वन्तवे।

रामकृष्ण म्योन-----

दास छुस ब इन्तजारस, बालयारस वन्तवे
प्रारान छुस दर्शनस, रामकृष्णस वन्तवे

रामकृष्ण म्योन-----

—०—







